@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/ qaumipatrika

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

शुक्रवार, 24 मई 2024

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 17 अंक 184 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

1971 में मोदी होता तो करतारपुर भारत में होता: पीएम

सिम्मी कौर बब्बर

चंडीगढ़, 23 मई। पटियाला के पोलो ग्राउंड में गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विरोधियों पर जमकर बरसे। लोकसभा चुनाव के लिए पंजाब में अपनी पहली रैली में मोदी ने कई भावनात्मक मुद्दों को छुआ। मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता के लिए देश का बंटवारा किया और बंटवारा भी ऐसा किया कि 70 साल तक हमें दूरबीन से करतारपुर साहिब के दर्शन करने पड़ते थे। जब बांग्लादेश की लड़ाई हुई, 90 हजार से ज्यादा पाकिस्तानी सैनिक सरेंडर कर चुके थे, 90 हजार से ज्यादा सैनिक हमारे कब्जे में थे। मैं विश्वास से कहता हूं, अगर उस समय मोदी होता, तो उनसे करतारपुर साहिब लेकर रहता, तब उन जवानों को छोड़ता। वो तो नहीं कर पाए, लेकिन मुझसे जितनी सेवा हो सकी मैंने की। आज करतारपुर साहिब आपके सामने है। मोदी ने कहा कि हमारी सरकार ने लंगर को टैक्स से मुक्त किया। पहले श्री हरमंदिर साहब में विदेशों से भक्त चंदा नहीं दे पाते थे। हमने इसके लिए नियमों में छूट दी। श्री फतेहगढ़ साहिब तो साहिबजादे के शौर्य और शहादत का साक्षी रहा है। ये मोदी सरकार है, जिसने साहिबजादों के शौर्य के लिए समर्पित वीर बाल दिवस घोषित किया। अफगानिस्तान में हमारे सिख परिवार संकट में थे। हम सभी को सुरक्षित वापस लाए। हम गुरु ग्रंथ साहब के स्वरूपों को भी अदब के साथ लाए। पीएम ने इंडी-गठबंधन पर निशाना साधते हुए कहा कि ये घोर सांप्रदायिक हैं, घोर जातिवादी हैं, घोर परिवारवादी हैं। सत्ता के लिए ये किसी को भी धोखा दे सकते हैं। एक तरफ आतंकवादियों को घर में घुसकर मारने का साहस है। दूसरी तरफ इंडी वाले हैं, जो आतंकवादियों के एनकाउंटर पर आंसू बहाते हैं पीएम ने कहा कि पंजाब में दिखावे के लिए दिल्ली की कट्टर भ्रष्टाचारी पार्टी और सिख दंगों की दोषी पार्टी आमने-सामने लड़ने का नाटक कर रहे हैं। लेकिन सच्चाई ये है कि पंजा और झाड़ू... पार्टियां दो हैं, लेकिन दुकान एक ही है। मोदी ने कहा कि पंजाब जानता है कि उसे अपना वोट बेकार नहीं करना है और आप तो जानते हैं कि वोट उसे दीजिए जो सरकार बनाएं, वोट उसे दीजिए जो विकसित पंजाब बनाने के लिए प्रतिबद्ध हो, जो विकसित भारत बनाने का संकल्प लेकर चला हो और इसके लिए जरूरी है एक तरफ मोदी सरकार है, जिसने 10 साल में 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है।

वहीं दूसरी तरफ, इंडी गठबंधन है, जो कहता है कि वो आपकी कमाई का आधा हिस्सा छीन लेगा। इंडी गठबंधन समाज को, देश को, बांटना चाहता है, लेकिन मोदी भारत को विकसित भारत बनाना चाहता है। इसलिए पंजाब के भाई-बहनों से मैं आशीर्वाद मांगने आया हूं। देश के सामने एक तरफ भाजपा और एनडीए है। दूसरी तरफ भ्रष्टाचारियों का इंडी-गठबंधन है। इंडी-गठबंधन के पास ना नेता है ना नीयत है। पीएम ने कहा कि इंडी गठबंधन वालों के लिए अपने वोट बैंक का तुष्टिकरण ही सबसे बड़ा लक्ष्य है। बंटवारे से पीड़ित दलित, सिख भाई-बहनों को मोदी सीएए कानून के तहत भारतीय नागरिकता दे रहा है। ये लोग (इंडी गठबंधन) सीएए का विरोध करते हैं, सीएए के नाम पर दंगे करवाए और ये आज भी कहते हैं कि उनकी सरकार आएगी तो वे सीएए को रद्द कर देंगे। उन्होंने लोगों से सवाल पूछा कि क्या बंटवारे के पीड़ित सिखों को भारतीय नागरिकता देना गलत है? भाजपा किसान कल्याण को प्राथमिकता देती है। बीते 10 साल में पंजाब से गेहूं और धान की रिकॉर्ड खरीद हुई। 10 साल में हमने एमएसपी में ढाई गुना वृद्धि की। पीएम ने कहा कि पंजाब के लोगों ने खेती से लेकर उद्योगों तक में अपना योगदान दिया है लेकिन कट्टर भ्रष्टाचारियों ने पंजाब का हाल खराब कर दिया। यहां राज्य सरकार का आदेश नहीं चलता। यहां खनन माफिया का राज है। कागजी सीएम को दिल्ली दरबार में हाजिरी लगाने से ही फुर्सत नहीं है। अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि जो अपने गुरु अन्ना हजारे के साथ धोखा कर सकते हैं, जो दिन में 10 बार झूठ बोलते हैं।

पंकजा मुंडे के चुनाव खर्च में मिली अनियमितता

मुंबई, 23 मई। देश में इन दिनों चुनावी मौसम चल रहा है। अब तक पांच चरणों के दौरान कई प्रदेशों में मतदान हो गए हैं और अभी आगे कई राज्यों में कराए जाने हैं। लोकसभा चुनाव के छठे चरण में 25 मई को होने वाले मतदान से पहले राजनीतिक दलों ने अपना प्रचार अभियान तेज कर दिया है। वोटरों को लामबंद करने के लिए विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता अलग-अलग राज्यों का दौरा कर रहे हैं और विरोधियों के खिलाफ बयानबाजी का दौर जारी है। बीड लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार और महाराष्ट्र की पूर्व मंत्री पंकजा मुंडे और इस सीट से राकांपा (एसपी) उम्मीदवार बजरंग सोनावने को उनके चुनाव खर्च में कथित अनियमितताओं को लेकर नोटिस भेजा गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी और कलेक्टर दीपा मुधोल मुंडे ने मंगलवार को पंकजा मुंडे और उनके प्रतिद्वंद्वी बजरंग सोनावने को नोटिस जारी किया। बीड में लोकसभा चुनाव चौथे चरण में 13 मई को हुए थे। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि सोनावने को 22 अप्रैल से 10 मई के बीच 9.59 लाख रुपये के खर्च को अपने चुनाव खर्च रजिस्टर में शामिल नहीं करने के लिए नोटिस जारी किया गया था। वहीं पंकजा मुंडे के मामले में, 2 मई से 10 मई के बीच 20.94 लाख रुपये की राशि खर्च की गई, लेकिन उनका व्यय रजिस्टर में इसका उल्लेख नहीं किया गया। अधिकारी ने बताया, जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 77 के अनुसार, प्रत्येक उम्मीदवार को नामांकन दाखिल करने की तारीख से परिणाम की तारीख तक अपने खर्च का सही हिसाब देना चाहिए।

ओबीसी प्रमाणपत्र रद्द करने के फैसले का भाजपा ने किया समर्थन: जेपी नड्डा

तेजिन्दर कौर बब्बर

कोलकाता, 23 मई। लोकसभा चुनाव के बीच कलकत्ता हाई कोर्ट ने तृणमूल सरकार (टीएमसी सरकार) की ओर से वर्ष 2010 के बाद जारी सभी ओबीसी प्रमाणपत्र को रद्द कर दिया। हाईकोर्ट के इस फैसले में ओबीसी के तहत मुसलमानों को दिए गए आरक्षण को भी निरस्त कर दिया गया है। कलकत्ता हाई कोर्ट के इस फैसले पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष समेत अन्य नेताओं ने प्रतिक्रिया दी। इस दौरान उन्होंने टीएमसी सरकार को भी घेरा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बताया कि संविधान में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी को भी धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दिया जाएगा। भाजपा नेता जेपी नड्डा ने कहा, कलकत्ता हाई कोर्ट ने ओबीसी कोटा उपश्रेणी के तहत मुसलमानों को दिए आरक्षण को रद्द कर दिया। कोर्ट ने 2010 से 2024 तक पश्चिम बंगाल में मुसलमानों को जारी किए गए ओबीसी प्रमाणपत्र को भी रद्द कर दिया है। इन दोनों फैसलों से यह स्पष्ट होता है कि कैसे ममता बनर्जी तुष्टीकरण को आगे बढ़ा रही थी।

या ऐसा कहा जा सकता है कि वह मुस्लिम एजेंडे को आगे बढ़ा रही थी। पीएम मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान यह मुद्दा उठाया कि कैसे राहुल गांधी, ममता बनर्जी और इंडी गठबंधन की पार्टियां संविधान की धज्जियां उड़ा रही हैं। हमारे संविधान में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी को भी धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दिया जाएगा। कलकत्ता हाई कोर्ट के फैसले को लेकर जेपी नड्डा ने राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, राहुल गांधी संविधान की कॉपी लेकर घूमते हैं, लेकिन जब हाई कोर्ट ने ऐसे मामलों में निर्णय लिया और मुस्लिम तुष्टिकरण उजागर किया तो वे चुप हो गए। देश की जनता ऐसे लोगों को चुनाव में सबक सिखाएगी। पश्चिम बंगाल की जनता ममता बनर्जी को सबक सिखाएगी। भाजपा नेता शहजाद पूनावाला ने भी कलकत्ता हाई कोर्ट के फैसले का समर्थन किया। कोर्ट के इस फैसले पर उन्होंने ममता सरकार पर पलटवार किया। भाजपा नेता ने कहा, करीब पांच लाख ओबीसी प्रमाणपत्र रद्द कर दिए गए। हाई कोर्ट के इस फैसले ने यह दिखा दिया कि केवल वोट बैंक और तुष्टिकरण की राजनीति के लिए ममता बनर्जी की सरकार ने धार्मिक आधार पर मुसलमानों को वो सभी अधिकार दिए, जो ओबीसी समुदाय को मिलने थे।

अग्निवीर योजना बंद करके युवाओं को देंगे पक्की नौकरी: अखिलेश यादव

प्रतापगढ़, 23 मई। सपा मुखिया और पर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने प्रतापगढ़ में कहा कि सपा और कांग्रेस की सरकार केंद्र में बनी तो अग्निवीर योजना बंद कर युवाओं को

सेना में स्थायी नौकरी देने का कार्य करेंगे। भाजपा सरकार ने रेल बेच दिया, स्टेशन बेच दिया, हवाई जहाज बेच दिया, प्लेटफार्म बेच दिया, सारी नौकरियां खत्म कर संविदा भर्ती शुरू कर दी। नोटबंदी करके लोगों को बर्बाद कर दिया। अब जनता भाजपा का हिसाब करेगी। अखिलेश यादव लोकसभा चुनाव प्रचार के अंतिम दिन प्रतापगढ़ में सपा प्रत्याशी एसपी सिंह पटेल के समर्थन में सभा को संबोधित कर रहे थे। अखिलेश यादव की सभा के दौरान एक युवक पंडाल के पोल पर चढ़ गया और करतब दिखाने लगा। अखिलेश यादव ने उससे नीचे उतरने का आग्रह करते हुए उसके करतब की तारीफ की और कहा कि इन सब नौजवानों को सेना में स्थायी नौकरी मिलेगी। भाजपा सरकार युवाओं का भविष्य बर्बाद कर रही है। अस्पतालों में उपचार नहीं हो रहा है। प्रदेस में ऐसा कोई जिला अस्पताल नहीं है जहां पर गरीबों को मुफ्त में उपचार हो जाए। पहले तो एंबलेंस खराब थी भाजपा ने अस्पताल ही खराब कर दी है। कहा कि प्रतापगढ़ के भाजपा सांसद संगमलाल मंच पर ही रो रहे हैं। उनको हार सामने दिख रहा है। जनता उन्हें इस बार लाखों वोटों से हराने का कार्य करेगी।

प्रियंका गांधी ने प्रधानमंत्री को किसानों और युवाओं का विरोधी बताया

कौमी संवाददाता

पानीपत (हरियाणा), 23 मई। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने पानीपत की धरती से मजदूर से लेकर महिला, युवा, किसान और व्यापारी को साधा। उन्होंने अपने 36 मिनट के भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर हमला किया और उनको किसानों और युवाओं का विरोधी बताया प्रियंका गांधी ने कहा कि देश में इंडिया गठबंधन की सरकार आती है तो किसान का एमएसपी का कानून बनाया जाएगा। उनको एमएसपी का कानूनी अधिकार रहेगा। खेती के सामान पर जीएसटी को खत्म कर दिया जाएगा। कर्ज माफी के लिए आयोग बनाया जाएगा। यहां हर सुविधा किसान ले सकेंगे। किसानों को फसल नुकसान का मुआवजा 30 दिन में मिल जाएगा।उन्होंने साथ

ही कहा की परिवार की सबसे बड़ी महिला के खाते में हर महीने 8500 रुपए पहुंचेंगे। कांग्रेस की कर्नाटक और तेलंगाना सरकार ऐसे पहले कर रही है। दोनों प्रदेशों में हर महीने 2000 रुपये महिला के खाते में आ रहे हैं। आशा और मिड डे मील वर्कर का मानदेय बढ़ाया जाएगा ।केंद्र की नौकरियों में महिलाओं का आरक्षण 50त्न किया जाएगा। पेपर लीक के मामले को लेकर के सख्त कानून बनाए जाएगा और 30 लाख खाली पड़े पदों को भरा जाएगा।कांग्रेस की सरकार बनते ही अग्निवीर को पहली कलम से खत्म किया जाएगा।

दिल्ली को दहलाने की साजिश: स्कूल-अस्पताल के बाद कॉलेज निशाने पर

नई दिल्ली, 23 मई। दिल्ली में एक बार फिर बम की धमकी मिली है। स्कूल और अस्पताल के बाद अब कॉलेज को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक लेडी श्रीराम कॉलेज और श्री वेंकटेश्वर कॉलेज को धमकी भरी कॉल आई है। सूचना मिलने पर पुलिस और दमकल विभाग की टीम दोनों कॉलेजों में पहुंची है। पुलिस और बम स्क्वॉड की टीम कॉलेज में सर्च ऑपरेशन चलाकर छानबीन में जुटी है। दोनों की संस्थानों से बच्चों और अधिकारियों को बाहर निकाला जा रहा है। बता दें कि 24 घंटे पहले भी एक धमकी दी गई थी, जिसमें नॉर्थ ब्लॉक स्थित गृह मंत्रालय की इमारत को बम से उड़ाने की बात की गई थी। धमकी ईमेल की जरिये दी गई थी। इस महीने में बम धमकी की ये छठी घटना है। मई की शुरुआत में दिल्ली-एनसीआर के करीब 100 से ज्यादा स्कूलों को ऐसी ही धमकी वाला ईमेल मिला था। कुछ दिनों पहले भी दिल्ली के 20 अस्पतालों और आईजीआई एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी के ईमेल भेजे गए थे। देशभर में 10 से ज्यादा हवाईअड्डों को भी ऐसी धमकी मिल चुकी है।

डोंबिवली में फैक्टरी में विस्फोट से लगी भीषण आग

मुंबई, 23 मई। महाराष्ट्र में डोंबिवली के एमआईडीसी इलाके में स्थित एक फैक्टरी में बॉयलर फटने से आग लग गई। इस हादसे में छह लोगों की मौत हुई है, जबकि 48 लोग घायल हुए हैं। महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस ने ट्वीट कर इस बात की जानकारी दी है। बताया गया है कि दोपहर 1.40 बजे अमुदान कैमिकल फैक्टरी में बॉयलर फटने से विस्फोट हुआ। महाराष्ट्र के उद्योग मंत्री उदय सामंत ने बताया है कि अब तक घटनास्थल से चार शव बरामद किए गए हैं। सामंत ने कहा कि घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उधर मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने एलान किया है कि घायलों के इलाज का खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि विस्फोट की आवाज एक किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। विस्फोट के कारण आसपास की इमारतों की कांच की खिड़कियों में दरारें आ गईं और कई घर क्षतिग्रस्त भी हुए। घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आपदा प्रबंधन विभाग के अधिकारी यासीन ताडवी का कहना है कि दोपहर करीब 1.40 बजे धमाके की आवाज सुनाई दी। उन्होंने आगे कहा कि विस्फोट के बाद आसपास की तीन फैक्टरियों में भी आग फैल गई। काफी दूर से धुंएं और आग का गुबार देखा जा सकता था। उधर महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस ने इस घटना पर दुख जताया है। उन्होंने एक्स पर ट्वीट कर जानकारी दी है कि इस मामले में आठ लोगों को निलंबित कर दिया गया है। फड़णवीस ने लिखा 'एनडीआरएफ, टीडीआरएफ और फायर ब्रिगेड की टीमों को मौके पर बुलाया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने हाईकोर्ट का फैसला विपक्ष के मुंह पर करारा तमाचा बताया

सौरभ शर्मा

कोलकाता, 23 मई। पश्चिम बंगाल में 2010 से कई वर्गों को दिए गए ओबीसी दर्जे को कलकत्ता हाईकोर्ट ने अवैध करार दिया। हाईकोर्ट की इस टिप्पणी से लोकसभा चुनाव के बीच राजनीतिक बहस छिड़ गई। मुख्यमंत्री और टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी ने अदालत के आदेश पर तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि वह इस आदेश को स्वीकार नहीं करेंगी और इसे उच्चतम न्यायालय में चुनौती देंगी। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के फैसले को विपक्ष के लिए एक करारा तमाचा बताया। दावा किया कि इससे ओबीसी उप-कोटा के तहत मुसलमानों को आरक्षण देने की विपक्षी गठबंधन इंडिया की चाल का पर्दाफाश हो गया है। आरोप लगाया कि विपक्षी गठबंधन इंडिया का तुष्टीकरण का जुनून हर सीमा को पार कर गया है। अधिनियम के प्रावधानों को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर फैसला सुनाते हुए बुधवार को न्यायमूर्ति तपब्रत चक्रवर्ती और न्यायमूर्ति राजशेखर मंथा की खंडपीठ ने कहा, वंचित वर्गों के नागरिकों की सेवाएं, जो पहले से ही सेवा में हैं या आरक्षण का लाभ ले चुके हैं। आदेश से राज्य की चयन प्रक्रिया प्रभावित नहीं होगी। अदालत ने पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग

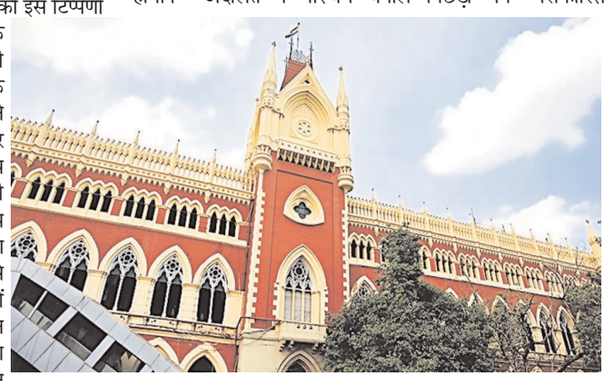

(अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अलावा) (सेवाओं और पदों में रिक्तियों का आरक्षण) अधिनियम, 2012 के तहत अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के रूप में दिए गए आरक्षण के लिए कई वर्गों को रद्द कर दिया। पीठ ने निर्देश दिया कि 5 मार्च 2010 से 11 मई 2012 तक कई अन्य वर्गों को ओबीसी के रूप में वर्गीकृत करने वाले राज्य के कार्यकारी आदेशों को भी इस तरह के वर्गीकरण की सिफारिश करने वाली रिपोर्टों की अवैधता के मद्देनजर रद्द कर दिया गया था। अदालत ने कहा, इन समुदायों को ओबीसी घोषित करने के लिए वास्तव में धर्म ही एकमात्र मानदंड प्रतीत होता है, अदालत का मानना है कि मुसलमानों की 77 श्रेणियों को पिछड़े के रूप में चुना जाना पूरे मुस्लिम समुदाय का अपमान है। उप-वर्गीकृत वर्गों को आरक्षण के प्रतिशत के वितरण के लिए 2012 के अधिनियम में एक प्रावधान को रद्द करते हुए, अदालत ने कहा, ओबीसी-ए और ओबीसी-बी नामक दो श्रेणियों में सूचीबद्ध उप-वर्गीकृत वर्गों को हटा दिया गया है। याचिकाकर्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले एक वकील ने कहा कि 2010 के बाद पश्चिम बंगाल में ओबीसी के तहत सूचीबद्ध व्यक्तियों की संख्या पांच लाख से ऊपर होने की संभावना है। मई 2011 तक पश्चिम बंगाल में सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाला वाम मोर्चा सत्ता में था और उसके बाद तृणमूल कांग्रेस सरकार ने सत्ता संभाली।

सिद्धारमैया ने प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिख प्रज्वल का पासपोर्ट रद्द करने को कहा

बंगलूरू, 23 मई। प्रज्वल रेवन्ना अश्लील वीडियो मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक पत्र लिखा। उन्होंने पीएम मोदी से जेडीएस सांसद प्रज्वल रेवन्ना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द करने का अनुरोध किया। इसके

साथ उन्होंने प्रज्वल रेवन्ना को भारत वापस लाने और उनके खिलाफ त्वरित कार्रवाई करने की भी मांग की। सूत्र के अनुसार, विदेश मंत्रालय ने कर्नाटक सरकार की चिट्ठी का जवाब दिया। उन्होंने बताया कि इस मामले में कार्रवाई की जा रही है। अपने पत्र में सीएम सिद्धारमैया ने कहा, शर्मनाक है कि प्रज्वल रेवन्ना 27 अप्रैल को अपने राजनयिक पासपोर्ट के जरिए जर्मनी निकल गए। वो भी अपने घिनौनी कृत्यों की खबरें सामने आने के बाद। इसके कुछ ही घंटों बाद उन पर एफआईआर भी हुई थी। इससे पहले कर्नाटक के गृह मंत्री जी परमेश्वर ने अश्लील वीडियो मामले में केंद्र सरकार से प्रज्वल रेवन्ना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द करने की मांग की थी। केंद्र की तरफ से कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर उन्होंने कहा था कि यह केंद्र की जिम्मेदारी है कि तय कानून के तहत मदद करे और राजनयिक पासपोर्ट को रद्द करे। बता दें कि कर्नाटक में प्रज्वल रेवन्ना का मामला काफी विवादों में है। रेवन्ना मामले की जांच के लिए कर्नाटक सरकार ने विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया है। प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ इंटरपोल ने ब्लू कॉर्नर नोटिस जारी किया है। कर्नाटक के बहुचर्चित पेन ड्राइव / अश्लील वीडियो मामले में जेडीएस सांसद प्रज्वल रेवन्ना का नाम जुड़ा है। 33 साल के प्रज्वल पर महिलाओं के यौन शोषण करने के कई मामले दर्ज हैं। इस घोटाले ने सत्तारूढ़ कांग्रेस और भाजपा-जेडीएस के बीच राजनीतिक बवाल खड़ा कर दिया है। बता दें कि प्रज्वल कर्नाटक के हासन लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं, जहां 26 अप्रैल को मतदान हुआ था। पुलिस सूत्रों के मुताबिक जैसे ही सांसद से जुड़े वीडियो सामने आने लगे, वह वोटिंग खत्म होने के बाद वह 27 अप्रैल को देश छोड़कर जर्मनी भाग गए।

अदाणी घोटालों की जेपीसी जांच कराएगी 'इंडिया' गठबंधन सरकार: राहुल

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 23 मई। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि केंद्र में 'इंडिया' गठबंधन की सरकार बनने के एक महीने के भीतर अदाणी समूह से जुड़े घोटालों को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) से जांच कराई जाएगी।? पार्टी के पूर्व अध्यक्ष ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार के तहत बड़ा कोयला घोटाला सामने आया है और इस घोटाले के माध्यम से पीएम के 'प्रिय मित्र' ने कम गुणवत्ता वाले कोयले को तीन गुने दाम पर बेचकर हजारों करोड़ रुपये लूटे हैं, जिसकी कीमत आम जनता ने बिजली का महंगा बिल भरकर चुकाई है। ब्रिटिश अखबार 'फाइनेंशियल टाइम्स' में प्रकाशित खबर का हवाला देते हुए कहा कि अदाणी समूह ने सार्वजनिक क्षेत्र के 'तमिलनाडु जेनरेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन कॉरपोरेशन' (टीएएनजीईडीसीओ) को कम गुणवत्ता वाला कोयला कहीं अधिक कीमत पर स्वच्छ ईंधन के रूप में बेचा। अदाणी समूह की ओर से इस पर कोई प्रतिक्रिया अभी नहीं आई है। हालांकि पूर्व में समूह ने ऐसे आरोपों का खंडन किया था। राहुल गांधी ने इस खबर को लेकर पोस्ट किया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि पीएम कहते हैं कि उन्होंने दलित, ओबीसी और आदिवासी को इज्जत दी है, लेकिन हम ये कहते हैं कि इन्हें इज्जत नहीं, बल्कि पावर चाहिए। जिस

दिन इनको सत्ता में भागीदारी मिली, उसी दिन से इनको इज्जत मिलनी शुरू हो जाएगी। ये कब तक चलेगा कि अमीर आदमी को गरीब इज्जत देगा। ऐसा भारत तो पहले राजा महाराजाओं के समय होता था। ये सिस्टम बंद होना चाहिए। 90 प्रतिशत इस आबादी को उनका हक दिलाने के लिए राजनीतिक लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवन का मिशन बन गया है और अब वे इसे छोड़ने वाले नहीं हैं। इंडिया गठबंधन की सरकार आने पर इस आबादी को सत्ता में भागीदारी दी जाएगी। राहुल पंचकूला में आयोजित संविधान सम्मान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। राहुल ने पीएम मोदी, अडानी और अंबानी को निशाने पर रखा। उन्होंने कहा, कुछ लोग संविधान को बदलने की मंशा रखते हैं, लेकिन हम चेताना चाहते हैं कि भारत ही नहीं दुनिया में ऐसी कोई ताकत नहीं है, जो इस संविधान को छू सके। राहुल ने कहा कि संविधान सिर्फ एक किताब नहीं, बल्कि संविधान को अगर गहराई से देखें तो यह ट्रांसफर ऑफ पावर दस्तावेज है। जिन नियमों का सैकड़ों साल पुराने गुरुनानक देव जी, गौतम बुद्ध, भीम राव आंबेडकर ने पालन किया है, उनके बेसिक और हर वर्ग को ध्यान में रखकर संविधान तैयार किया गया है। इसमें छेड़छाड़ करने वालों के साथ देश की 90 फीसदी जनता इंसाफ करेगी। उन्होंने कहा नरेंद्र मोदी और आरएसएस का ग्राफ धीरे-धीरे ऊपर उठा है, नीचे कब आएगा, उन्हें भी पता ही नहीं चलेगा।

सिंगापुर एयरलाइंस के यात्री राहत उड़ान से सिंगापुर पहुंचे

एजेंसी

सिंगापुर। सिंगापुर एयरलाइंस के एक विमान में सवार 140 से अधिक यात्री और चालक दल के सदस्य घातक झटकों की चपेट में आने के बाद सुबह राहत उड़ान से सिंगापुर पहुंच गए।

विमान में झटकों से दर्जनों लोग घायल हो गए और एक व्यक्ति की मौत हो गई। विमान को आखिरकार बैंकॉक में आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी थी। झटकों के बाद बोइंग 777-300 ईआर विमान निर्धारित लंदन-सिंगापुर उड़ान को बैंकॉक की ओर मोड़ दिया गया। इन झटकों के कारण यात्री और चालक दल के सदस्य छत से टकरा गए। इन झटकों के कारण एक 73 वर्षीय ब्रिटिश यात्री की संदिग्ध दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई और कम से कम 30 लोग घायल हो गए।

विमान के सिंगापुर पहुंचने पर एक छात्र ज़फ़रान आज़मीर (28) कहते हैं,मैंने देखा कि गलियारे के पार से लोग पूरी तरह से क्षैतिज जा रहे थे, छत से टकरा रहे थे और बहुत ही अजीब स्थिति में वापस नीचे आ रहे थे। लोगों को जैसे सिर में बड़े पैमाने पर चोटें लग रही थीं, झटका लग रहा था।

गत 21 मई को बैंकॉक के सुवर्णभूमि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आपातकालीन लैंडिंग के बाद विमान के अंदरूनी हिस्से की तस्वीरों में ओवरहेड केबिन पैनल, ऑक्सीजन मास् और छत से लटके पैनल और आसपास सामान बिखरा हुआ दिखाई दे रहा है। एक यात्री ने कहा कि कुछ लोगों के सिर सीटों के ऊपर लगी लाइटों से टकरा गए और पैनल टूट

गए। सिंगापुर एयरलाइंस 131 यात्रियों और 12 चालक दल को बैंकॉक से राहत उड़ान पर ले गई। विमान सुबह पांच बजे (2100 जीएमटी) से ठीक पहले सिंगापुर पहुंचा। विमान में कई ऑस्ट्रेलियाई, ब्रिटिश और सिंगापुरी सहित 211 यात्री और चालक दल के 18 लोग सवार थे। घायल यात्री और उनके परिवार बैंकॉक में ही रह गए।

सिंगापुर एयरलाइंस के सीईओ गोह चून फोंग ने एक वीडियो संदेश में कहा, सिंगापुर एयरलाइंस की ओर से मैं मृतक के परिवार और प्रियजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करना चाहता हूं।सिंगापुर के परिवहन मंत्री ची होंग टैट ने फेसबुक पर एक बयान में कहा, सिंगापुर के परिवहन सुरक्षा जांच ब्यूरो के अधिकारी रात बैंकॉक पहुंचे। उन्होंने कहा कि चूंकि इस घटना में एक अमेरिकी कंपनी बोइंग शामिल है, जो 777-300ईआर विमान बनाती है इसलिए अमेरिका नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड (एनटीएसबी) जांच में सहायता के लिए एक मान्यता प्राप्त प्रतिनिधि और चार तकनीकी सलाहकार भेज रहा है। श्री गोह ने कहा कि विमान को अचानक अत्यधिक अशांति का सामना करना पड़ा और पायलट ने चिकित्सा आपातकाल की घोषणा कर दी और उसे बैंकॉक की ओर परिवर्तित कर दिया गया। विमान ट्रैकिंग प्रदाता फ्लाइटराडार 24 ने उड़ान ट्रैकिंग डेटा के आधार पर कहा कि 0749 जीएमटी पर उड़ान को 'अचानक अशांति की घटना के अनुरूप ऊर्ध्वाधर दर में तेजी से बदलाव' का सामना करना पड़ा। मौसम पूर्वानुमान सेवा ऐक्यू वेदर नेकहा कि उस समय क्षेत्र में कुछ तेज़ तूफ़ान आए थे। फ्लाइट 321 के उड़ान पथ के पास तेजी से विकसित होने वाले विस्फोटक तूफान ने हिंसक अशांति को बढ़ा दिया।

एक्यूवेदर के पूर्वानुमान संचालन के वरिष्ठ निदेशक डैन डेपॉडविन ने कहा, विकासशील तूफानों में अक्सर मजबूत अपड्राफ्ट होते हैं, ऊपर की ओर बढ़ने वाली हवा का एक क्षेत्र जो बहुत तेजी से बढ़ता है, कभी-कभी 100 मील प्रति घंटे से अधिक की गति से और अगर यह सीधे विमान के सामने आता है तो पायलटों को प्रतिक्रिया करने के लिए बहुत कम समय मिल सकता है।

रूसी सैन्य बलों के साथ संघर्ष में यूक्रेन के 420 सैनिक मारे गये

एजेंसी

मॉस्को। रूस के त्सेंट्र (सेंटर) ग्रुप ऑफ फोर्सेज ने दोनेत्स्क पीपुल्स रिपब्लिक (डीपीआर) में संघर्ष के दौरान पिछले 24 घंटों में यूक्रेन के 420 सैनिकों को मार दिया। रूसी रक्षा मंत्रालय ने बयान में कहा, यूक्रेन के 420 सैन्यकर्मियों और जर्मनी निर्मित मार्डर पैदल सेना लड़ाकू वाहन सहित तीन बख्तरबंद लड़ाकू वाहनों को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा कि उनके समूह ने डीपीआर में यूक्रेन द्वारा किए गए सात जवाबी हमलों को भी विफल कर दिया। मंत्रालय ने कहा कि रूस के उत्तरी सैन्य समूह ने यूक्रेन के खार्कोव क्षेत्र में तीन जवाबी हमलों को विफल कर दिया है और यूक्रेन के सशस्त्र बलों ने 255 सैनिकों को खो दिया है। उन्होंने कहा कि रूसी सशस्त्र बलों ने डीपीआर में क्लिशचिवका गांव पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया है।

बांग्लादेश के गृहमंत्री ने भारत में अवामी लीग सांसद अनवारुल की हत्या को बताया सुनियोजित

ढाका। बांग्लादेश के गृहमंत्री असदुज्जमां खान ने अवामी लीग के सांसद अनवारुल अजीम अनार की पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के एक फ्लैट में हुई हत्या को सुनियोजित करार दिया है। इस सिलसिले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत की पुलिस हत्याकांड की जांच में सहयोग कर रही है।अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत में गृहमंत्री ने बुधवार को कहा कि अजीम जेनाइदाह-4 सीमावर्ती क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे। यह क्षेत्र उच्च अपराध दर के लिए जाना जाता है। अजीम इलाज के लिए भारत गए थे। अजीम 12 मई को भारत गए थे। 18 मई को उत्तरी कोलकाता के बारानगर पुलिस स्टेशन में उनकी गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज की गई थी। इस हत्याकांड पर विदेशमंत्री हसन महमूद ने एक सेमिनार में भाग लेने के बाद ढाका विश्वविद्यालय के सीनेट भवन में पत्रकारों से कहा कि कोलकाता पुलिस उस फ्लैट में दाखिल हुई, जहां कथित तौर पर सांसद की हत्या की गई थी, लेकिन शव नहीं मिला।

उन्होंने कहा कि कोलकाता पुलिस और बांग्लादेश पुलिस की जासूसी शाखा ने मुख्य संदिग्ध सहित चार को गिरफ्तार किया है। बांग्लादेश ने कई स्तर पर हत्याकांड की जांच शुरू की है। अधिकारी कोलकाता पुलिस के संपर्क में हैं। इस बीच, प्रधानमंत्री शेख हसीना ने अजीम की मौत पर दुख व्यक्त किया है। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शाश्वत मुक्ति के लिए प्रार्थना की और शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की।

तीन महीने में 14 चीनी नागरिकों सहित 37 विदेशियों को नेपाल से निकाला गया

काठमांडू। नेपाल में अवैध रूप से रह रहे 37 विदेशी नागरिकों को देश से निष्कासित कर दिया गया है। इनमें सबसे अधिक 14 संख्या चीन के नागरिकों की है।

नेपाल के अध्यागमन विभाग की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक इस साल फरवरी से अप्रैल तक 37 विदेशी नागरिकों को देश निकाला गया है। इनमें चीन, अमेरिका, बांग्लादेश, इरान, यूके जैसे देश के नागरिक हैं। नेपाल में रहकर अवैध गतिविधि में संलग्न होने और ओवर स्टे के कारण तीन महीने में 14 चीनी नागरिकों को देश से निष्कासित किया गया है। इनमें ऑनलाइन गेमिंग और गैम्बलिंग कराने वालों की तादाद अधिक है।

अध्यागमन विभाग के मुताबिक नेपाल से निष्कासित होने वाले नागरिकों में अमेरिका के 5, इरान के 4 और यूके के 3 नागरिक हैं। इसी तरह बांग्लादेश के दो तथा नीदरलैंड, पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, टर्की, बहरीन, चेक रिपब्लिक और फ्रांस के एक-एक नागरिक का नाम शामिल है। इन लोगों को वीजा अवधि समाप्त होने के बाद भी लम्बे समय तक नेपाल में रहने के कारण निष्कासित किया गया है।

मीडिया ग्रुप के मालिक की गिरफ्तारी से नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड ने झाड़ा पल्ला

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 'प्रचण्ड' ने देश के सबसे बड़े मीडिया ग्रुप के मालिक की गिरफ्तारी से पल्ला झाड़ लिया है। उन्होंने इसे अदालती मामला बताते हुए इस पर अधिक हो हल्ला नहीं करने की सलाह दी है। कान्तिपुर मीडिया ग्रुप के मालिक कैलाश सिरोहिया की गिरफ्तारी से नाराज मीडिया के प्रतिनिधियों से बातचीत में प्रधानमंत्री ने कहा कि यह सरकार का नहीं बल्कि अदालत का मामला है। सरकार अदालती मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती है। नाराज मीडिया प्रतिनिधियों से बातचीत में प्रचंड ने कहा कि कैलाश सिरोहिया के मामले में अदालत से ही गिरफ्तारी का वारंट जारी हुआ है। अदालत के आदेश के बाद ही काठमांडू से गिरफ्तार कर सिरोहिया को धनुषा ले जाया गया है। इसमें सरकार की कोई भूमिका नहीं है। पत्रकारों के कई संगठनों ने प्रधानमंत्री से सामूहिक मुलाकात कर सिरोहिया की गिरफ्तारी को प्रेस स्वतंत्रता पर हमला बताया है। इन मीडिया प्रतिनिधियों ने गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ लगातार खबर प्रकाशित करने के कारण ही सिरोहिया की गिरफ्तारी किए जाने का आरोप लगाया।

गाजा में इजरायली हमलों में 23 की मौत

एजेंसी

गाजा। गाजा पट्टी के विभिन्न हिस्सों में इजरायली छापे और हमले में कम से कम 23 फिलिस्तीनी मारे गए हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार रात से गुरुवार सुबह तक गाजा पट्टी में इजरायली हमले जारी रहे।

सूत्रों के अनुसार, इजरायली विमानों ने उत्तरी गाजा में जबालिया शरणार्थी शिविर के पश्चिम में एक घर को निशाना बनाया, जिसमें छह लोगों की मौत हो गई और छह अन्य घायल हो गए। जेट विमानों ने अल-ज़वैदा शहर में विस्थापित लोगों के एक घर पर बमबारी की, जिसमें 10 लोग मारे गए। इसके अलावा, इजराइली विमानों ने गाजा शहर के दक्षिण में अल-ज़ायतौन में हमला किया, जिसमें दो लोगों की मौत हो गई प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि इजरायली सेना ने मध्य गाजा में नुसीरात शरणार्थी शिविर के पूर्वी इलाके में बमबारी की, जिससे काफी नुकसान हुआ। इस बीच, दक्षिणी गाजा शहर रफा में, इजरायली हवाई

हमले और बमबारी के कारण पांच फिलिस्तीनी मारे गए और सात अन्य घायल हो गए।

फिलिस्तीनी सुरक्षा सूत्रों ने सिन्हुआ को बताया कि इजरायली सेना मिस्र की सीमा के पास रफा में पश्चिम की ओर बढ़ रही है। इससे पहले फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) ने सुरक्षा को लेकर रफा में खाद्य वितरण कार्यक्रम को निलंबित कर दिया था जिससे लोगों के लिए एक नया संकट पैदा हो गया है।

ब्रिटेन में आम चुनाव के लिए तारीख का हुआ एलान

एजेंसी

लंदन। ब्रिटेन में आम चुनाव के लिए तारीख का एलान हो गया है। ब्रिटेन में आगामी चार जुलाई को आम चुनाव के लिए मतदान होगा। कई महीनों की अटकलों पर विराम लगाते हुए ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने समय से पहले चुनाव की तारीख की घोषणा की। हालांकि कुछ समय पहले सुनक ने आम चुनाव साल की दूसरी छमाही में कराए जाने की बात कही थी।

ओपिनियन पोल में पिछड़ने के कारण इसे उनकी कंजरवेटिव पार्टी की जोखिम भरी रणनीति माना जा रहा है। पूर्व निवेश बैंकर और वित्त मंत्री ने दो वर्ष से भी कम समय पहले प्रधानमंत्री का पदभार संभाला था। चुनाव के लिए दोनों पार्टियों ने प्रचार शुरू कर दिया है।सुनक और उनकी सरकार ने लेबर पार्टी पर सरकार में आने पर कर बढ़ाने की तैयारी करने का आरोप लगाया और कहा कि योजना का अभाव होने के कारण ब्रिटेन लेबर पार्टी के हाथों में सुरक्षित नहीं है। हालांकि विपक्षी लेबर पार्टी सरकार के आरोपों को नकारती है।वहीं लेबर पार्टी सरकार पर 14 साल के आर्थिक कुप्रबंधन,

अराजक प्रशसन देने और लोगों को बदतर हालात में छोड़ने का आरोप लगाती है। विपक्षी लेबर पार्टी ने कहा कि हम चुनाव के लिए तैयार हैं।ब्रिटिश प्रधान मंत्री ऋषि सुनक ने कहा कि उन्होंने चुनाव के लिए चार जुलाई की तारीख निर्धारित की है ताकि लोग यह तय कर सकें कि क्या वे देश ने जो प्रगति की है, उस पर आगे बढ़ना चाहते हैं या पहले की स्थिति में वापस जाना चाहते हैं। बता दें कि सुनक ने ब्रिटेन के बिगड़ते आर्थिक दौर में पीएम पद संभाला था। सुनक ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था अब फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका की तुलना में तेजी से बढ़ रही है, उन्होंने कहा कि उन्हें यह भी जानकारी मिली है कि मुद्रास्फीति सामान्य हो गई है। उन्होंने कहा कि ये घटनाक्रम दर्शाते हैं कि उनकी सरकार की योजनाएं और प्राथमिकताएं काम कर रही हैं।

ब्रिटेन में अप्रैल के दौरान महंगाई की दर 2.3 प्रतिशत रही है, जो बीते तीन वर्षों यानी जून 2021 के बाद का सबसे निचला स्तर है। इससे पहले मार्च 2024 में यहां महंगाई दर 3.2 प्रतिशत थी। राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय के अनुसार, घरेलू बिलों में तेज गिरावट के कारण अप्रैल में महंगाई घटी है। इसके साथ यह बैंक आफ इंग्लैंड के दो प्रतिशत के लक्ष्य के करीब पहुंच गई है। इससे बैंक पर ब्याज में कटौती का दबाव बनेगा।

संयुक्त राष्ट्र ने आपूर्ति की कमी, असुरक्षा के कारण राफा में भोजन वितरण रोक दिया

एजेंसी

गाजा। में उच्च स्तर की भूख और भोजन की भारी कमी के बीच, संयुक्त राष्ट्र ने घनी आबादी वाले क्षेत्र में आपूर्ति की कमी और असुरक्षा के कारण राफा में भोजन वितरण को निलंबित कर दिया है, वॉयस ऑफ अमेरिका (वीओए) ने बताया। संयुक्त राष्ट्र के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा, विश्व खाद्य कार्यक्रम के वितरण केंद्र और फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए एजेंसी यूएनआरडब्ल्यूए, राफा में चल रहे सैन्य अभियान के कारण पहुंच योग्य नहीं हैं। संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि 10 लाख से अधिक लोग उच्च स्तर की भूख का सामना कर रहे हैं। वीओए की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि मिस्र में राफा क्रॉसिंग, जो कभी सहायता के लिए मुख्य प्रवेश द्वार था, 6 मई से बंद कर दिया गया है, और दो दिनों में कोई भी सहायता ट्रक अमेरिका निर्मित फ्लोटिंग घाट को पार नहीं कर पाया है।

विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के प्रवक्ता ने कहा, 'गाजा में मानवीय अभियान समाप्ति के करीब हैं।' डब्ल्यूएफपी के प्रवक्ता अबीर एतेफा ने चेतावनी दी कि यदि भोजन और अन्य आपूर्ति गाजा में भारी मात्रा में प्रवेश करना फिर से शुरू नहीं करती है, तो अकाल जैसी स्थिति फैल

जाएगी। इसके अतिरिक्त, यूएनआरडब्ल्यूए ने जोर देकर कहा कि उसके स्वास्थ्य केंद्रों को 10 दिनों में चिकित्सा आपूर्ति नहीं मिली है, हालांकि, वीओए की रिपोर्ट के अनुसार, इसके स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारी अभी भी अपने केंद्रों पर चिकित्सा परामर्श आयोजित करते हैंइस बीच, विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख ने एक्स पर एक पोस्ट साझा किया, जिसमें कहा गया कि उत्तरी गाजा में अल-अवदा अस्पताल 19 मई से घेराबंदी में है, किसी को भी बाहर जाने या प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। डब्ल्यूएचओ प्रमुख टेड्रोस अदनोम घेब्येयियस ने बताया कि 22 मरीज, उनके साथी और 148 अस्पताल कर्मचारी अभी भी अंदर फंसे हुए हैं। सोमवार को अल-अवदा के मेडिकल स्टाफ ने इमारत पर स्नाइपर हमले की सूचना दी। एक तोपखाना रॉकेट पांचवीं मंजिल पर गिरा जहां प्रशासन कार्यालय स्थित है, लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ। वीओए ने बताया कि हमले के बाद, डब्ल्यूएचओ प्रमुख ने अस्पताल में मानवीय पहुंच और तत्काल युद्धविराम का आह्वान किया।

वाशिंगटन प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने मंगलवार को कहा कि गाजा में सहायता के लिए अब कई क्रॉसिंग पॉइंट हैं, जिसमें मानवीय समुद्री गलियारा भी शामिल है, जहां साइप्रस में सहायता का निरीक्षण किया जाता है और वहां अतिरिक्त निरीक्षण के बिना सीधे अशदोद के इजरायली बंदरगाह तक पहुंचाया जाता है। हम यथासंभव (सहायता) देने की कोशिश कर रहे हैं। और फिर विभिन्न तरीकों से वितरण करना गाजा के अंदर कई समूहों पर निर्भर है, अधिकारी ने कहा। उन्होंने मानवीय सहायता को स्व-वितरित करने वाले सशस्त्र तत्वों का सामना करने वाले संघर्ष-विरोध और काफिलों के समन्वय की आवश्यकता पर भी ध्यान दिया। वीओए की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायली बलों ने मंगलवार को कब्जे वाले वेस्ट बैंक में एक घातक हमला किया और दक्षिणी गाजा पट्टी में हमास के आतंकवादियों से लड़ाई की।

नाइजीरिया में दिखा बंदूकधारियों का आतंक, अंधाधुंध गोलीबारी में 40 लोगों की हुई मौत

एजेंसी

नाइजीरिया। अफ्रीकी देश नाइजीरिया के जुराक गांव से एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। यहां बंदूकधारियों का आतंक देखा गया है, जिसमें करीब 40 लोगों की मौत हो गई है। गांव में अंधाधुंध फायरिंग के बीच आरोपियों ने कई घरों में आग भी लगा दी। यह घटना उत्तर-मध्य नाइजीरिया में स्थित पठार राज्य में हुई।

निवासीयों ने कहीं ये बात:आपको बता दें कि पठारी पुलिस के प्रवक्ता अल्फ्रेड अलाबो का कहना है कि पठारी बांग्ला के जंगलों में सुरक्षा एजेंटों के हमले से भाग रहे डाकुओं ने सोमवार देर रात जुराक और डाकाई गांवों पर हमला कर दिया। सुरक्षा एजेंटों ने सात हमलावरों को मार गिराया। वहीं, भागते हुए डाकुओं ने नौ लोगों की जान ले ली। गांव के निवासियों का कहना है कि मरने वालों की संख्या काफी अधिक है। बंदूकधारी दर्जनों की संख्या मे थे। उन्होंने बाइक पर गांव में धावा बोला था। उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी की और कई लोगों का अपहरण कर लिया।

मैंने किसी तरह अपनी जान बचाई

गौरतलब है कि जुराक के निवासी बंबागीदा अलीयू ने बताया कि जैसे ही वे लोग हमारे गांव में घुसे, उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी। बिना किसी दया भाव के उन्होंने 40 से अधिक लोगों की हत्या कर दी। मैं किसी तरह उनके चंगुल से भाग कर अपनी जान बचा पाया था। मैंने अभी तक अपने परिवार को नहीं दिखा। वहीं अन्य निवासी टिमोती हारूना ने बताया कि आरोपियों ने कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया। उन्होंने कई लोगों का अपहरण कर लिया। इसके अलावा हमारे घरों में आग लगा दी।

हमले और अपहरण आम बात

हाल के वर्षों में उत्तरी नाइजीरिया में ग्रामीण इलाकों में हमले और फिरौती के लिए अपहरण आम बात हो गई है। जहां सशस्त्र गिरोहों ने गांवों, स्कूलों और यात्रियों को निशाना बनाया है और लाखों नाइरा की फिरौती की मांग की है। नाइजीरिया सुरक्षा चुनौतियों से ग्रस्त है, जिसमें इसके उत्तर-पूर्व में 14 साल से चल रहा इस्लामी विद्रोह, दक्षिण-पूर्व में अलगाववादी हिंसा और मध्य क्षेत्र में किसानों और चरवाहों के बीच अक्सर होने वाली घातक झड़पें शामिल हैं।

नेपाल के गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ रिट दायर करने को सुप्रीम कोर्ट की मंजूरी

एजेंसी

काठमांड। सहकारी ठगी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उपप्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ रिट दायर करने को मंजूरी दे दी है। कोर्ट के आदेश पर शुक्रवार को रिट दायर की जाएगी, जिसके बाद अगले हफ्ते से इस पर सुनवाई किए जाने की संभावना है।

रवि लामिछाने के खिलाफ कई सहकारी संस्थाओं में आर्थिक अनियमितता कर 95 करोड़ रुपये से अधिक का घोटाला करने का आरोप है। सदन से लेकर सड़क तक विपक्ष आन्दोलन कर रहा है। इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने गृहमंत्री रवि लामिछाने को क्लीन चीट देने वाले सरकार के महान्यायाधिवक्ता दीनमणि पोखरेल के खिलाफ भी रिट दायर करने को कहा है।

कुछ दिन पहले ही महान्यायाधिवक्ता पोखरेल ने रवि लामिछाने की सहकारी कांड में कोई संलग्नता नहीं होने की बात कहते हुए उन्हें क्लीन चिट दे दी थी। महान्यायाधिवक्ता के इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में एक अधिवक्ता ने रिट दायर की थी, जिसे पोखरेल ने निरस्त कर दिया था। महान्यायाधिवक्ता के इस फैसले के खिलाफ अधिवक्ता अनुपम भट्टराई ने सीधे कोर्ट के इजलास में रिट दायर की थी। इसी पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश टेक प्रसाद ढुंगाना ने गृहमंत्री रवि लामिछाने और महान्यायाधिवक्ता पोखरेल के खिलाफ रिट दायर करने का आदेश दिया है। जस्टिस ढुंगाना ने कहा कि महान्यायाधिवक्ता ने जिस आधार पर गृहमंत्री

रवि लामिछाने को क्लीन चिट दी है, उसकी जांच अदालत में होगी। महान्यायाधिवक्ता पर कड़ी टिप्पणी करते हुए जस्टिस ढुंगाना ने कहा कि यदि इसी तरह वह इतने संगीन मामलों पर भी खुद ही फैसला देने लगे और आरोपितों को क्लीन चिट देने लगे तो फिर अदालत का क्या काम रह जाएगा?

अमेरिका साल के अंत तक एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर भेजेगा- अमेरिकी दूत

एजेंसी

वाशिंगटन। भारत में अमेरिकी दूत एरिक गार्सेटी ने कहा कि अमेरिका साल के अंत तक एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर भेजेगा। उन्होंने कहा कि एनआईएसएआर परियोजना, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के बीच एक संयुक्त पृथ्वी-अवलोकन मिशन, भी वर्ष के अंत तक लॉन्च होने की संभावना है।हम इस वर्ष एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में भेजने जा रहे हैं।उन्होंने कहा, जब पीएम (नरेंद्र) मोदी (2023 में अमेरिका) आए थे तो हमने वादा किया था कि इस साल के अंत तक हम ऐसा करेंगे और हमारा मिशन इस साल अंतरिक्ष में जाने में सक्षम होने के लिए अभी भी ट्रैक पर है।अमेरिकी राजदूत संयुक्त राज्य अमेरिका के 248वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम से इतर बोल रहे

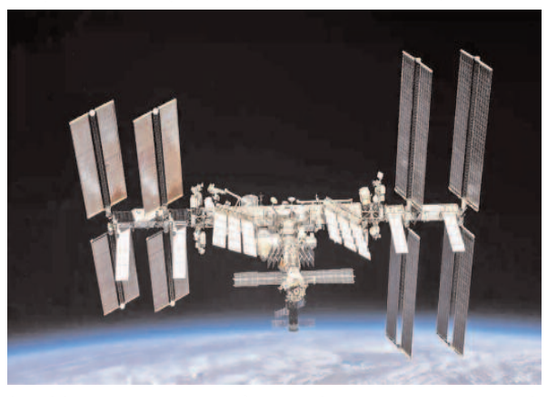

थे।उन्होंने कहा कि भारत और अमेरिका दोनों को अनुसंधान और महत्वपूर्ण उभरती प्रौद्योगिकी के समन्वय पर ध्यान देना चाहिए ताकि वे एक-दूसरे की ताकत का तेजी से लाभ उठा सकें।

राजनयिक ने कहा कि भारत ने पिछले साल चंद्रमा पर चंद्रयान 3 को उसी लागत पर उतारा था जो अमेरिका ने इसी तरह के चंद्र मिशन पर खर्च की थी।अमेरिका के पास कुछ क्षमताएं हैं जो भारत के पास आज भी नहीं हैं। जब दोनों को मिला दिया जाता है, तो दोनों देशों के पास वे क्षमताएं होती हैं, उन्होंने कहा।नागरिक परमाणु ऊर्जा क्षेत्र पर, गार्सेटी ने कहा कि चुनाव के बाद, भारत सरकार बकाया दायित्व मुद्दों को संबोधित कर सकती है और हाथ में हाथ और हाथ में हाथ डालकर आगे बढ़ सकती है।

भारत में दो स्थान - गुजरात में मीठी विरधी और आंध्र प्रदेश में कोवड्डा - परमाणु रिएक्टर बनाने के लिए अमेरिकी कंपनियों के लिए निर्धारित किए गए हैं।हालाँकि, कंपनियों ने सिविल लायबिलिटी न्यूक्लियर डैमेज एक्ट 2010 पर चिंता जताई है, जो नो-फॉल्ट लायबिलिटी व्यवस्था के माध्यम से परमाणु घटना से हुए नुकसान के लिए पीड़ितों को तुरंत मुआवजा देने का प्रावधान करता है।

फिलिस्तीनी राज्य को मान्यता देना आतंकवाद के लिए इनाम जैसा - नेतन्याहू

तेल अवीव । इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने नॉर्वे, आयरलैंड और स्पेन द्वारा घोषित एक स्वतंत्र फिलिस्तीनी राज्य की मान्यता के खिलाफ चेतावनी दी है।

नेतन्याहू ने एक बयान में कहा, फिलिस्तीनी राज्य को मान्यता देने का कई यूरोपीय देशों का इरादा है जो आतंकवाद का इनाम है। उन्होंने जोर देकर कहा, यहूदिया और सामरिया (वेस्ट बैंक) में 80 प्रतिशत फिलिस्तीनी 7 अक्टूबर के भयानक नरसंहार का समर्थन करते हैं। इस बुराई को कोई राज्य नहीं दिया जा सकता।

इमरान खान ने सड़क पर आंदोलन शुरू करने का दिया संकेत

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक अध्यक्ष और जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने बुधवार को अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के राजनीतिक उत्पीड़न के विरोध में सड़क पर आंदोलन शुरू करने का संकेत दिया और अपनी पार्टी के नेतृत्व और समर्थकों को इंतजार करने का निर्देश दिया। उसके कॉल के लिए.अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं को एक संदेश में, 71 वर्षीय पूर्व क्रिकेटर से नेता बने ने दावा किया कि पाकिस्तान के इतिहास में पिछले दो सबसे काले वर्षों के दौरान, पीटीआई का राजनीतिक उत्पीड़न पूरी तरह से दण्डमुक्ति के साथ किया गया।मेरे राष्ट्र के लिए मेरा संदेश:अब हमें इस फासीवादी माफिया के खिलाफ व्यावहारिक रूप से संघर्ष करने के लिए तैयार रहना चाहिए। खान ने एक्स पर पोस्ट किए गए अपने संदेश में कहा, मैं आप सभी को- मेरे केंद्रीय पार्टी नेतृत्व, केंद्रीय, प्रांतीय और स्थानीय पार्टी संगठन, सदस्यों, कार्यकर्ताओं, समर्थकों और आम आदमी को मेरे सड़क आंदोलन के आह्वान का इंतजार करने का निर्देश देता हूं।क्रिकेटर से नेता बने क्रिकेटर वर्तमान में रावलपिंडी की अदियाला जेल में कैद हैं क्योंकि वह तोशाकाना, गैर-इस्लामी विवाह और सिफर मामलों में कई सजा काट रहे हैं।खान ने कहा कि उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सामूहिक दंड के निषिद्ध युद्ध उपकरण के अधीन किया गया - हमारे घरों में अतिक्रमण किया गया, हमारे लोगों को मार डाला गया और प्रताड़ित किया गया, हमारे व्यवसाय नष्ट कर दिए गए, यहां तक कि बुजुर्गों और बच्चों को भी नहीं बख्शा गया।पाकिस्तान की खातिर, हम अब तक बहुत धैर्यवान रहे हैं। लेकिन अब बहुत हो गया! उसने कहा।उन्होंने कहा कि रऊफ हसन पर जघन्य हमला बहुत उकसाने वाला है और यह दर्शाता है कि शक्तिशाली लोग असहमति को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, अंतर्निहित समस्याओं को संबोधित करने के बजाय कायरतापूर्ण रणनीति का सहारा लेना पसंद करते हैं।पार्टी के सूचना सचिव हसन पर राजधानी में एक निजी समाचार चैनल के कार्यालय की पार्किंग में लगभग चार ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के एक समूह ने कथित तौर पर हमला किया था। इसकी उनकी पार्टी ने कड़ी निंदा की, हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि राजनेता पर हमला क्यों किया गया।उनकी सोशल मीडिया टीम द्वारा प्रबंधित एक्स पर खान के अकाउंट पर पोस्ट किए गए एक संदेश में कहा गया है, पूरा देश जानता है कि हमारे नेतृत्व पर ये हमले कौन करा रहा है। यह वही शक्तियाँ हैं जो छाया में छिपी रहती हैं और न्यायाधीशों को परेशान करने और धमकाने के लिए प्रॉक्सी का उपयोग करती हैं और परिणामों के साथ खुलेआम छेड़छाड़ करके चुनावों का मजाक उड़ाती हैं।आइए हम यह स्पष्ट कर दें कि पीटीआई ऐसी गंदी रणनीति और हिंसा से नहीं डरेगी जो केवल अपराधियों को देश के सामने बेनकाब करने का काम करती है।

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

दिल्ली मेट्रो की सेवा 25 मई को मतदान के दिन तड़के चार बजे से

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा के पांचवें चरण में चुनाव ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों के लिए आवागमन की सुविधा के लिए राष्ट्रीय राजधानी में 25 मई को मतदान के दिन तड़के चार बजे से दिल्ली मेट्रो की सेवाएं शुरू हो जाएंगी। दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) ने यह जानकारी दी। डीएमआरसी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, शनिवार (25 मई) को दिल्ली में लोकसभा चुनाव के दिन, सभी लाइनों पर दिल्ली मेट्रो ट्रेन सेवाएं तड़के चार बजे से शुरू होंगी ताकि चुनाव ड्यूटी के लिए तैनात कर्मचारी इस सुविधा का लाभ उठा सकें। डीएमआरसी ने कहा, सभी लाइनों पर मेट्रो ट्रेनें सुबह छह बजे तक 30 मिनट की अंतराल के साथ चलेंगी और छह बजे के बाद ट्रेन सेवाएं पूरे दिन सामान्य रूप से चलेंगी।

धर्म से समाज व समाज से उत्तम विज्ञान का उद्भव : प्रो. बी. एन मिश्र

एजेंसी

नई दिल्ली। नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के संस्थापक एवं निदेशक प्रोफेसर. बी. एन मिश्र ने कहा कि विशेष प्रौद्योगिकी के लिए विशेष विज्ञान की आवश्यकता है जो की एक सुदृढ़ समाज से आएगा और समाज का निर्माण धर्म के सिद्धांत के आधार पर ही किया जा सकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू अध्ययन केंद्र ने 'हिन्दू धर्म में विज्ञान एवं मनोविज्ञान' पर चर्चा करने के लिये यहां एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

पुलिस नियंत्रण कक्ष को बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के नार्थ ब्लॉक स्थित दिल्ली पुलिस नियंत्रण कक्ष को बम से उड़ाने की धमकी भरा एक ई-मेल मिला है। अग्निशमन विभाग को जैसे ही इस धमकी की सूचना मिली, दो अग्निशामक वाहन को मौके पर भेजा गया। दिल्ली अग्निशमन विभाग ने यूनीवार्ता को बताया कि पुलिस नियंत्रण कक्ष को तीन बजकर सैंतीस मिनट पर बम की धमकी का ई-मेल मिला। यह ई-मेल मिलने की सूचना मिलते ही आनन-फानन में मौके पर दमकल की दो गाड़ियां भेजी गई हैं। मौके पर सघन जांच-पड़ताल की जा रही है। गौरतलब है कि इससे पहले भी इस तरह की धमकी राजधानी के स्कूलों, अस्पतालों, तिहाड़ जेल, एयरपोर्ट और उत्तर-रेलवे की सीपीआरओ बिल्डिंग को मिल चुकी है।

डॉ. विकास महात्मे एम्स नागपुर के अध्यक्ष नियुक्त

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने पूर्व राज्यसभा सांसद, प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित डॉ. विकास महात्मे को अखिल भारतीय और आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स),नागपुर का अध्यक्ष नियुक्त किया है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की एक अधिसूचना में यह जानकारी दी गई। डॉ. महात्मे ने आज यहां कहा कि वह इस नयी जिम्मेदारी को लेकर बेहद उत्साहित हैं और नयी भूमिका में समाज कल्याण के योगदान देने में पूरा प्रयास करेंगे। उन्होंने? नये उत्तरदायित्व के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय मंत्री मनसुख मांडविया, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का धन्यवाद व्यक्त किया। डॉ. महात्मे लंबे समय से सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा में अग्रणी रहे हैं और पैरामेडिक्स और क्षमता निर्माण के महत्व पर जोर देते हैं ।

डॉ. पात्रा का विवादस्पद बयान गलत,वह प्रायश्चित करेंगे : शाह

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं देश के गृहमंत्री अमित शाह ने ओडिशा के पुरी लोकसभा सीट से प्रत्याशी संबित पात्रा के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जगन्नाथ महाप्रभु के बारे में विवादास्पद बयान को गलत माना है और कहा है कि डॉ. पात्रा इसके लिए प्रायश्चित करेंगे।

श्री शाह ने टेलीविजन समाचार चैनल न्यूज 18 पर आज रात प्रसारित होने वाले एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि देश का माहौल श्री मोदी के पक्ष में है और दक्षिण में भाजपा को अच्छी सफलता मिल रही है। भाजपा का दायरा बढ़ रहा है और इसके लिए पार्टी ने काफी ज्यादा मेहनत भी की है।

गृहमंत्री ने कहा कि मतदान में जो भी कमी आ रही है, उसका नुकसान विपक्ष को होगा, क्योंकि विपक्ष का मतदाता निराश है और निराशा के कारण विपक्ष का मतदाता वोट डालने नहीं जा रहा है।श्री शाह ने दक्षिण भारत में भाजपा की सफलता की संभावनाओं से जुड़े एक प्रश्न के जवाब में कहा कि दक्षिण में इस बार पार्टी को अच्छी खासी सफलता मिलने जा रही है और आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनने जा रही है। उन्होंने ओडिशा के बारे में कहा कि बीजू जनता दल के साथ भाजपा का गठबंधन कभी नहीं रहा है, बल्कि मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने भाजपा को मुद्दों पर आधारित समर्थन दिया है। लेकिन इस बार वहां भाजपा की सरकार बनती दिखाई दे रही है।

डॉ. पात्रा के एक विवादास्पद

बयान के बारे में श्री शाह ने कहा, संबित पात्रा का बयान जुबान फिसलने से हुआ है, इसलिए पात्रा इसके लिए प्रायश्चित्त करेंगे और प्रभु जगन्नाथ उन्हें इसके लिए क्षमा कर देंगे। राज्य में चुनावी राजनीति की बात करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा ओडिशा में 17 से ज़्यादा सीटें जीतेगी। ओडिशा में भाजपा की सरकार ज़रूर बनेगी।

उन्होंने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा, पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने ही 70 के दशक में गरीबी हटाओ का नारा दिया था लेकिन वह गरीबी हटा नहीं पाई। अब इंदिरा जी का पोता ही आज खटाखट गरीबी हटाने वाला वादा कर रहा है।कांग्रेस की खटाखट की व्याख्या 10 साल लंबी है। भाजपा की संभावनाओं पर चर्चा करते हुए गृह मंत्री ने कहा, भाजपा की स्थिति चुनाव में बहुत अच्छी है और हम 400 पार कर लेंगे। रुझानों के आधार पर चुनाव की व्याख्या नहीं होती। उन्होंने सीटें कम होने की स्थिति में प्लान बी के सवाल पर कहा कि कोई प्लान बी नहीं है, ऐसे किसी प्लान बी का सवाल ही नहीं उठता है। भाजपा पूर्ण बहुमत हासिल करने जा रही है। चुनाव में चल रहे कांग्रेस के बयानों के बारे में पूछे जाने पर श्री शाह ने कहा, कांग्रेस ने कई बार लोकतंत्र पर कुठाराघात किया है और प्रियंका गांधी को तो अपना ही इतिहास नहीं पता है। भारत में आज लोकतंत्र कांग्रेस की वजह से नहीं, बल्कि लोगों की वजह से है। इंडिया समूह पांच पीएम की रणनीति पर चल रहा है। राहुल का चार जून के बाद छुट्टी का प्लान तैयार होगा। महाराष्ट्र के बारे में गृहमंत्री ने कहा कि उन्होंने महाराष्ट्र में कोई पार्टी नहीं तोड़ी बल्कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और शिवसेना पुत्र और पुत्री के मोह की वजह से टूटी हैं। उधर श्री उद्धव ठाकरे ने सिद्धान्तों के खिलाफ जाकर भाजपा को धोखा दिया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि महाराष्ट्र में भाजपा अपना पुराना रिकॉर्ड कायम रखेगी।

चरणजीव मल्होत्रा ने भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज को भगवान का त्रिशूल दे कर किया सम्मानित

नई दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज के पक्ष में किया प्रचार, विजयश्री का दिया आशीर्वाद- चरणजीव मल्होत्रा

नई दिल्ली। संसदीय क्षेत्र नई दिल्ली में आज लोकसभा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज का स्वागत सम्मान समारोह का आयोजन करोलबाग की जनता एवं चरणजीव मल्होत्रा द्वारा किया गया। इस अवसर पर चरणजीव मल्होत्रा ने बांसुरी स्वराज को शिव का त्रिशुल से सम्मानित किया। प्रमुख समाजसेवी व गौमाता रक्षा एवं करोना योद्धा चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि संसदीय क्षेत्र नई दिल्ली से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी बांसुरी स्वराज के पक्ष में प्रचार किया जा रहा है। इस अवसर पर उन्होने कहा कि लोकसभा चुनाव 2024 का संसद का चुनाव। विकसित भारत का चुनाव है। हमारे भारत के पंजाबियों को 10 लाख से ज्यादा परिवारों में जोड़ चुके हैं। दिल्ली की सातों पर प्रचार करने का काम करे। और दिल्ली के सातों सीटों की जिम्मेदारी हमारे पास है। चरणजीव मल्होत्रा ने जय श्री राम! हमारी सांसद कैसी हो बांसुरी स्वराज जैसी हो? बांसुरी जी संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं। बांसुरी जी संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ हैं। जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे। भारत माता की जय नारे भी लगाए गए। बीजेपी की वरिष्ठ महिला ने कहा कि आप सब जाए 25 मई को अपना अपना वोट जरूर डालें, क्योंकि भारत को मोदी जी की सख्त जरूरत है। अपना मतदान जरूर दीजिए। मतदान देना हमारा धर्म सिद्ध अधिकार है। मैं चाहती हूं कि हिंदुस्तान में कोई पार्टी जीवित रहेगा सिर्फ सिर्फ बीजेपी हो। संसदीय क्षेत्र नई दिल्ली में आज लोकसभा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज कहा कि लोकसभा 2024 का सांसद का चुनाव। सनातन के सिपाहियों का चुनाव है। यह विकसित भारत का चुनाव है। प्रधानमंत्री मोदी जी को पूर्ण बहुमत से तीसरी बार प्रधान सेवक बनाने का

अधिकार है। 25 मई का दिन राष्ट्र के नाम। 25 तारीख को पोलिंग बूथ पर जरूर जाइए स्वयं जाइए। अपने परिवारों के साथ और अपने पड़ोसियों के साथ जाइए, दोस्तों के साथ जाएगी। तथा दुश्मनों को भी साथ ले जाइए। लेकिन 25 मई को जाकर कमल के फूल का बटन दबाकर यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाए, अबकी बार मोदी सरकार। इस मौके पर एक उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बीते 10 वर्षों में भारत तेजी से आगे बढ़ा है। हर भारतवासी का डंका पूरे विश्व में बजा है। चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश में सीएए कानून लागू कर दिया गया है। देश से दो विधान दो संविधान को खत्म कर कश्मीर से धारा 370 का खात्मा हो गया है। तीन तलाक को बैन कर दिया गया है, भगवान श्रीराम का अयोध्या में भव्य मंदिर का निर्माण कार्य हुआ है। चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में नए हवाई अड्डे, बुनियादी ढांचो का विकास, वंदे भारत जैसी ट्रेनों, नए आईआईटी, आईआईएम का विकास हो रहा है। मोदी जी ने देश को नई दिशा देने का काम किया है। गरीब कल्याण हेतु कई योजनाओं पर कार्य हुए है। प्रधानमंत्री आवास योजना से करोड़ों लोगों को घर दिया गया है। चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि आयुष्मान योजना, लखपति दीदी योजना, किसान सम्मान निधि के साथ ही उज्ज्वला योजना से गरीबों को फायदा पहुंचाया जा रहा है। चरणजीव मल्होत्रा ने इस अवसर पर पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय सुषमा स्वराज का भी स्मरण किया। इस दौरान कार्यक्रम में भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज, वरिष्ठ नेतागण एवं कार्यकर्तृता एवं अन्य लोग मौजूद रहे। दिल्ली चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि दिल्ली का मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने जनता की उम्मीदों पर पानी फेरा है। भ्रष्टाचार पर झाड़ू लगाने की बात करके सत्ता में आई आप ने आम जनता की गाढ़ी कमाई पर झाड़ू लगा दिया है। आम आदमी पार्टी ने देश को तोड़ने वाले लोगों को चुनाव में खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि आज आम आदमी पार्टी (आप) भ्रष्टाचार के मामले में कांग्रेस से भी आगे निकल गई है। आप पार्टी ने दिल्ली में स्कूल कॉलेज खोलने के नाम पर स्कूलों के चारों ओर शराब के ठेके बना दिए हैं। पूरी दिल्ली सरकार शराब घोटाले में अंदर है। चरणजीव मल्होत्रा ने जनता से आग्रह करते हुए कहा कि आगामी 25 मई को संसदीय क्षेत्र नई दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पुनः तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने में अपना योगदान देना है। उन्होने कहा भाजपा को विजय बनाकर विकसित भारत के संकल्प को आगे बढ़ाना है। चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि चुनाव प्रचार चल रहा है। पूरी जनता मन बना चुकी है। भारी बहुमत से भाजपा सरकार आएगी। अबकी बार 400 पार होगा।

सोरेन को नहीं मिली राहत, सुप्रीम कोर्ट का याचिका पर विचार करने से इनकार

एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने झारखंड में कथित भूमि घोटाले से संबंधित धन शोधन के एक मामले में तीन माह से अधिक समय से न्यायिक हिरासत में जेल में बंद पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अंतरिम जमानत याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया।

न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की अवकाशकालीन पीठ ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता ने इस तथ्य का खुलासा नहीं किया कि उन्होंने एक साथ दो अलग-अलग याचिकाएं दायर की थीं। एक में उन्होंने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी थी, जबकि दूसरी में जमानत की गुहार वाली। निचली अदालत ने इसका संज्ञान भी लिया था। पीठ ने सुनवाई के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री सोरेन का पक्ष रख रहे वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल से पूछा, हमें बताएं कि इसका उल्लेख (याचिका में) कहीं भी क्यों नहीं किया गया कि अदालत द्वारा संज्ञान

लिया गया था। पीठ ने कहा, हम उस व्यक्ति की याचिका पर विचार नहीं कर सकते, जिसका आचरण (तथ्यों का खुलासा नहीं करने के मामले में) दोषपूर्ण है।

इसके बाद श्री सिब्बल ने अदालत के समक्ष याचिका वापस लेने अनुमति की गुहार लगाई, जिसे स्वीकार कर लिया गया। इस तरह सोरेन ने अपनी याचिका वापस ले ली। शीर्ष अदालत ने इस तथ्य का हवाला दिया कि शिकायत पर चार अप्रैल 2024 को संज्ञान लिया गया था और तत्काल याचिका में इसका उल्लेख नहीं किया गया था।

श्री सिब्बल ने तर्क दिया कि गलती संबंधित अधिवक्ता की थी। इसमें मुवक्किल (सोरेन) की कोई ग़लती नहीं है। वह तो जेल बंद है।

इसके बाद पीठ ने कहा, आपका आचरण दोषमुक्त नहीं है। यह निंदनीय है। श्री सिब्बल ने अंततः उच्च न्यायालय के 3 मई के फैसले के खिलाफ दायर याचिका वापस ले ली, जिसने 31 जनवरी को प्रवर्तन निदेशालय द्वारा (सोरेन की) गिरफ्तारी की वैधता पर सवाल उठाने वाली उनकी याचिका खारिज कर दी थी। पीठ ने यह भी कहा कि अदालत गर्मी की छुट्टियों के दौरान काम कर रही है। शासन में बैठे लोगों को इसका ध्यान रखना चाहिए और याचिका दायर करने में देरी के समाधान पर विचार करना चाहिए।

इससे पहले श्री सिब्बल ने सोरेन की अंतरिम जमानत की गुहार लगाते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के बराबर राहत की मांग की थी, जिन्हें 10 मई को मौजूदा लोकसभा चुनावों के दौरान प्रचार के लिए एक जून तक अंतरिम जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया गया था। शीर्ष अदालत ने श्री सोरेन से यह बताने को कहा था कि क्या वह (अदालत) उनकी गिरफ्तारी की वैधता की जांच कर सकता है, क्योंकि जमानत से इनकार करने वाले आदेश में कहा गया है कि उनके खिलाफ प्रथम दृष्टया मामला बनता है। शीर्ष अदालत ने कहा था कि ईडी के पास इस मामले में योग्यता के आधार पर एक अच्छा मामला है, लेकिन बाद के घटनाक्रमों को देखते हुए इसे एक अलग नजरिए से देखना होगा।

नोएडा एयरपोर्ट आसपास बनेंगे तीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, हजारों बच्चों का भविष्य होगा तय

एजेंसी

नई दिल्ली। गौतमबुद्ध नगर के जेवर में बन रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास सेक्टरों में तीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्थापित किए जाएंगे। इनका क्षेत्रफल 8-8 हजार वर्ग मीटर होगा। आगामी जून महीने में इसको लेकर भूमि का आवंटन कर दिया जाएगा। यहां पर हर प्रकार की सुविधा मिलेगी। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास बच्चों को हाईटेक शिक्षा दी जाएगी। इस प्रोजेक्ट को लेकर यमुना प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉक्टर अरुणवीर सिंह ने खास जानकारी दी है।

क्या है पूरी योजना

डॉ.अरुणवीर सिंह ने बताया कि सेक्टर-18 और सेक्टर-20 में तीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्थापित किए जाएंगे। इन स्कूलों का क्षेत्रफल 8-8 हजार वर्ग मीटर होगा। जेवर एयरपोर्ट पूरी तरीके से बनने के बाद यहां पर लाखों लोग रहने के लिए आएंगे। उनको कोई दिक्कत ना हो, इसको लेकर योजना तैयार की जा रही है। ये स्कूल 8वीं क्लास से लेकर 12वीं कक्षा तक के होंगे।

इसके अलावा 8 नए स्कूल बनेंगे

आपको बता दें कि इन तीन सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के अलावा 8 नए स्कूलों की स्थापना के लिए विशेष योजना भी शामिल है। खास बात यह है कि इन 8 स्कूलों में दो स्कूल विशेष बच्चों और दो दिव्यांग बच्चों के लिए होंगे।

स्कूलों में ही विशेष बच्चों और दिव्यांग बच्चों के लिए मेडिकल सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। इसी के साथ शिक्षकों, प्रबंधन और अन्य कर्मचारियों के लिए स्कूल परिसर में ही आवासीय इकाइयां बनाई जाएंगी।

सुप्रीम कोर्ट में चुनाव आयोग का हलफनामा, मतों के पूर्ण आंकड़े वेबसाइट पर डालना अनुचित

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव मतदान के 48 घंटे के भीतर प्रत्येक मतदान केंद्र पर डाले गए मतों के आंकड़े वेबसाइट पर डालने की मांग वाली एक याचिका

पर कहा कि इस प्रकार से आंकड़े पूरी तरह से सार्वजनिक करने से चुनावी प्रक्रिया को नुक्सान होगा।

एनजीओ एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स द्वारा दायर एक आवेदन पर 24 मई को शीर्ष अदालत में सुनवाई से पहले चुनाव आयोग ने एक हलफनामा दायर कर यह दावा किया। हलफनामे में कहा गया है कि फॉर्म 17 सी के पूर्ण खुलासे से शरारत हो सकती है। इससे पूरे चुनावी प्रक्रिया को नुकसान होगा।

चुनाव आयोग ने कहा कि वेबसाइट पर फॉर्म 17सी (प्रत्येक मतदान केंद्र पर डाले गए वोटों के आंकड़े) डालना उचित नहीं होगा। चुनाव आयोग ने यह भी दावा किया कि पहले दो चरणों में अंतिम मतदान आंकड़े में 5 से 6 फीसदी की वृद्धि के संबंध में लगाए गए आरोप ÷भ्रामक और निराधार÷ थे।

आयोग ने यह भी कहा कि चुनाव के अंतिम दो चरणों में प्रक्रिया बदलना चुनाव प्रक्रिया में हस्तक्षेप होगा और यह संविधान के अनुच्छेद 329 (बी) (चुनाव याचिका को छोड़कर संसद या विधानसभा के किसी भी चुनाव पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए) के तहत होगा।

उच्चतम न्यायालय से चुनाव आयोग ने यह भी कहा कि उम्मीदवार या उसके एजेंट के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को फॉर्म 17सी प्रदान करने का कोई कानूनी आदेश नहीं है। याचिका में कहा गया है कि याचिकाकर्ता चुनाव अवधि के बीच में एक आवेदन दायर करके एक अधिकार बनाने की कोशिश कर रहा है, जबकि कानून में ऐसा कुछ भी नहीं है। याचिका में यह भी तर्क दिया कि मतदान केंद्र के पास फॉर्म 17सी अपलोड करने के लिए कोई साधन नहीं है। याचिका में चुनाव आयोग को मौजूदा लोकसभा चुनावों के प्रत्येक चरण के मतदान के 48 घंटों के भीतर अपनी वेबसाइट पर मतदान केंद्र-वार मतदान प्रतिशत डेटा अपलोड करने का निर्देश देने की मांग की गई है। चुनाव आयोग ने कहा कि 19वीं लोकसभा के लिए चुनाव पहले से ही चल रहे हैं। सात चरणों में से पांच चरण पहले ही समाप्त हो चुके, जबकि शेष दो चरण 25 मई और 1 जून को होने हैं। हालाँकि, याचिका में दावा किया गया है, कुछ ऐसे तत्व और निहित स्वार्थ भी हैं जो किसी भी तरह से इसे बदनाम करने के लिए चुनाव आयोग द्वारा हर चुनाव के आयोजन के समय के करीब निराधार और झूठे आरोप लगाकर संदेह का अनुचित माहौल बनाते रहते हैं। चुनाव आयोग ने दावा किया कि याचिका फिलहाल सुनवाई योग्य नहीं है, क्योंकि इसी तरह के मुद्दे उठाए गए थे, जिसके परिणामस्वरूप 26 अप्रैल 2024 को ईवीएम के उपयोग के संबंध में फैसला सुनाया गया।

चुनाव आयोग ने अदालत के समक्ष यह भी तर्क दिया कि मामले में रिट याचिका 2019 से लंबित है, लेकिन तत्काल आवेदन ÷ईवीएम से मतपत्रों तक अभियान के लिए समर्थन हासिल करने के लिए पूर्वाग्रह, संदेह, संदेह और प्रक्रिया की अखंडता पैदा करने÷ के लिए मतदान के बीच में दायर किया गया है।

NAME CHANGE
I hitherto known as NANDLAL S/O VIJAY MAHTO residing at F-254,Gali No-5,Near Pipe Line,Ganga Vihar,Gokalpur,North-East Delhi-110094 have changed my name and shall here after be known as KISHAN

NAME CHANGE
I hitherto known as VIJAY TIWARI alias CHANDAN TIWARI S/o RAMLALA TIWARI, permanent R/o Ganeshpur Babhangawar, Sitamarhi, Bihar-843327, and currently residing at H.No. F-1415, J J Colony, Sector-8, Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-201301 have changed my name and shall hereafter be known as CHANDAN TIWARI.

NAME CHANGE
I, ADITI SAMUEL W/O ANUBHAV SINGH residing at 90/90, 2ND FLOOR(LS), MALVIYA NAGAR, NEW DELHI 110017 have changed my name to ADITI SINGH for all future purposes

NAME CHANGE
I, LAKSHYA JAIN W/O PANKAJ KUMAR JAIN residing at 168 JAGRITI ENCLAVE, ANAND VIHAR, SHAHDARA, DELHI-110092 have changed my name to LAKSHAY JAIN for all future purposes

NAME CHANGE
I, PANKAJ JAIN S/O N.K JAIN residing at 168 JAGRITI ENCLAVE, ANAND VIHAR, SHAHDARA, DELHI-110092 have changed my name to PANKAJ KUMAR JAIN for all future purposes

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल बब्बन खान पुत्र श्री अब्दुल रहीम निवासी L-1-2156, गली नम्बर 10, अस्थल मंदिर, संगम विहार, नई दिल्ली ने अपने पुत्र जावेद खान को उसके गलत आचरण, दुर्व्यवहार करने के कारण उससे अपने सभी पारिवारिक सम्बन्ध विच्छेद करते हुए उसे अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। आज के बाद मेरे मुवक्किल एवं उसके परिवार के सदस्य का जावेद खान के किसी भी अच्छे, बुरे कार्य के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे ।
MADHU SINGH Advocate
Ch. No. 512 Saket Court Complex Lawyers Block New Delhi-17

NAME CHANGE
I, MOHD USMAN S/O AFTAB ALI residing at 108 WARD NO-14 MOHALLA DUBA DASNA, GHAZIABAD UP-201001 have changed my name to USMAN ALI for all future purposes

NAME CHANGE
I, Ramesh Chakravarty S/o Bhagwan Dass R/o Plot No-242, 3rd Floor, Pocket A-2 Sector-17, Dwarka, South West Delhi, Delhi-110078 Have Changed My Name To Ramesh Kumar for all purposes

NAME CHANGE
I, NABAMITA MUKHOPADHYAY wife of Shri VARUN SINGH and D/O Sh. PRIYABRATA MUKHOPADHYAY, resident of Flat No. 179, Sanskriti Appts, Block-3, Sector-19B, Dwarka, New Delhi-75 have changed my name from NABAMITA SINGH to NABAMITA MUKHOPADHYAY for all future purpose.

NAME CHANGE
I, Kapil Sharma S/O Yoginder Nath R/O H-81/Kapil -vihar/Awho, Sector -21C, Police Head Quarter Faridabad Haryana -121001 have changed my minor daughter name from Shatakshi Sharma to Shattakshi Sharma for all future purposes.

NAME CHANGE
It is for general information that I, RAVENDRA KUMAR YADAV S/o HARPAL SINGH residing at House No.- Village Tophapur, Tofapur, Meerut, Uttar Pradesh - 250401, declare that name of my minor Son has been wrongly written as SAUMYA YADAV in my minor son namely SOM YADAV aged 13 years in his school record. The actual name of my minor son is SOM YADAV which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, hitherto Known as DEEPIKA SHARMA alias ANJU CHAWLA D/o PREM NATH SHARMA W/o KAPIL CHAWLA residing at C-137, Telecom Staff quarter, Vivek Vihar, East Delhi, Delhi -110095 have changed my name and shall hereafter be known as ANJU CHAWLA.

NAME CHANGE
I, HARSH S/O VINOD KUMAR R/O B-101, NEAR POLICE STATION, SITA PURI DABRI, DWARKA, DELHI-110045 have changed my name from HARSH to HARSH KUMAR for all future purposes.

NAME CHANGE
I, MEENA W/O VINOD KUMAR R/O B-101, NEAR POLICE STATION, SITA PURI DABRI, DWARKA, DELHI-110045 have changed my name from MEENA to NEENA for all future purposes.

NAME CHANGE
I, PUJA DEVI wife of No. 15208258Y Rank- HAV (OFC) Name-RAM DULAR residing at VILL-BARA, PO-KHARAUNI, TEHSIL-ARA, DISTT-BHOJPUR, BIHAR-802166 have changed my name from PUJA DEVI to PUJA KUMARI for all future purposes vide Affidavit Dated 23/05/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, RUCHI GUPTA W/o Late AMIT GUPTA, R/o B-65/156, Gali - 5, Guru Nanak Pura, Laxmi Nagar, East Delhi, Delhi-110092, have changed the name of my minor daughter DIVYANSHA GUPTA alias DEVYANSHA GUPTA, aged 14 years and she shall hereafter be known as SHIVIKA GUPTA.

लाइसेंसी हथियार जमा न करवाने पर शस्त्र लाइसेंस होगा निरस्तः एसपी

एजेंसी

फतेहाबाद। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पुलिस अधीक्षक आस्था मोदी ने शस्त्र लाइसेंसधारकों को जल्द से जल्द अपने लाइसेंसी हथियार नजदीकी पुलिस थाना या गन हाउस में जमा करवाने के निर्देश दिए हैं। पुलिस कप्तान ने कहा है कि लोकसभा चुनाव के छठवें चरण में 25 मई को हरियाणा में भी मतदान होना है। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्वक, निष्पक्ष और भयमुक्त वातावरण में चुनाव संपन्न करवाने के उद्देश्य से लाइसेंसधारक को अपना हथियार बिना किसी देरी के जमा करवाना चाहिए। चुनाव के दौरान किसी के पास भी कोई हथियार नहीं होना चाहिए। जो लोग अपने लाइसेंसी शस्त्र जमा नहीं करेंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही वह अशांति फैलाने में शामिल पाए गए, तो उनके शस्त्र लाइसेंस निरस्त कर प्रशासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी।

पुलिस कप्तान ने कहा कि शस्त्र लाइसेंस धारक अपना हथियार जमा नहीं करवाते हैं, तो उनके शस्त्र लाइसेंस का नवीनीकरण रोक दिया जाएगा। पुलिस अधीक्षक ने जिले की आम जनता से अपील की है कि चुनाव के दौरान यदि कोई व्यक्ति शांति भंग करता है या किसी प्रकार का षड्यंत्र रचने की जानकारी उनके पास है तो इसकी तुरंत सूचना डायल 112 या अपने निकटवर्ती पुलिस थाना या चौकी में दे सकते हैं। सूचना देने वाले व्यक्ति का नाम व पता गोपनीय रखा जाएगा। वहीं जिला फतेहाबाद की संपूर्ण जनता से चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से सफल बनाने के लिए पुलिस विभाग को सहयोग करने की अपील की है।

कांग्रेस में नहीं थम रही गुटबाजी, सैलजा के रोड शो में आपस में भिड़े दो गुट

फतेहाबाद। लोकसभा चुनाव के बीच भी कांग्रेस में गुटबाजी थमने का नाम नहीं ले रही है। सिरसा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार कुमारी सैलजा के लिए समर्थन में रोड शो से पूर्व ही कांग्रेस नेताओं के दो गुट आपस में भिड़ गए। टोहाना में सिरसा लोकसभा क्षेत्र से पार्टी उम्मीदवार कुमारी सैलजा के समर्थन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने रोड शो का आयोजन किया गया। रोड शो में हाल ही में कांग्रेस में शामिल हुए जजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष निशान सिंह, वरिष्ठ कांग्रेस नेता हरपाल सिंह बुडानिया, बलजिंद्र सिंह ठरवी, जयपाल लाली, सुबे सिंह समैण सहित तमाम नेता अपने समर्थकों सहित शामिल हुए। इस दौरान सभी नेता और उनके वर्कर एक दूसरे से आगे रहने की होड़ में दिखे। कांग्रेस कार्यकर्ता एक दूसरे से आगे रहने के चक्कर में आपस में भिड़ गए। रोड शो में हरपाल बुडानिया व उनके वर्करों को दूसरे कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने पीछे करने का प्रयास किया गया। इसको लेकर दोनों पक्षों में विवाद हो गया। देखते ही देखते दोनों गुटों के कार्यकर्ता आपस में उलझ गए और उनमें झड़प हो गई। इस दौरान जमकर हंगामा हुआ। कांग्रेस वर्करों को आपस में भिड़ता देखकर कांग्रेस नेता भी बगले झांकते नजर आए। सारा माजरा सोशल मीडिया पर लाइव चलने से भी कांग्रेस नेताओं के पसीने छूट गए। कुछ मिनटों के हंगामे के बाद आखिरकार नेताओं ने कार्यकर्ताओं को अलग किया। इसके बाद मामला शांत हुआ।

पुलिस ने फ्लैग मार्च निकालकर नागरिकों को किया भयमुक्त मतदान के लिए प्रेरित

हिसार। लोकसभा चुनाव के दौरान शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस ने विभिन्न क्षेत्रों में फ्लैग मार्च निकाला। इस दौरान पुलिस ने नागरिकों को भयमुक्त होकर मतदान करने व असामाजिक तत्वों की सूचना देने की अपील की। एएसपी राजेश कुमार मोहन सहित सभी पर्यवेक्षण अधिकारियों के नेतृत्व में पुलिस के जवानों एवं अर्धसनिक बलों ने हिसार शहर, शहर के बाजार से लेकर जिले के प्रत्येक स्थान पर फ्लैग मार्च निकाला। फ्लैग मार्च के दौरान मतदाताओं से अपील की गई कि क्षेत्र में मतदान को लेकर किसी प्रकार की बहस नहीं करें तथा क्षेत्र में शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखें। एएसपी राजेश कुमार मोहन ने इस दौरान कहा कि आमजन में विश्वास और अपराधियों में भय उत्पन्न करने के लिए फ्लैग मार्च निकाला गया है। यह उन लोगों के लिए चेतावनी है, जो साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की फिराक में लगे रहते हैं। उन्होंने बताया कि मतदान के समय शांतिभंग अथवा माहौल खराब करने करने वालों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान पुलिस कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए तत्पर है तथा पुलिस के साथ साथ चुनाव के दौरान अर्ध सैनिक बलों को भी तैनात किया गया है जो चुनाव में भयमुक्त एवं शांतिपूर्ण मतदान करवाने के लिए तैनात रहेगा।

तीन साल पहले हत्या के केस में 5 दोषियों को उम्रकैद

गुरुग्राम। तीन साल पहले 20 मई 2021 को बंधवाड़ी गांव के पास एक हत्या के मामले में अदालत ने पांच आरोपियों को दोषी ठहराते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई है। साथ ही जुर्माना भी लगाया गया है। जानकारी के अनुसार बंधवाड़ी गांव के पास पहाड़ी पर बने कमरे में संदीप उर्फ कालू निवासी गांव बंधवाड़ी की हत्या कर दी गई थी। इस सूचना पर पुलिस चौकी ग्वाल पहाड़ी थाना में गुरुग्राम की पुलिस टीम घटनास्थल पर पहुंची। मृतक के पिता ने पुलिस को शिकायत देकर कहा था कि 17 मई 2021 की रात को करीब एक बजे इनके गांव का ही एक लडक़ा आया। उसके बेटे संदीप को अपने साथ ले जाने के लिए आवाज देने लगा। जब उसके बेटे ने उसकी बात नही सुनी तो उसने कहा या तो साथ चल वरना तुझे जान से मार दूंगा।

डबल इंजन की सरकार ने मजबूती से किए काम: सैनी

मुख्यमंत्री ने करनाल के गांव कमालपुरा में जनसभा को किया संबोधित

एजेंसी

करनाल। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी में करनाल के गांव कमालपुरा में जनसभा को संबोधित करते हुए भाजपा को भारी मतों से जिताने और प्रदेश की सभी 11 सीटों (एक विधानसभा और 10 लोकसभा) पर कमल का फूल खिलाने का आह्वान किया। इस मौके पर उन्होंने कांग्रेस को जमकर घेरा।

नायब सैनी ने कहा कि कांग्रेस झूठों की पार्टी है। उसने हमेशा लोगों से झूठ बोलकर वोट हथियाने का काम किया है। कांग्रेस के पास न नीति है और न ही नेता ये लोगों को बरगला रहे हैं।सैनी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर हमला बोलते हुए कहा कि राहुल कहते हैं कि एक झटके में गरीबी खत्म कर देंगे, लेकिन कैसे इसके बार में उन्होंने कुछ नहीं बताया। कांग्रेस सिर्फ अपने वोट बैंक की राजनीति करती है। उसे प्रदेश और देश के विकास से कुछ लेना देना नहीं है। वहीं, दूसरी तरफ भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने प्रदेश की मजबूती से किए काम किए हैं, देश की मजबूती के लिए काम किए हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से कहा कि आने वाली 25 मई को प्रदेश में 10 कमल के फूल खिलाने का काम करें और अपने प्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को एक मजबूत प्रधानमंत्री बनाकर देश की सबसे बड़ी पंचायत में भेजें, ताकि वे देशहित और आपके हितों में निर्णय ले सकें। इससे पहले मुख्यमंत्री को लड्डुओं से तौलकर और फूल मालाएं पहनाकर भव्य स्वागत किया।

मोदी जी ने गरीबों के लिए लड़ाई लड़ी

मुख्यमंत्री सैनी ने कहा कि हरियाणा और केंद्र की भाजपा सरकार ने पिछले दस सालों में देश के विकास के लिए काम किए हैं। मोदी जी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों में भारत तेज गति से आगे बढ़ा है। कांग्रेस झूठ का सहारा लेकर वोट मांगती है। लोगों को झूठे सपने दिखाती है, वह गरीबों का आरक्षण जिहादियों को देना चाहती है। वहीं, दूसरी तरफ,पीएम नरेंद्र मोदी ने गरीबों के प्रति मजबूत लड़ाई लड़ी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि हर भारत के लोगों के सिर पर छत हो। दस वर्षों में 4 करोड़ लोगों को घर मुहैया कराया गया और आने वाले वर्षों में 3 करोड़ मकान का लक्ष्य रखा गया है।

प्रधानमंत्री मोदी की ही गारंटी है कि 50 करोड़ लोगों को बैंक में खाता खोलकर जोड़ा गया। जनसभा में बीजेपी कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री सैनी को गदा भेंट कर उत्साहवर्धन किया। सीएम नायब सिंह सैनी का नामांकन रद्द करवाने की शिकायत करने वाले किसान नेता राजेन्द्र आर्या दादुपुर भाजपा में ही शामिल हो गए हैं। सीएम नायब सिंह सैनी ने ही उनको भाजपा की सदस्यता ग्रहण करवाई।

हत्या करने के दोषी को उम्र कैद की सजा

एजेंसी

जींद। एडीजे नेहा नोरिया की अदालत ने कुल्हाड़ी मार कर व्यक्ति की हत्या करने के जुर्म में दोषी को उम्र कैद की सजा सुनाई है। इसके अलावा अदालत ने दोषी को 30 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया है। अभियोजन पक्ष के अनुसार 29 नवंबर 2019 को जुलाना थाना पुलिस को सूचना मिली थी कि गांव शामलो कलां निवासी मनीष झगड़े में लगी चोटों के कारण अस्पताल में भर्ती है और उसकी मौत हो चुकी है। जिस सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर गांव शामलो कलां निवासी पवन के बयान लिए। पवन ने बताया कि उसका छोटा भाई मनीष (28) नवंबर को घरेलु कार्य के लिए गांव रामकली निवासी अजाद के खेत में गऐ थे। वहां अजाद व उसका लड़का अमित उसे मिले। अमित उसके भाई मनीष के साथ बातचीत करने लगा। इसी दौरान कहासुनी के चलते अमित ने उसके भाई पर कुल्हाड़ी से वार कर हत्या कर दी।

भाजपा को जिताकर मोदी को मजबूत प्रधानमंत्री बनाएं: मनोहर लाल

- **मनोहर ने करनाल में दो कमल के फूल खिलाने का लोगों से किया आह्वान**

एजेंसी

करनाल। करनाल लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने करनाल, नीलोखेड़ी और घरौंडा क्षेत्र में जनसंपर्क किया। भीषण गर्मी और तबीयत खराब होने के बावजूद मनोहर लाल वोट मांगने लोगों के बीच पहुंचे। इस दौरान मनोहर ने पूर्व की कांग्रेस सरकार पर हमला बोला। उन्होंने प्रदेश की भाजपा सरकार के काम गिनवाए और आने वाली 25 मई को भाजपा के समर्थन में भारी संख्या में मतदान करने की अपील की। मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश और केंद्र में भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने लोगों के विकास के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। हमने युवाओं को बिना खर्ची, बिना पर्ची के नौकरी दी। प्रदेश से भ्रष्टाचार खत्म करने का काम किया है। कांग्रेस सरकार के समय में कानून व्यवस्था का दिवाला पिटा पड़ा था। हर कोई उनके कारनामों से त्रस्त था, लेकिन भाजपा सरकार के आते ही कानून व्यवस्था में सुधार हुआ व लोगों का विकास हुआ।

सभी 11 सीटों पर कमल खिलाएं : पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश की सभी 11 सीटों (एक विधानसभा और 10 लोकसभा) पर कमल का फूल खिलाकर, अबकी बार 400 पार के लक्ष्य को पूरा करने में हरियाणा अपना पूरा योगदान दे। ध्यान रखें आपको करनाल में दो कमल के फूल (एक विधानसभा सीट और एक लोकसभा सीट) खिलाने हैं। चुनाव प्रचार अभियान के दौरान मैं जहां-जहां भी गया। वहां भारी भीड़ को देखते हुए मैं दावे के साथ कहता हूं कि इस बार प्रदेश की जनता ने भाजपा को भारी मतों से जीत दिलाने का मन बना लिया है। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने सुबह ही जनसंपर्क यात्रा शुरू की। इस दौरान उन्होंने करनाल में अनिल गांधी, पुरानी सब्जी मंडी में अनूप भारद्वाज, कलामपुरा में सरपंच रणजीत सिंह, डबरी में सरदार बलविंदर सिंह, रतनगढ़ में सरंपच प्रतिनिधि प्रवीण, मेहता फार्म हाउस में मेहर सिंह, पूरण चंद, करनाल में रजत शर्मा, कृष्ण कुमार सैनी, सुभाष सैनी एडवोकेट और डॉ राजबीर सिंह डागर के आयोजन में जनसभाओं में शिरकत की और भाजपा को वोट देने की अपील की।

मतदान करवाने में महिला अधिकारियों व कर्मचारियों की रहेगी विशेष भूमिका

एजेंसी

जींद। लोकसभा चुनाव को संपन्न करवाने में नारी शक्ति की विशेष भूमिका रहेगी। जिला में पोलिंग पार्टियों में नियुक्त किए गए 2270 पोलिंग पार्टी स्टाफ में 710 महिला अधिकारी व कर्मचारी हैं। इनके अलावा सखी बूथों पर अलग से महिला अधिकारी व कर्मचारी मतदान संपन्न करवाएंगी। कि जिला में लोकसभा आम चुनाव 2024 को निष्पक्ष, पारदर्शी एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करवाने को लेकर कुल 5080 अधिकारी व कर्मचारी ड्यूटी देंगे। चुनाव प्रक्रिया के लिए 2270 पोलिंग अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई। इनमें से 710 महिला अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हैं जो मतदान प्रक्रिया संपन्न करवाती नजर आएंगी। वहीं दूसरी ओर जिला में बनाए गए छह सखी बूथों पर 24 महिला अधिकारी एवं कर्मचारी अलग से ड्यूटी देंगी। महिला अधिकारियों व कर्मचारियों के चुनाव में ड्यूटी देने की बात की जाए तो विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र जींद में 186 महिलाएं, जुलाना में 145, नरवाना में 128, सफीदों में 103 व उचाना कलां में 148 महिला अधिकारी एवं कर्मचारी लोकसभा आम. चुनाव 2024 को सम्पन्न करवाने में अपनी भूमिका निभाएंगी। जिला निर्वाचन अधिकारी मोहम्मद इमरान रजा ने जानकारी देते हुए बताया कि लोकसभा आम चुनाव में जिला में 1135 पीओ, 1135 एपीओ की ड्यूटियां निर्धारित की गई हैं। इसी प्रकार चुनाव को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करवाने को लेकर जिला में 72 माईक्रो ऑब्जर्वर की ड्यूटी निर्धारित की गई हैं, जो पूरी चुनाव प्रक्रिया पर गहनता से नजर रखेंगे और अपनी रिपोर्ट सामान्य आब्जर्वर को देंगे। कुल पार्टी 1135 चुनाव में लगाई गई हैं। लोकसभा चुनाव लोकतंत्र का महापर्व है। इस महापर्व को निष्पक्ष एवं शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने में अधिकारियों व कर्मचारियों की जिम्मेदारी के साथ-साथ आमजन का भी सहयोग जरूरी है।

कांग्रेस के पास न कोई नेता और न कोई नीति: कंवर पाल

यमुनानगर। हरियाणा के कृषि मंत्री कंवर पाल ने जगाधरी शहर के कल्याण नगर,सरस्वती कालोनी ,झंडा चौंक और पंसारी बाजार में चुनाव प्रचार किया। उन्होंने अंबाला लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी बंतो कटारिया को भारी मतों से जिताने और प्रदेश की 10 लोकसभा पर कमल का फूल खिलाने का आह्वान किया। इस मौके पर उन्होंने कांग्रेस को जमकर घेरा। कृषि मंत्री ने कहा कि कांग्रेस झूठों की पार्टी है। उसने हमेशा लोगों से झूठ बोलकर वोट हथियाने का काम किया गया है। कांग्रेस के पास न नीति है और न ही नेता ये लोगों को बरगला रहे हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर हमला बोलते हुए कहा कि राहुल कहते हैं कि एक झटके में गरीबी खत्म कर देंगे, लेकिन कैसे इसके बार में उन्होंने कुछ नहीं बताया। कांग्रेस सिर्फ अपने वोट बैंक की राजनीति करती है। उसे प्रदेश और देश के विकास से कुछ लेना देना नहीं है। वहीं, दूसरी तरफ भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने प्रदेश की मजबूती से किए काम किए हैं।

उन्होंने लोगो से कहा की आने वाली 25 मई को प्रदेश में 10 कमल के फूल खिलाने का काम करें और अपने प्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक मजबूत प्रधानमंत्री बनाकर देश की सबसे बड़ी पंचायत में भेजें, ताकि वे देशहित और आपके हितों में निर्णय ले सकें। इस मौके पर बड़ी संख्या में आमजन शामिल रहें।

देश और प्रदेश के लाखों युवाओं का भाजपा ने संवारा भविष्य: डा. अशोक तंवर

यमुनानगर।

सिरसा। सिरसा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी डा. अशोक तंवर ने सिरसा व ऐलनाबाद विधानसभा क्षेत्रें के गांवों में तूफानी दौरा किया। शहर में स्थित अजय वाटिका में युवा सम्मेलन में भी उन्होंने शिरकत की। डा. अशोक तंवर ने कहा कि प्रदेश भाजपा सरकार ने सरकारी नौकरियों में पर्ची व खर्ची का सिस्टम बंद कर योग्य युवाओं के भविष्य को संवारने का काम किया है। इससे पहले नौकरियां नीलाम की जाती थी। नेताओं व सरकार में बैठे लोगों के नजदीकी ही सरकारी नौकरियों पर काबिज हो जाते थे। इंटरव्यू महज दिखावा होता था। उन्होंने कहा कि भर्ती की लिस्ट तो नेताओं की कोठी से जारी होती थी। ऐसी स्थिति में योग्य युवा नौकरी पाने से वंचित रह जाते थे। वे ये मान बैठे थे कि सरकारी नौकरियां पहुंच वाले लोगों के लिए ही हैं, हमारे लिए नहीं। मगर भाजपा सरकार ने युवाओं की इस सोच को बदलने का काम किया है। सत्ता संभालने के बाद नौकरियों में भाई भतीजावाद व पर्ची खर्ची का सिस्टम खत्म कर सालों साल से चली आ रहे इस सिलसिले पर अंकुश लगाने का काम सरकार ने कर दिखाया। अब युवाओं को उनकी योग्यता के हिसाब से नौकरियां मिलती हैं। मजदूर-रिक्शेवाले के बेटे-बेटियों को सरकारी नौकरियां मिली हैं। ऐसे में युवा वर्ग सरकार की नीतियों से खुश हैं। भाजपा प्रत्याशी डा. अशोक तंवर युवा सम्मेलन के बाद गांव केलनिया, राजू की ढाणी, मोहम्मदपुर, सलारपुर, नटार, शहीदांवाली, मोडियाखेड़ा, चौबुर्जा, रंगड़ी, कंगनपुर व बेगू में विशाल सभाओं को संबोधित करने पहुंचे तो ग्रामीणों

ने बड़े उत्साह भाव से डा. तंवर का स्वागत करते हुए उनके समर्थन में मतदान करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर डा. तंवर ने कहा कि हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अंत्योदय का सपना साकार हुआ है। सरकार की कल्याणकारी नीतियों से हर वर्ग खुश है। जनता की यही पुकार है कि नरेन्द्र मोदी एक बार फिर से देश के प्रधानमंत्री बनें, ताकि देश और नई ऊचाइंयों को छुए।

हरियाणा की शिक्षा है नफरत छोड़ो मोहब्बत करो: राहुल गांधी

एजेंसी

सोनीपत। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोनीपत की नई अनाज मंडी में कहा कि हरियाणा प्यारा प्रदेश है। यहां की शिक्षा नफरत छोड़ो मोहब्बत करो की रही है, लेकिन भाजपाई देश को तोड़ने में लगे हैं जबकि हम जोड़ने में। यही विचारधारा का फर्क है। राहुल गांधी ने सोनीपत में पंडित सतपाल ब्रह्मचारी के समर्थन में रैली को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि वे हरियाणा की सभी 10 सीटें जीतेंगे। 4 जून को आईएनडीआईए गठबंधन की सरकार बनाएगी। एक महीने बाद 4 जुलाई को देश की करोड़ों महिलाओं के खाते में 8500 रुपए आएंगे। 30 लाख नौकरियों को तत्काल भरा जाएगा। अग्निवीर याजना को बंद करेंगे। हर ग्रेजुएट को नौकरी अधिकार दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि मोदी ने देश के 22 लोगों के लिए 16 लाख करोड़ रुपए का कर्ज माफ किया। हम किसानों का कर्ज माफ करेंगे, गारंटी के रूप में एमएसपी देंगे। आशा वर्कर का वेतनमान दुगना करेंगे। छोटे उद्योगों को बढ़ाएंगे, जीएसटी का सरलीकरण करेंगे इससे देश की आर्थिक तरक्की होगी।

पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि राहुल आए हैं। राहुल जब यहां से गए थे भारत जोड़ो यात्रा पर हरियाणा बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई में नंबर वन बना हुआ है।

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष उदयभान, प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी दीपक बाबरिया, पूर्व सांसद धर्मपाल

तो इस दौरान उन्होंने किसानों से, जवानों से, महिलाओं से बात की। खिलाड़ियों से बात की। राहुल ने जो न्याय पत्र बनाया है, उसकी जानकारी वह खुद देंगे। हरियाणा किसानों, खिलाड़ियों और जवानों का प्रदेश है, लेकिन अभी यह तीनों परेशान हैं। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले हरियाणा नंबर वन था, लेकिन आज मलिक, सोनीपत लोकसभा उम्मीदवार पंडित सतपाल ब्रह्मचारी, विधायक, पूर्व विधायक, मेयर निखिल मदान, राजेश पहलवान पुरखासिया, अनुप मलिक, कांग्रेस फ्रंटल संगठनों के नेता शामिल हुए, रैली स्थल का इंतजाम सोनीपत से विधायक सुरेंद्र पंवार, सुरेंद्र छिक्कारा व अन्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

लोकसभा चुनाव गुंडागर्दी करने वालों को बाहर करने का समय : रणजीत सिंह

- **कई वर्षों बाद भी नहीं बदलती गुंडागर्दी करने वालों की फितरत, जब मौका मिला, तभी की गुंडागर्दी**
- **भाजपा सरकार ने जनता के हित में अनेक योजनाएं शुरू करके धरातल पर उतारा**

एजेंसी

हिसार। हिसार से भाजपा उम्मीदवार रणजीत सिंह ने कहा है कि मतदान के दिन हमें यह बात अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि हमें किसको चुनना है और किसको बाहर करना है। मतदान के दिन ऐसा दिन है, जब हम अपने मनपसंद उम्मीदवार को चुनकर लोकसभा में भेज सकते हैं। ऐसे में जनता को साफ छवि के नेता का चुनाव करना चाहिए, ताकि कोई गुंडागर्दी करने वाला व्यक्ति जनता के वोटों का नाजायज फायदा न उठा जाए। वे जनसंपर्क अभियान के दौरान बरवाला व उकलाना विधानसभा क्षेत्र के गांव खरकड़ा में जनसभा करके वोटों की अपील कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि हमारे सामने चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार के इतिहास से हर कोई वाकिफ है। उक्त उम्मीदवार की ग्रीन ब्रिगेड के चर्चे पूरे हरियाणा में रहे, गुंडागर्दी फैली और फिर केन्द्र सरकार को उस पर प्रतिबंध लगाना पड़ा। यही नहीं, गुंडागर्दी का आलम यह रहा कि हिसार के पटेल नगर में एक युवक को अपनी जान देकर इस गुंडागर्दी की कीमत चुकानी पड़ी। उन्होंने कहा कि ऐसा व्यक्ति, जिसका इतिहास अपराध से भरा पड़ा हो, उसे क्षेत्र की जनता अपना सांसद कैसे चुन

कि विरोधी उम्मीदवार की आदत में सुधार कई वर्षों बाद भी नहीं हुआ। अपने विधायक काल में उक्त नेता पर न केवल गुंडागर्दी बल्कि डकैती के केस तक दर्ज हुए। उन्होंने कहा सकती है। रणजीत सिंह ने कहा कि चौटाला ने कहा कि भाजपा कार्यकाल में लोगों को योजना के तहत रहने के लिए मकान, इलाज के लिए आयुष्मान योजना सहित अनेक लाभकारी योजनाओं को शुरू किया गया, जिससे आमजन को काफी लाभ मिल रहा है। अपने जनसंपर्क अभियान के तहत भाजपा उम्मीदवार रणजीत सिंह ने बरवाला विधानसभा क्षेत्र के सुलखनी, राजली का भी दौरा किया और जनसभाएं करके वोटों की अपील की। दौरे के दौरान उन्हें ग्रामीणों ने पुरजोर समर्थन देने का ऐलान किया। इस दौरान जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़, रणधीर सिंह धीरू, सीमा गैबीपुर, पूर्व विधायक वेद नारंग, बहादुर सिंह नंगथला, कपूर सिंह बेनीवाल, सरपंच वजीर सिंह, प्रकाश पूनिया, सहित संबंधित गांवों के ग्रामीण मौजूद रहे।

धोखे से गाड़ी ले जाकर वापिस ना देने वाला गिरफ्तार

एजेंसी

हिसार। हांसी शहर पुलिस ने धोखे से गाड़ी ले जाकर वापिस नहीं करने के मामले में एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान मसूदपुर निवासी सचिन के रुप में हुई है।

जांच अधिकारी सहायक उप निरीक्षक रविकांत ने बताया कि आरोपी सचिन तीन मई को सुबह पांच बजे मिनी माडल टाऊन निवासी निर्मला देवी पत्नी नरेश कुमार की क्रेटा गाड़ी कहीं जरुरी काम जाने की बात कहकर ले गया था। आरोपी ने निर्मला से कहा कि उसने उस के पति नरेश से गाड़ी को ले जाने बारे पूछ रखा है। निर्मला ने बताया कि आरोपी अपना मोटरसाइकिल उनके यहां छोड़कर चला गया था लेकिन जब सचिन से अपनी गाड़ी वापिस खड़ी करके जाने के लिए कहा तो सचिन ने गाड़ी लौटाने से मना कर दिया और उसके बाद उनका फोन उठाना भी बंद कर दिया था।

NAME CHANGE

I hitherto known as VAISHNAVI alias PALAK VERMA D/o NAVEEN VERMA R/o 106 P, Sector-5 Part-3, Gurgaon, Haryana-122001, have changed my name and shall hereafter be known as PALAK VERMA.

राहुल गांधी के आने से भाजपा की राह आसान हुईअमोहन लाल बडौली

एजेंसी

सोनीपत। लोकसभा सोनीपत से भजपा के उम्मीदवार मोहन लाल बडौली ने कहा है कि राहुल गांधी के सोनीपत में आने से भाजपा की राह आसान हुई है। महात्मा गांधी कहते थे कांग्रेस देश से खत्म होनी अब उस काम को राहुल गांधी कर रहे हैं।

पंडित मोहन लाल ने कहा कि मोदीका जादू जनता में चल रहा है सभी नरेंद्र मोदी को देश हित में प्रधानमंत्री तीसरी बार देखाना चाहते हैं इसलिए हर वोटर मोदी बन कर चुनाव में वोट करेगा और करवाएगा। यह देश सुरक्षित रहे, बंटे नहीं इसके लिए विघटनकारी ताकतों को दरकिनार करने के लिए वोटर एक मंच पर आ रहे हैं कुछ मीडिया कर्मी नेरेटिव सेट

करने का प्रयास कर रहे हैं कि भाजपा कमजार है, लेकिन ऐसा हकीकत के धरातल नहीं है।

उन्होंने सोनीपत चल कर कर्मगढ़, धीमाना, बीबीपुर, बहवलपुर आदि लगभग 15 स्थानों पर जनसंपर्क अभियान के अंतगर्त नरेंद्र मोदी के नाम पर वोट मांगे। मोहन लाल बडौली को माला पहनाकर जगह जगह पर शानदार स्वागत किया गया। 25 मई को होने वाले चुनाव में भाजपा के पक्ष में ऐतिहासिक रिकॉर्ड के साथ मतदान करने की अपील की है। दूसरी तरफ भारी संख्या में भाजपा जिला कार्यालय पहुंचकर बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाजपा के पक्ष में वोट करने का संकल्प लिया। मोहनलाल बडौली की पत्नी गीता देवी ने सभी महिलाओं को पटका पहनाकर स्वागत किया।

जुबिलेंट फूडवर्क्स ने 5,500 से अधिक डोमिनोज पिज्जा स्टोर खोलने का लक्ष्य

एजेंसी

मुंबई। जुबिलेंट फूडवर्क्स लिमिटेड (जेएफएल) जो भारत और चुनिंदा वैश्विक बाजारों में डोमिनोज पिज्जा से मास्टर फ्रेंचाइजी अधिकार संचालित करती है, ने कहा कि वह मध्यम अवधि में संचालित होने वाले छह वैश्विक बाजारों में मौजूदा 2,793 से बढ़कर संभावित रूप से 5,500 से अधिक डोमिनोज पिज्जा स्टोर खोल सकती है। इन बाज़ारों में आउटलेट. निश्चित रूप से, जेएफएल भारत, तुर्किये, बांग्लादेश, श्रीलंका, अजरबैजान और जॉर्जिया में डोमिनोज़ पिज़्ज़ा आउटलेट संचालित करता है। पिछले साल, जुबिलेंट फूडवर्क्स लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी जुबिलेंट फूडवर्क्स नीदरलैंड्स बीवी (जेएफएन) ने डीपी यूरेशिया का पूरी तरह से अधिग्रहण कर लिया, जो तुर्की और जॉर्जिया में डोमिनोज पिज्जा की विशेष मास्टर फ्रेंचाइजी के रूप में काम करती है और प्रभावी ढंग से एशिया के बाहर अपने भौगोलिक पदचिह्न का विस्तार करती है।

इंडियन बैंक बोर्ड ने 12 हजार करोड़ रुपये जुटाने की योजना को मंजूरी दी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र के ऋणदाता इंडियन बैंक ने बुधवार को कहा कि उसके बोर्ड ने इक्विटी और ऋण के माध्यम से 12,000 करोड़ रुपये तक जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। एक नियामक फाइलिंग में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ने कहा कि मंजूरी में क्यूआईपी/एफपीओ/राइट्स इश्यू या उसके संयोजन के माध्यम से 5,000 करोड़ रुपये तक की इक्विटी पूंजी जुटाना शामिल है, जो सरकार और आरबीआई की मंजूरी के अधीन है।इसके अलावा, यह आवश्यकता के आधार पर चालू या उसके बाद के वित्तीय वर्षों के दौरान बेसल-III अनुपालन बांड जारी करके 2,000 करोड़ रुपये तक जुटाएगा।बोर्ड की मंजूरी में बुनियादी ढांचे और किफायती आवास के वित्तपोषण/पुनर्वित्त की आवश्यकता के आधार पर चालू या बाद के वित्तीय वर्षों के दौरान एक या अधिक किश्तों में 5,000 करोड़ रुपये तक के दीर्घकालिक बुनियादी ढांचा बांड जुटाना शामिल है।इंडियन बैंक के शेयर बीएसई पर पिछले बंद के मुकाबले 1.66 फीसदी की गिरावट के साथ 565.90 रुपये पर कारोबार कर रहे थे।

माइक्रोसॉफ्ट पावरटॉयज के साथ विंडोज़ में एआई-पावर्ड एडवांस्ड पेस्ट फीचर

नई दिल्ली। माइक्रोसॉफ्ट ने अपने बिल्ड 2024 सम्मेलन में पॉवरटॉयज के साथ विंडोज़ पर एडवांस्ड पेस्ट नामक एआई-संचालित फीचर पेश किया। यह क्लिपबोर्ड से सामग्री को सादे पाठ, मार्कडाउन और JSON सहित कई प्रारूपों में चिपकाने के लिए नए विकल्प खोलता है। इसके अलावा, ओपनएआई के एपीआई क्रेडिट वाले लोगों को टेक्स्ट सारांश, कोड जेनरेशन और बहुत कुछ जैसी अधिक सुविधाओं तक पहुंच मिलती है। यह एआई-संचालित संवर्द्धन में से एक है जिसे माउंटेन व्यू-आधारित तकनीकी दिग्गज ने अपने डेवलपर सम्मेलन में प्रदर्शित किया।

माइक्रोसॉफ्ट लर्न ब्लॉग के अनुसार, एडवांस्ड पेस्ट फीचर पावरटॉयज वर्जन 0.81.0 में उपलब्ध है और इसे विंडोज की + शिफ्ट + वी शॉर्टकट से एक्सेस किया जा सकता है। यह उन्नत पेस्ट विंडो लाता है जहां उपयोगकर्ता क्लिपबोर्ड से चिपकाने के लिए 3 विकल्पों के बीच चयन कर सकते हैं - सादा पाठ,JSON, और मार्कडाउन, जिनमें से सभी का उपयोग त्वरित कुंजी शॉर्टकट के साथ किया जा सकता है।

1. सादे टेक्स्ट के रूप में चिपकाएँ - यह बिना किसी फ़ॉर्मेटिंग के क्लिपबोर्ड से टेक्स्ट को कॉपी और पेस्ट करता है।

2. JSON के रूप में पेस्ट करें - इस विकल्प का उपयोग करने से क्लिपबोर्ड से कॉपी किए गए टेक्स्ट को JSON फ़ॉर्मेटिंग में अपडेट किया जाता है।

3. मार्कडाउन के रूप में चिपकाएँ - यह क्लिपबोर्ड से कॉपी किए गए टेक्स्ट को बदल देता है और इसे टेक्स्ट के मार्कडाउन-स्वरूपित संस्करण से बदल देता है।

सन फार्मा ने चौथी तिमाही के शुद्ध लाभ में 34 प्रतिशत लाभांश घोषित किया

मुंबई। सन फार्मा ने चौथी तिमाही के शुद्ध लाभ में 34 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की, प्रति शेयर 5 रुपये का लाभांश घोषित किया सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने बुधवार को पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2023-24 की जनवरी-मार्च तिमाही के लिए अपने समेकित शुद्ध लाभ में 34 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 2,654.5 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की। सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने बुधवार को पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2023-24 की जनवरी-मार्च तिमाही के लिए अपने समेकित शुद्ध लाभ में 34 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 2,654.5 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की। तिमाही के लिए फार्मा प्रमुख का समेकित राजस्व 11,982.9 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल की समान अवधि में 1,0930.6 करोड़ रुपये से 9 प्रतिशत अधिक है। कंपनी के निदेशक मंडल ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए प्रति इक्विटी शेयर 5 रुपये का अंतिम लाभांश घोषित किया। परिचालन स्तर पर,पिछले वर्ष की समान तिमाही के 2802 करोड़ रुपये से 8.3 प्रतिशत बढ़कर 3034 करोड़ रुपये हो गया। पूरे अमेरिका में कंपनी की फॉर्मूलेशन बिक्री .1,854 मिलियन थी, जो पिछले वर्ष की तुलना में 10.1 प्रतिशत अधिक है। पिछले वर्ष की चौथी तिमाही की तुलना में अमेरिकी फॉर्मूलेशन की बिक्री 10.9 प्रतिशत बढ़कर 476 मिलियन हो गई और तिमाही के लिए कुल समेकित बिक्री का 33.5 प्रतिशत थी।

गोदरेज इंटेरियो ने जयपुर में लॉन्च किए दो नए स्टोर

राजस्थान में 116 स्टोर्स के साथ विस्तार करने की दिशा में तेजी से प्रयास

एजेंसी

जयपुर। घरेलू और ऑफिस फर्नीचर के कारोबार में जुटी गोदरेज एंड बॉयस की अग्रणी कंपनी गोदरेज इंटेरियो ने जयपुर में अपने दो नए फ्रेंचाइजी स्टोर लॉन्च किए हैं। इनमें 7000 वर्ग फुट का एक स्टोर महल रोड पर और दूसरा राजा पार्क में 2,700 वर्ग फुट में लॉन्च किया गया है। इन दो नए स्टोर के साथ कंपनी ने देश के उत्तरी क्षेत्र के रिटेल बाजारों में अपनी मौजूदगी को अधिक मजबूत किया है।

गोदरेज इंटेरियो स्टोर में स्टाइलिश घरेलू फर्नीचर की एक विस्तृत रेंज मिलती है। यहां फर्नीचर की ऐसी रेंज है, जो जयपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी अपने में समाहित करती है। इस तरह कंपनी जयपुर के बढ़ते आवासीय और वाणिज्यिक क्षेत्रों की मांगों को पूरा कर रही है। खर्च करने की लोगों की क्षमता, स्मार्ट टेक्नोलॉजी को अपनाने के प्रति रुझान और पर्यावरण के प्रति उनकी जागरूकता के साथ

जयपुर ने एक तेजी से उभरते आवासीय विकास केंद्र के रूप में अपनी खास पहचान बनाई है। माना जा रहा है कि यहां के लोग स्मार्ट टेक्नोलॉजी के साथ-साथ सस्टेनेबिलिटी को भी अपने जीवन में प्राथमिकता देते हैं। गोदरेज इंटेरियो ने अपने स्टोर में ऐसे ही प्रोडक्ट्स को बखूबी पेश किया है। नए स्टोर की लॉन्चिंग का जश्न मनाने के लिए गोदरेज इंटेरियो ने हर खरीदारी पर एक आश्चर्यजनक उपहार की पेशकश की है। साथ ही ब्रांड की समर वाइब सेल में उपभोक्ताओं को होम फर्नीचर पर 35 प्रतिशत तक की छूट दी जाएगी। जयपुर में दो नए स्टोर की लॉन्चिंग के अवसर पर गोदरेज इंटेरियो के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (बी2सी) डॉ. देव नारायण सरकार ने कहा कि गोदरेज इंटेरियो में हम अपने ग्राहकों को केंद्र में रखते हुए नए फ्रेंचाइजी स्टोर को लॉन्च करते हैं और हमारा लक्ष्य उपभोक्ताओं की मांग और उनकी जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करना है। महल रोड पर हमारा नया आउटलेट, राजस्थान में सबसे बड़ा गोदरेज इंटेरियो स्टोर है। हम अपने स्टोर में ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करते हैं और उन्हें व्यक्तिगत सहायता भी उपलब्ध कराते हैं, ताकि वे विभिन्न शैलियों और डिजाइनों का आसानी से पता लगा सकें।

उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं की फर्नीचर संबंधी तमाम आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, गोदरेज इंटेरियो अपने ग्राहकों के लिए लिविंग रूम, डाइनिंग रूम, बेडरूम, गद्दे और होम स्टोरेज प्रोडक्ट पेश करता है। हमने आधुनिक भारतीय घरों की जरूरतों के अनुरूप ऑप्टिमाइजेशन की संभावनाओं के साथ मॉड्यूलर फर्नीचर की उल्लेखनीय मांग दर्ज की है। राजस्थान में 116 स्टोर्स के साथ गोदरेज इंटेरियो ने राज्य में अपनी उपस्थिति मजबूती से स्थापित कर ली है और हम उपनगरीय बाजारों में और विस्तार करने के लिए तेजी से काम कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य इन क्षेत्रों में, विशेष रूप से होम स्टोरेज और गद्दे की श्रेणियों में अपनी उपस्थिति को तीन से चार गुना तक बढ़ाना है। राजस्थान के बाजार में प्रभावशाली वृद्धि के बावजूद हमें उम्मीद है कि हमारी अपनी वृद्धि अगले तीन वर्षों में 15-20 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) के साथ बढ़ेगी। इस अवधि में अनुमान है कि हमारा राजस्व 90 करोड़ रुपए तक पहुंच जाएगा। वर्तमान में गोदरेज इंटेरियो के अकेले जयपुर में चार से अधिक शोरूम हैं, साथ ही 32 चैनल पार्टनर और 80 खुदरा विक्रेता कंपनी के साथ जुड़े हैं।

सीएफओ ने कथित कोयला घोटाले में अडानी समूह की संलिप्तता की रिपोर्टों का उड़ाया मजाक

नई दिल्ली। अडानी समूह के मुख्य वित्तीय अधिकारी (सीएफओ) जुगेशिंदर रॉबी सिंह ने फाइनेंशियल टाइम्स (एफटी) की उस जांच रिपोर्ट का मजाक उड़ाते हुए कहा है कि ग्रेट ब्रिटेन ने अडानी समूह के गठन को रोकने के लिए 1757 ई. में भारत को उपनिवेश बनाया था, जिसमें कहा गया था कि बंदरगाहों से सत्ता हासिल की जा सकती है। कथित कोयला घोटाले में समूह की संलिप्तता। सिंह ने माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा, एफटी, बीबीसी एट अल द्वारा ग्रेटब्रिटेन को 1757 ईस्वी में भारत को उपनिवेश क्यों बनाना पड़ा, इस पर एक प्रमुख जांच रिपोर्ट। खोजी रिपोर्ट का निष्कर्ष अडानी समूह के गठन को रोकने के लिए। अब आप ही सब कुछ हैं.

एफटी रिपोर्ट में आरोप लगाया गया कि अडानी समूह ने भारतीय राज्य बिजली उपयोगिता के साथ लेनदेन में कम गुणवत्ता वाले कोयले को कहीं अधिक महंगे स्वच्छ ईंधन के रूप में पेश किया। विपक्षी नेता राहुल गांधी और जयराम रमेश ने रिपोर्ट पर ध्यान दिया और कहा कि अगर 4 जून को लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद इंडिया ब्लॉक सरकार सत्ता में आती है तो कांग्रेस पार्टी जांच का संज्ञान लेगी। जयराम रमेश ने 22 मई को एक बयान में कहा कि अगर कांग्रेस पार्टी लोकसभा चुनाव 2024 जीतती है तो कांग्रेस पार्टी इसे मोदानी महाघोटाले की संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) से जांच का आदेश देगी। गांधी ने आरोप लगाया कि अडानी ने निम्न श्रेणी का कोयला तीन गुना कीमत पर बेचकर हजारों करोड़ रुपये लूटे हैं। उन्होंने कहा, भाजपा सरकार के तहत एक बड़ा कोयला घोटाला सामने आया है। दोस्त अडानी ने निम्न श्रेणी के कोयले को तीन गुना कीमत पर बेचकर हजारों करोड़ रुपये लूटे हैं, जिसकी कीमतज, वायनाड सांसद ने एक्स पर लिखा।

अगले महीने जब भारत गठबंधन सत्ता संभालेगा तो यह सब बदल जाएगा। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने 22 मई को एक बयान में कहा, ÷मोदानी मेगा घोटाले की जांच के लिए एक महीने के भीतर एक जेपीसी का गठन किया जाएगा।÷ ऑर्गनाइज्ड क्राइम एंड करप्शन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट (ओसीसीआरपी) द्वारा सुरक्षित और फाइनेंशियल टाइम्स द्वारा समीक्षा किए गए दस्तावेजों से पता चलता है कि अडानी ने धोखाधड़ी से हवा की गुणवत्ता की कीमत पर बंपर मुनाफा कमाया होगा, क्योंकि बिजली के लिए निम्न-श्रेणी के कोयले का उपयोग करने का मतलब अधिक जलाना है। ईंधन, 22 मई को प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है।

सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपये का लाभांश देगा आरबीआई

मंबई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए केंद्र सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपये के लाभांश भुगतान को मंजूरी दे दी है। रिजर्व बैंक ने वर्ष 2022-23 में सरकार को 87,416 करोड़ रुपये का लाभांश दिया था। यह राशि एक साल पहले की तुलना में दोगुना से भी ज्यादा है। रिजर्व बैंक गवर्नर शक्तिकांत दास की अध्यक्षता में आयोजित आरबीआई के केंद्रीय निदेशक मंडल की 608वीं बैठक में लाभांश भुगतान का निर्णय लिया गया। आरबीआई ने जारी एक बयान में बताया है कि रिजर्व बैंक के निदेशक मंडल ने लेखा वर्ष 2023-24 के लिए केंद्र सरकार को अधिशेष के रूप में 2,10,874 करोड़ रुपये के हस्तांतरण को मंजूरी दी है। केंद्रीय बैंक ने अर्थव्यवस्था में

मजबूती और जुझारूपन बने रहने से आरबीआई निदेशक मंडल ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए सीआरबी को बढ़ाकर 6.50 फीसदी करने का फैसला किया है। आरबीआई ने इससे पिछले वित्त वर्ष 2022-23 में आर्थिक वृद्धि में पुनरुद्धार होने पर आकस्मिक जोखिम बफर (सीआरबी) को बढ़ाकर 6 फीसदी किया था। आरबीआई की निदेशक मंडल बैठक में डिप्टी गवर्नर डॉ. माइकल देबब्रत पात्रा, एम राजेश्वर राव, टी रबी शंकर, स्वामीनाथन जे और केंद्रीय बोर्ड के अन्य डायरेक्टर सतीश के मराठे, रेवती अय्यर, आनंद गोपाल महिंद्रा, वेणु श्रीनिवासन, पंकज रमनभाई पटेल और डॉ. रवींद्र एच ढोलकिया ने भाग लिया। इसके अलावा बैठक में आर्थिक मामलों के विभाग के सचिव अजय सेठ और वित्तीय सेवा विभाग के सचिव डॉ. विवेक जोशी भी शामिल थे।

एनटीपीसी ने एटीडी बेस्ट अवार्ड 2024 में तीसरा स्थान किया हासिल

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी राष्ट्रीय तापविद्युत निगम लिमिटेड (एनटीपीसी लिमिटेड) को प्रतिभा विकास के लिए वैश्विक मान्यता प्राप्त हुई है। कंपनी ने एटीडी बेस्ट अवार्ड्स 2024 में तीसरी रैंक हासिल किया है। एनटीपीसी यह उपलब्धि हासिल करने के साथ पिछले आठ साल में सात बार पुरस्कार प्राप्त करने वाला एकमात्र सार्वजनिक उपक्रम बन गया है। विद्युत मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि एनटीपीसी ने एटीडी बेस्ट अवार्ड्स 2024 में विश्व स्तर पर तीसरी रैंक हासिल की है। ये सभी भारतीय कंपनियों के बीच सर्वोच्च रैंकिंग है। एनटीपीसी सार्वजनिक क्षेत्र का एकमात्र उपक्रम है, जिसे पिछले 8 साल में सात बार यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिला है। 21 मई को न्यू ऑरलियन्स, यूएसए में आयोजित

एक समारोह में एनटीपीसी की सीजीएम (रणनीतिक मानव संसाधन और प्रतिभा प्रबंधन) रचना सिंह भाल ने यह पुरस्कार स्वीकार किया। एसोसिएशन फॉर टैलेंट डेवलपमेंट (एटीडी) यूएसए द्वारा स्थापित एटीडी बेस्ट अवार्ड्स, लर्निंग एंड डेवलपमेंट (एलएंडडी) के क्षेत्र में सबसे सम्मानित अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों में से एक है। यह उन संगठनों को सम्मानित करता है जो एक रणनीतिक व्यवसाय उपकरण के रूप में प्रतिभा विकास का लाभ उठाते हैं और प्रभावी कर्मचारी विकास प्रथाओं के माध्यम से उद्यम-व्यापी सफलता का प्रदर्शन करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि रैंकिंग उच्च अखंडता और वैश्विक प्रतिष्ठा वाले अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा आयोजित एक कठोर मूल्यांकन और मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से निर्धारित की जाती है।

सर्राफा बाजार में गिरावट, सस्ता हुआ सोना, चांदी की भी घटी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। तेजी के बाद घरेलू सर्राफा बाजार में गिरावट नजर आ रही है। सोना और चांदी के भाव में कमी हुई है। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 500 रुपये से 650 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हुआ है, जिसके कारण 24 कैरेट सोना का भाव 75 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर से नीचे गिर गया है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी आज 68,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर से नीचे कारोबार कर रहा है। सोने की तरह ही चांदी ने भी आज बड़ी गिरावट आई है। इस गिरावट के कारण आज दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी 94,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 74,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 68,440 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह मुंबई में 24 कैरेट सोना 74,550 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 68,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जबकि चेन्नई में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 74,830 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 68,490 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा अहमदाबाद में 24 कैरेट सोना आज 74,550 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 68,340 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 74,500 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 68,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 74,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 68,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 74,550 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 68,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 74,650 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 68,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोने की कीमत में आज कमजोरी दर्ज की गई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 74,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 68,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

कच्चा तेल 83 डॉलर प्रति बैरल के करीब, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव जारी है। ब्रेंट क्रूड का मूल्य 83 डॉलर और डब्ल्यूटीआई क्रूड 80 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल के मूल्य में कोई बदलाव नहीं किया है। इस सप्ताह के तीसरे दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंड क्रूड 0.57 डॉलर यानी 0.71 फीसदी की गिरावट के साथ 82.29 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.54 डॉलर यानी 0.68 फीसदी लुढ़ककर 79.26 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक, दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये, डीजल 87.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये, डीजल 92.15 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 रुपये, डीजल 90.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है।

पेटीएम का चौथी तिमाही में घाटा बढ़कर हुआ 550 करोड़ रुपये

एजेंसी

नई दिल्ली। पेटीएम की पैरेंट कंपनी वन 97 कम्युनिकेशंस ने वित्त वर्ष 2023-24 की (जनवरी-मार्च) चौथी तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है। 31 मार्च को समाप्त चौथी तिमाही में वन 97 कम्युनिकेशंस का घाटा बढ़कर 550 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में फिनटेक कंपनी को 167.5 करोड़ रुपये का घाटा हुआ था।।

वन 97 कम्युनिकेशंस ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में कंपनी की परिचालन आय 2.8 फीसदी घटकर 2,267.1 करोड़ रुपये हो गई। इससे पिछले वित्त वर्ष की जनवरी-मार्च तिमाही में यह 2,464.6 करोड़ रुपये थी। इस दौरान परिचालन से समेकित राजस्व

साल-दर-साल 2.9 फीसदी गिरकर 2,334.5 करोड़ रुपये से 2,267.1 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी का क्रमिक रूप से राजस्व 2,850.5 करोड़ रुपये से 20.5 फीसदी गिर गया। इसके अलावा फिनटेक कंपनी वन 97 कम्युनिकेशंस का पूरे वित्त वर्ष 2023-24 में घाटा कम होकर 1,422.4 करोड़ रुपये रह गया, जबकि वित्त वर्ष 2022-23 में यह 1,776.5 करोड़ रुपये था। पेटीएम का वार्षिक राजस्व करीब 25 फीसदी बढ़कर 9,978 करोड़ रुपये हो गया, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 7,990.3 करोड़ रुपये रहा था। पेटीएम ने पीपीबीएल पर आरबीआई के प्रतिबंध से 300-500 करोड़ रुपये के नुकसान होने का अनुमान लगाया था।

उल्लेखनीय है कि वन 97 कम्युनिकेशंस के पास पेटीएम ब्रांड का स्वामित्व है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने 15 मार्च, 2024 से व्यापारियों सहित उपभोक्ताओं के हित को ध्यान में रखते हुए पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) को किसी भी ग्राहक खाते, वॉलेट और फास्टैग में जमा, क्रेडिट लेन-देन या टॉप-अप स्वीकार करने से रोक दिया है।

क्रिप्टो करेंसी मार्केट में बिकवाली का दबाव, बिटकॉइन 71 हजार डॉलर से नीचे लुढ़का

नई दिल्ली। क्रिप्टो करेंसी मार्केट में टॉप-10 क्रिप्टो करेंसीज में से 4 मामूली बढ़त के साथ ग्रीन जोन में कारोबार कर रही हैं। बिटकॉइन और एथेरियम समेत 6 क्रिप्टो करेंसी गिरावट के साथ रेड जोन में हैं। आज के कारोबार में दुनिया की सबसे बड़ी क्रिप्टो करेंसी बिटकॉइन भी लुढ़क कर 71 हजार डॉलर के स्तर से नीचे आ गई है।

भारत में क्रिप्टो करेंसी का कारोबार करने के लिए अधिकृत एजेंसी कॉइन मार्केट कैप के मुताबिक भारतीय समय के हिसाब से आज शाम 5 बजे तक बिटकॉइन 1.34 प्रतिशत की गिरावट के साथ 70,159.52 डॉलर यानी 58.44 लाख रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहा था। इसी तरह एथेरियम की कीमत भी आज 0.34 प्रतिशत की कमजोरी के साथ गिर कर 3,731.62 डॉलर के स्तर पर आ

गई थी। बिटकॉइन और एथेरियम के अलावा सोलाना 0.98 प्रतिशत, एक्सआरपी 1.28 प्रतिशत, टॉनकॉइन 4.42 प्रतिशत और कार्डानो 3.10 प्रतिशत की कमजोरी के साथ रेड जोन में कारोबार कर रहे थे। दूसरी ओर, टेथर 0.04 प्रतिशत, बीएनबी 0.52 प्रतिशत, यूएसडी कॉइन 0.02 प्रतिशत और डॉगकॉइन 2.56 प्रतिशत की बढ़त के साथ ग्रीन जोन में कारोबार कर रहे थे।

कॉइन मार्केट कैप के मुताबिक पिछले 24 घंटे के कारोबार के दौरान क्रिप्टो करेंसी के ग्लोबल मार्केट कैप में 0.56 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। फिलहाल क्रिप्टो करेंसी का ग्लोबल मार्केट कैप घट कर 2.60 लाख करोड़ डॉलर यानी करीब 216.57 लाख करोड़ रुपये रह गया है।

ग्लोबल मार्केट कैप में गिरावट आने के साथ ही पिछले 24 घंटे के दौरान क्रिप्टो करेंसीज के लेन-देन में भी गिरावट आई है। इस अवधि में कुल 11,510 करोड़ डॉलर यानी 9.59 लाख करोड़ रुपये की क्रिप्टो करेंसी की लेन-देन हुई, जो 1 दिन पहले की तुलना में 19.15 प्रतिशत कम है। अगर दुनिया की सबसे बड़ी क्रिप्टो करेंसी बिटकॉइन की बात करें कीमत में गिरावट आने के साथ ही पिछले 24 घंटे के कारोबार के दौरान क्रिप्टो करेंसी मार्केट में इस आभासी मुद्रा की स्थिति भी 0.31 प्रतिशत कमजोर हुई है, जिसके कारण इसकी मार्केट हिस्सेदारी घट कर 53.18 प्रतिशत रह गई है।

निफ्टी में लगातार पांचवें दिन तेजी, सेंसेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुआ

नई दिल्ली। पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। निफ्टी आज लगातार पांचवें कारोबारी दिन हरे निशान में बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत मजबूती के साथ हुई थी, लेकिन पहले घंटे के कारोबार में ही बिकवाली के दबाव की वजह से शेयर बाजार गिर कर लाल निशान में आ गया। हालांकि, थोड़ी ही देर बाद खरीदारी का सपोर्ट मिलने पर बाजार ने दोबारा हरे निशान में अपनी जगह बना ली। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.36 प्रतिशत और निफ्टी 0.31 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए। आज के कारोबार के दौरान एफएमसीजी, रियल्टी, आईटी, कैपिटल गुड्स और मीडिया सेक्टर के शेयरों में खरीदारी का रुख बना रहा। दूसरी ओर बैंक और मेटल इंडेक्स गिरावट के साथ बंद हुए। आज ब्रॉडर मार्केट में भी मिला-जुला कारोबार होता रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.05 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुआ। दूसरी ओर, स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.18 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज बाजार की तेजी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में सवा लाख करोड़ रुपये से अधिक का इजाफा हो गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 415.97 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 414.62 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 1.35 लाख करोड़ रुपये का फायदा हो गया।

आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 3,948 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,901 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,932 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 115 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,253 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,107 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,146 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 22 शेयर बढ़त के साथ और 8 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल शेयरों में से 30 शेयर हरे निशान में और 20 शेयर लाल निशान में बंद हुए।

बीएसई का सेंसेक्स आज 212.21 अंक की मजबूती के साथ 74,165.52 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के बाद बिकवाली के दबाव में ये सूचकांक 92.98 अंक की कमजोरी के साथ 73,860.33 अंक के स्तर तक लुढ़क गया। इसके बाद खरीदारों ने लिवाली शुरू कर दी, जिसकी वजह से इस सूचकांक ने थोड़ी ही देर में हरे निशान में वापस अपनी जगह बना ली। लगातार हो रही खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स 354.48 अंक की मजबूती के साथ 74,307.79 अंक के स्तर तक पहुंच गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 267.75 अंक की तेजी के साथ 74,221.06 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 47.55 अंक की मजबूती के साथ 22,576.60 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के बाद से ही लिवालों और बिकवालों के बीच एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश शुरू हो गई, जिसकी वजह से इस सूचकांक की चाल में भी लगातार उतार-चढ़ाव होता रहा।

बिकवाली के दबाव में ये सूचकांक 45.90 अंक की कमजोरी के साथ 22,483.15 अंक तक पहुंच गया। इसके बाद खरीदारी का सपोर्ट मिलने पर इस सूचकांक में तेजी आ गई। बाजार में लगातार हो रही खरीदारी के सपोर्ट से ये सूचकांक 100.45 अंक उछल कर 22,629.50 के स्तर पर पहुंच गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद निफ्टी 68.75 अंक की बढ़त के साथ 22,597.80 के स्तर पर बंद हुआ।

जीते कोई भी, पराजित तो निर्वाचन आयोग हुआ है

केन्द्रीय चुनाव आयोग ने, जिसे संवैधानिक व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी मिली थी, देश में संविधान तथा लोकतंत्र को गहरे खतरे में डाल दिया है। लोकतंत्र की लड़ाई में देशवासियों का साथ देने की बजाय आयोग सत्ता के पक्ष में खड़ा है। अब तो उसे भाजपा का सहयोगी संगठन बतलाया जाता है। किसी भी स्वायत्त संस्था के लिये इस दर्जे तक पहुंचना बेहद शर्मनाक कहा जा सकता है।

लोकसभा चुनाव के लिये पांच चरणों का मतदान निपट चुका है। 8 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की 49 सीटों पर सोमवार को पांचवें चरण का मतदान होने के साथ ही 418 क्षेत्रों की वोटिंग सम्पन्न हो गई है। केवल 125 सीटों पर मतदान बकाया है। अब तक के हुए मतदान के आधार पर विश्लेषक एवं बहुत से सर्वे अलग-अलग राय दे रहे हैं। कुछ भारतीय जनता पार्टी को आगे तो ज्यादातर इंडिया गठबन्धन को बाजी मारता हुआ देख रहे हैं। कुछ ऐसे भी सर्वेक्षण आये हैं जो कांटे की टक्कर बताते हुए त्रिशंकु संसद का अंदाजा व्यक्त कर रहे हैं। भावी परिदृश्य कोई भी रंग-रूप धर सकता है। वैसे छोटे-बड़े सभी सियासी दलों, उनके उम्मीदवारों, निर्दलीयों, गठबन्धनों, समीकरणों, राजनीतिक दांव-पेंचों, चुनाव को असर करने वाले तथ्यों आदि पर तो खूब चर्चा हो ही रही है, एक गैर-राजनैतिक संस्था पर भी भरपूर बहस हो रही है- वह है केन्द्रीय निर्वाचन आयोग। उसकी भूमिका एवं उसका अपने संवैधानिक दायित्वों के निर्वाह में नाकाम होने पर भी बहसें जारी हैं। कह सकते हैं कि 4 जून के चुनावी परिणामों में चाहे जो जीते, पराजित तो निर्वाचन आयोग ही घोषित होगा।

आजाद भारत में संविधान निर्माताओं ने जिस निष्पक्षता, स्वतंत्रता व निर्भयता के अपेक्षित गुण-धर्मों वाले आयोग की स्थापना की थी, उन सभी उम्मीदों को मौजूदा मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार की अध्यक्षता में बनी इस संस्था ने ध्वस्त कर दिया है। पिछले कुछ अरसे में एक के बाद एक हुए विभिन्न चुनावों में आयोग लगातार सत्ता के आगे झुकता चला गया है और इस चुनाव (18वीं लोकसभा) को देखें तो वह सिर्फ सरकार के आगे नहीं बल्कि भारतीय जनता पार्टी को ही दण्डवत प्रणाम कर रहा है। मतदान के चरण-दर-चरण आयोग जिस तरह अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ रहा है वह न केवल इन्हीं चुनावों के परिणामों को प्रभावित करेगा बल्कि आने वाले समय में एक ऐसी व्यवस्था व परिपाटी बनाकर जायेगा जिसके कारण इस महादेश के लिये स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव दूर की कौड़ी बनकर रह जायेंगे। दुख इतना ही नहीं है कि राजीव कुमार ने अपनी रीढ़ सीधी करने की कोशिश नहीं की, अधिक दुर्भाग्यजनक तो यह है कि उन्होंने खुद ही अपनी सारी शक्तियां सत्ता को सौंप दीं। टिप्पणीकारों से लेकर सोशल मीडिया तक जैसे कार्टून, चुटकुले, मीम आदि आयोग को लेकर बन रहे हैं, उससे साफ हो गया है कि टीएन शेषन जैसे अधिकारियों ने जिस मेहनत व साहस के साथ आयोग को सम्मान दिलाया था, वह राजीव कुमार जैसे अधिकारी ने मिट्टी में मिलाकर रख दिया। अपनी कार्यपद्धति से राजीव कुमार ने आने वाले समय में शेषन जैसे किसी अधिकारी के बनने का रास्ता तो अवरूद्ध कर ही दिया, भावी निर्वाचन आयुक्त भी उन्हीं के जैसे होने चाहिये- यह अलबत्ता उन्होंने सुनिश्चित कर दिया है।

इस तरह देखें तो केन्द्रीय चुनाव आयोग ने, जिसे संवैधानिक व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी मिली थी, देश में संविधान तथा लोकतंत्र को गहरे खतरे में डाल दिया है। लोकतंत्र की लड़ाई में देशवासियों का साथ देने की बजाय आयोग सत्ता के पक्ष में खड़ा है। अब तो उसे भाजपा का सहयोगी संगठन बतलाया जाता है। किसी भी स्वायत्त संस्था के लिये इस दर्जे तक पहुंचना बेहद शर्मनाक कहा जा सकता है। यह स्थिति यहां तक कैसे पहुंची, इसे जानने के लिये तीन कालखंडों में बांटकर चुनाव आयोग के कार्यकाल को देखा जाना चाहिये। टीएन शेषन के कार्यकाल (नवम्बर, 1990 से दिसम्बर, 1996 तक) को ध्यान में रखकर यह काल विभाजन होना चाहिये।शेषन पूर्व, शेषन का कार्यकाल और शेषन के पश्चात। उनके पहले तक सम्भवत- निर्वाचन आयोग को अपनी शक्ति का भान नहीं था। था भी, तो उसने अपने नख-दंत हमेशा छिपाकर रखे या उनका वैसा इस्तेमाल नहीं किया जैसा कि वह कर सकता है। इसका सम्भावित कारण यह है कि स्वतंत्रता संग्राम की विरासत को लेकर राजनीति करने वाली आजाद भारत की प्रारम्भिक पीढ़ियों में मर्यादाओं व मूल्यों के प्रति आग्रह होता था। उनमें आज के से राजनीतिज्ञों की सी उद्दंडता और उच्छृंखलता नहीं थी। ऐसा भी नहीं कि वह पूर्णत- अनुशासित और विधिसम्मत काम करने वाली पीढ़ी थी। अनेक राज्यों में हिंसा एवं मतदान में व्यवधान डालने की घटनाएं होती थीं। बिहार बूथ कैप्चरिंग के लिये बदनाम था। यहां मतपेटियां लूट लेने और मतदाताओं को बन्धक बनाकर अपने पक्ष में वोट कराने की कुख्यात परम्परा थी। तो भी स्थिति इतने तक ही सीमित थी। शेषन ने आयोग की शक्तियों को लौटाया। उपद्रवी तत्वों पर अंकुश लगाया और राजनीतिज्ञों की मनमानी पर लगाम लगाई। उनकी कार्य शैली का आयोग परवर्ती काल में काफी समय तक अनुसरण करता रहा।

2014 में आये नरेन्द्र मोदी ने इस महत्वपूर्ण संस्था की ताकत को आंकते हुए समझ लिया था कि उसे अपने शिकंजे में लाये बगैर वे %कांग्रेस मुक्त% या %विपक्ष मुक्त भारत% के अपने मिशन को नहीं चला सकते, न ही वे %ऑपरेशन लोटस% जैसी लोकतंत्र विरोधी कार्रवाइयों को अंजाम दे सकेंगे। बहुत सहज व आश्चर्यजनक ढंग से आयोग ने अपने को भाजपा की मंशा व उद्देश्यों के अनुसार ढाल लिया। उसे पहला टास्क यह मिला कि मोदी-शाह को प्रचार के लिये अधिकतम अधिक समय मिले। इसके लिये मतदान कार्यक्रम लम्बा चले। इसका कारण यह था कि भाजपा का पूरा प्रचार इन्हीं दो लोगों पर टिका है। देश बड़ा है सो उन्हें वक्त ज्यादा चाहिये। 2014 में देश के जो मतदान 35 दिन चलते थे, 2019 में उसके लिये 38 दिन लगे। अब 2024 में यह प्रतिक्रिया पूरे 44 दिन ले रही है। पहले के दो चुनावों में भाजपा के पास कुछ और भी नेता थे। अब तो केवल मोदी ही हैं। शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा को उसी में एडजेस्ट कर लिया जाता है। पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक आदि के विधानसभा चुनावों में ऐसा करके देखा गया। कुछ राज्यों के चुनावों की घोषणा तो पीएम या शाह की सभाएं पूरी होने के बाद की गई थी। अब यह सभी के सामने साफ हो गया है कि अवधि लम्बी होने का कारण कोई सुरक्षा प्रबन्ध नहीं होता बल्कि वह यह है कि पूरा चुनावी कार्यक्रम भाजपा नेता, खासकर उसके स्टार प्रचारक नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बनाया जाने लगा है।सामान्य दिनों में तो निर्वाचन आयोग का प्रशासन पर कोई नियंत्रण नहीं होता लेकिन एक बार आचार संहिता लागू हो जाये तो उसके बाद सारी सरकारी मशीनरी आयोग के नियंत्रण में होती है और हर कोई- पीएम से लेकर अधिकारी तक- उसके कहे में होता है। 2019 का चुनाव मोदी ने पुलवामा के शहीदों के नाम पर लड़ा और वे जीते। पिछले चुनावों की बातों को यदि भूलकर अभी लड़े जा रहे चुनाव के प्रचार में कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब मोदी अपने भाषणों में विपक्ष को कोसने, भ्रष्टाचार के निराधार आरोप लगाने के अलावा सम्प्रदाय, धर्म आधारित नफरती भाषण न करते हों। उन्हें न कोई नोटिस मिलती है न कोई सवाल करता है। देश में पहली बार एक राज्य के मौजूदा मुख्यमंत्री अरविंद केजरावील (दिल्ली) और दूसरे पूर्व सीएम (झारखंड) को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के जरिये जेल भेजा गया ताकि वे चुनाव प्रचार न कर सकें। मोदी के साथ कई भाजपा नेता हेट स्पीच करते हैं परन्तु आयोग खामोश रहता है .

संपादकीय

रईसी की मौत के बाद ईरान

ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की आकस्मिक मौत से वैश्विक समीकरणों में होने वाले बदलाव से लेकर ईरान की अंदरूनी राजनीति में मची हलचल को लेकर नए सवाल खड़े हो गए हैं। गौरतलब है कि इब्राहिम रईसी रविवार को पूर्वी अज़रबैजान प्रांत में एक बांध का उद्घाटन करके लौट रहे थे तभी उनका हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया था। उनके साथ ईरान के विदेश मंत्री भी हेलीकॉप्टर में सवार थे। सोमवार को इस हादसे के शिकार सभी लोगों की मौत की पुष्टि कर दी गई। उसके बाद से ही सवाल उठने लगे थे कि अब ईरान किस राह पर आगे बढ़ेगा, अमेरिका के साथ उसके संबंधों पर इसका क्या असर पड़ेगा

ईरान के साथ यह विडंबना रही है कि उसके इस्लामिक रिपब्लिक बनने के 45 वर्षों के दौरान उसके मौजूदा सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई को छोड़कर सभी राष्ट्राध्यक्ष किसी न किसी मुसीबत का शिकार हुए। किसी की आकस्मिक मौत हुई, किसी को राजनैतिक निशाने पर लिया गया, तो कोई पद से बेदखल कर दिया गया। इब्राहिम रईसी मोहम्मद अली राज़ई के बाद, दूसरे ऐसे राष्ट्रपति हैं जिनका कार्यकाल किसी घातक दुर्घटना के कारण समाप्त हुआ है। राज़ई की मौत 1981 में प्रधानमंत्री कार्यालय में हुए एक विस्फोट में हो गई थी।

इब्राहिम रईसी एक कट्टरपंथी नेता थे। 2021 में उन्होंने राष्ट्रपति पद संभाला था और उनके शासनकाल में लिए गए फैसलों या घटनाओं में कम से कम पांच ऐसे थे, जिनसे पता चलता है कि ईरान को वे कट्टरपंथ और रुढ़िवादिता के साथ ही आगे ले जाना चाहते थे। इसलिए उन्हें अयातुल्लाह अली खामेनेई के उत्तराधिकारी के तौर पर सर्वथा योग्य माना जा रहा था। रईसी के सत्ता में आने के बाद ईरान ने सबसे पहले अपने परमाणु कार्यक्रम को दोगुना कर दिया, जिससे पश्चिमी देश नाराज हुए। इसके बाद दूसरा बड़ा फैसला रूस और यूक्रेन युद्ध में पश्चिम के विरोध के बावजूद रूस का समर्थन करने का फैसला लेना। रईसी ने नाटो के विस्तार की ईरान के लिए भी खतरे के रूप में व्याख्या की। रईसी के कार्यकाल में कट्टरपंथ को बढ़ावा देने वाला तीसरा बड़ा फैसला हिजाब को लेकर था। 2022 के आखिरी महीनों में हिजाब के खिलाफ युवतियों ने ऐतिहासिक विरोध प्रदर्शन शुरू किया था, इसी दौरान सितम्बर में महसा अमीनी नामक युवती की मौत ईरान की मॉरल पुलिस के कारण हुई थी। इस घटना ने देश भर में युवतियों को गुस्से में भर दिया था। रईसी के शासनकाल में चौथा बड़ा फैसला इजरायल से सीधे टकराव का था। इजरायल और फिलीस्तीन के बीच अक्टूबर से चल रहे संघर्ष में पिछले महीने ही सीरिया में ईरान के वाणिज्य दूतावास पर इजरायली हमला हुआ था, जिसमें एक शीर्ष ईरानी जनरल की मौत हुई थी। इसके बाद ईरान ने इजरायल पर सीधा हमला बोला। ईरान ने सैकड़ों किलर ड्रोन और मिसाइलों की इजरायल के ऊपर बौछार कर दी। और इब्राहिम रईसी के कट्टरपंथी शासन की पांचवी पहचान तीन चरमपंथी संगठनों हिजबुल्लाह, हूती और हमास को सक्रिय समर्थन से मिलती है।ईरान की अंदरूनी राजनीति के साथ-साथ अन्य देशों के साथ उसके संबंध पर इन पांचों फैसलों का गहरा असर पड़ा। और इन फैसलों ने रईसी को एक विवादास्पद नेता भी बनाया। इब्राहिम रईसी की उनके पहले लिए फैसलों के कारण आलोचना होती रही है। रईसी ईरान के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और लंबे समय तक शीर्ष अभियोजक रहे थे। वे 1980 में बनी उस कमेटी के सदस्य थे, जिसमें खामेनेई के फतवे के बाद हजारों राजनैतिक विरोधियों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। इस कमेटी को डेथ कमेटी कहा जाने लगा। इसके अलावा जनवरी 2020 में यूक्रेन के एक अंतरराष्ट्रीय उड़ान पर निकले विमान को ईरान की रिवॉल्युशनरी गार्ड कोर ने मार गिराया था। जिसमें 167 नागरिकों की मौत हो गई थी। बाद में इसे गलती करार दिया गया, लेकिन इसके असल दोषियों को सजा नहीं मिली, ऐसा पीड़ितों के परिजनों का आरोप है।अतीत की इन घटनाओं के साथ-साथ मौजूदा वक्त के अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक हालात रईसी के लिए चुनौतीपूर्ण थे, और इन चुनौतियों के बीच ही उनकी आकस्मिक मौत हो गई। जिस हेलीकॉप्टर पर वे सवार थे, अब उस पर सवाल उठने लगे हैं। साथ ही उनकी मौत के पीछे किसी बड़ी साजिश के कोण भी तलाशे जा रहे हैं। इब्राहिम रईसी की मौत का हादसा ऐसे समय में हुआ है जब पश्चिम एशिया गहरे संघर्ष में उलझा हुआ है। पिछले सात महीनों से इजरायल ने गजा में युद्ध छेड़ रखा है। वहीं, लेबनान में मौजूद ईरान समर्थित हिजबुल्लाह ने इजरायल के खिलाफ मोर्चा खोला हुआ है। ईरान ने पहले भी अपने शीर्ष अधिकारियों की हत्या के लिए इजरायल को जिम्मेदार ठहराया है। इसलिए इस बार भी शक की सुई स्वाभाविक तौर पर इजरायल की ओर घूमी है, हालांकि अब तक की रिपोर्ट यही बता रही हैं कि ये एक दुखद घटना है और इसमें कोई साजिश अभी तक सामने नहीं आई है।सोमवार को इब्राहिम रईसी की मौत की पुष्टि के बाद ईरान के प्रथम उपराष्ट्रपति मोहम्मद मोखबर को इस्लामी गणराज्य का कार्यवाहक राष्ट्रपति नियुक्त किया गया है। इसके बाद 50 दिनों के भीतर नए राष्ट्रपति के लिए चुनाव होंगे।

कसौटी

जीवनसाथी की

हम सभी चाहते हैं हमें मिले एक ऐसा जीवनसाथी जिसके साथ जिंदगी एक खूबसूरत सफर बन जाए। अब सवाल यह उठता है कि सही जीवनसाथी का पैमाना क्या है। एक ऐसा हमसफर तलाश करना, जो आपके हर सुख-दुख का साथी बने, अंतर्मन को समझे और जिंदगी में आपकी ताकत बन सके, आसान नहीं होता। किसी भी शख्स को समझने में समय लगता है। यद्यपि इस मामले में हम अपने दिल की सुनते हैं, पर अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पहले भली प्रकार सोच-विचार करना आवश्यक है। कोई शख्स आपके लिए सही जीवनसाथी है, इस संबंध में फैसला लेने के लिए कुछ बातों पर अवश्य गौर करें:

आप दोनों एक-दूसरे का सम्मान करते हैं

आप दोनों की नजर में एक-दूसरे के लिए सम्मान का भाव होना जरूरी है। वह आपकी इज्जत करें और आप उनकी, तभी सफल हो सकता है

आपका दांपत्य।

उनके मन में आपके लिए कितनी इज्जत है, इसका निर्णय आप स्वयं कर सकती हैं, यदि

- वह समझौता करने के लिए तैयार हैं
- उन्हें आपकी भावनाओं की फिक्र है
- अगर आपके साथ कुछ गलत होता है तो वह आपसे इस बारे में पूछते हैं
- आपकी राय को महत्व देते हैं
- आपके प्रति प्रशंसा का भाव रखते हैं
- जब आपको किसी प्रकार की सफलता मिलती हैं तो उन्हें खुशी मिलती है

अगर एक-दूसरे की सफलता को देखकर आपके मन में उत्साह और सहयोग की भावना उत्पन्न होने के बजाय ईर्ष्या का भाव पैदा होता है तो आपको कुछ क्षणों के लिए रुककर यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या वास्तव में आपके हृदय में एक-दूसरे के लिए सम्मान है।

उनमें वे गुण हैं,

जिनकी आपको तलाश है

आपको पूर्व में ही भली प्रकार यह पता होना चाहिए कि अपने हमसफर में आप कौन से गुण देखना चाहती हैं। अगर आपको यह पता होगा कि आप किन गुणों की तलाश में हैं तो आपको यह फैसला लेने में मदद मिलेगी कि वह शख्स आपके लिए सही है। इस संबंध में आप एक लिस्ट भी तैयार कर सकती हैं। अपने होने वाले जीवनसाथी में जिन दस गुणों को देखना चाहती हैं, उन्हें सूचीबद्ध करें। जो गुण आपके लिए अधिक मायने रखते हैं, उन्हें इस सूची में क्रम से ऊपर रखें। इस सूची पर एक बार पुनः निगाह डालें और जो गुण आपके लिए बहुत अधिक मायने नहीं रखते उन्हें काट दें। कुछ गुणों को लेकर समझौता भी किया जा सकता है। यदि ऐसा है तो उन्हें आप लिस्ट से हटा भी सकती हैं। इस तरह आप उन पांच अहम् गुणों को चिन्हित कर पाएंगी, जिनको लेकर किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता।

यह सब करने के दरम्यान आपको दो अहम् बातें ध्यान में रखनी होंगी। पहला, कोई भी इंसान संपूर्ण नहीं है। अगर आप अपने लिए मिस्टर परफेक्ट की तलाश में हैं तो आपको इस तलाश पर विराम लगाना होगा और यह समझना होगा कि परफेक्शन जैसी कोई चीज है ही नहीं। इसके साथ ही आपके मन मस्तिष्क में यह स्पष्ट होना चाहिए कि किसी भी स्थिति में आपको कोई समझौता नहीं करना है। चूंकि वह शख्स एक अच्छा विकल्प है, इसलिए आपने उसे हमसफर के रूप में स्वीकार किया, इस सोच के साथ आगे बढ़ना ठीक नहीं है। आपके भीतर इस बात का विश्वास होना चाहिए कि आपने उन्हें सिर्फ अच्छा विकल्प मानकर अपना हमसफर नहीं चुना है, बल्कि वह वास्तव में आपके लिए सही शख्स हैं।

यह विचार करें कि जो शख्स आपके सामने है, उसमें क्या वे पांच जरूरी गुण हैं, जिन्हें लेकर आप कोई समझौता नहीं करना चाहती हैं। अगर वह आपके उस सांचे में फिट नहीं है तो इस बात की संभावना अधिक है कि वह आपके लिए सही जीवनसाथी नहीं है। कई बार ऐसा होता है कि किसी प्रभाव में आकर हम अपने मानक बदलने को तैयार हो जाते हैं, पर किसी की खातिर आपको अपने मानक कभी नहीं बदलने चाहिए। आप किसी इंसान को वह बनने पर मजबूर नहीं कर सकतीं, जो वह नहीं है। यदि वह शख्स लिस्ट में मौजूद पांच महत्वपूर्ण गुणों की कसौटी पर खरा उतरता है तो इस बात की संभावना अधिक है कि वह आपके लिए सही हमसफर साबित होगा।

आप दोनों के मूल्य एक जैसे हैं

आप अपनी जिंदगी में किन चीजों को सबसे ज्यादा महत्व देती हैं? आप अपनी जिंदगी को किन मूल्यों और आदर्शों के अनुसार जीने का ख्वाब देखती हैं? ये सवाल अहम् हैं। जिस तरह आप कुछ अनिवार्य गुणों के आधार पर वह परखने का प्रयास करती हैं कि कोई शख्स आपके लिए सही है, ठीक उसी प्रकार आपको सही फैसला लेने में मदद करेंगे आपके जीवन मूल्य। अगर आपके मूल्य एक जैसे नहीं हैं तो आगाह हो जाएं। वास्तव में हमारे मूल्य परिभाषित करते हैं व्यक्तित्व को। अगर किसी को खुश करने के लिए आप अपने आदर्शो और मूल्यों को बदलने को तैयार हो जाती हैं तो इसका अर्थ हुआ कि आप खुद को बदलने की कोशिश कर रही हैं। किसी भी रिश्ते में ऐसा करना ठीक नहींहै।

जीवन मूल्यों को लेकर काफी पहले ही आपस में विचार-विमर्श कर लेना चाहिए। यह कयास लगाने की कोशिश न करें कि उनके लिए जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या है। बेहतर होगा कि इस संबंध में उनसे खुलकर पूछें। अगर जीवन मूल्यों को लेकर उनका कोई नजरिया ही नहीं है या वह आपको इस बारे में बता पाने में सक्षम नहीं हैं तो आपको सचेत हो जाना चाहिए। एक सशक्त व्यक्तित्व का स्वामी वही है, जो परिस्थितियों के अनुसार अपना व्यवहार ढाल सके, पर जीवन मूल्यों को लेकर उसका नजरिया स्पष्ट होना चाहिए।

अंतर्मन की आवाज

अपने अंतर्मन की आवाज की कभी उपेक्षा नहींकरनी चाहिए। इसके साथ ही साथ आपको इस बात का भी ख्याल रखना चाहिए कि आपके फैसले का आधार सिर्फ वही तो नहीं है। जीवनसाथी का चुनाव करते समय आप अपने अंतर्मन पर भरोसा कर सकती हैं। किसी शख्स के बाह्य व्यक्तित्व के प्रति आकर्षण से आगे जाकर उसे समझने में मदद करता है आपका अंतर्मन। कई बार हमें आभास हो जाता है कि कोई शख्स हमारे लिए सही है या नहीं। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति स्वयं को उस रूप में पेश करने की कोशिश करे जो वह नहींहै। ऐसे में भावी जीवनसाथी के बारे में कोई फैसला लेने में अंतर्मन की आवाज काम आती है।

उनके साथ रहने पर आपको कोई दिखावा न करना पड़े

यदि कोई शख्स आपको बदलने की कोशिश करता है तो इसका अर्थ हुआ कि उसकी नजर में आपका अपना कोई महत्व नहीं है। असल में आप जैसी हैं, वैसे ही उनके साथ भी रहती हैं और उन्हें इस बात से कोई फर्क नहींपड़ता तो यह संकेत है कि वह आपके लिए सही हमसफर हो सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि उन्होंने आपको न सिर्फ आपकी अच्छाईयों के साथ स्वीकार किया है, बल्कि आपकी कमजोरियों के साथ भी अपनाया है। अगर उनके साथ रहते हुए आप दिखावे से दूर व सहज रह सकें तो आपको अपने अनुसार जिंदगी जीने की आजादी महसूस होगी। आपको यह लगेगा कि उन्होंने आपको उसी रूप में स्वीकार किया है जैसी आप हैं।

सच्चे हमसफर की तलाश के दौरान उपरोक्त बातों को ध्यान में रखना आपके लिए होगा मददगार। इसमें कोई दो राय नहीं कि एक-दूसरे के प्रति सम्मान, चाहत, विश्वास और जिंदगी को लेकर साझा आदर्शो और प्राथमिकताओं की मजबूत बुनियाद पर ही खड़ी होती है सफल दांपत्य की इमारत।

दिल को देखो, चेहरा न देखो

शादी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। एक अनजान से जिंदगीभर का साथ निभाना आसान काम नहीं है। मेरे ख्याल से अपने संभावित हमसफर में यह चीज ढूंढ़ने की कोशिश करें कि वह आपका सम्मान करता है कि नहीं। चाहे आप कामकाजी हों या हाउसवाइफ रहने वाली हों। वह आपको आपके मौजूदा रूप में स्वीकार करने की स्थिति में है तो समझें कि आप दोनों की खूब जमने वाली है। मामला थोड़ा भी आपको चेंज करने वाला हो तो समझ लें कि कुछ गड़बड़ होगी। इसलिए मुझे ऐसे साथी की तलाश है, जो मुझे मेरे रूप में स्वीकारे। मुझे पूरा सम्मान दे, मुझे समझे। मेरी कमजोरियों का इस्तेमाल मेरे खिलाफ न करे। हालांकि ऐसे लड़के का मिलना मुश्किल होता है, पर अगर परफेक्ट वन की बात करें तो मेरे ख्याल से उसमें उपरोक्त खूबी होनी चाहिए। लुक पर न जाएं। देखें कि उसका दिल सच्चा है कि नहीं। इस संदर्भ में मशहूर गाना बिल्कुल सटीक बैठता है कि दिल को देखो, चेहरा न देखो, चेहरों ने लाखों को लूटा, दिल सच्चा और चेहरा झूठा।

अनुष्का शर्मा, अभिनेत्री

जजमेंटल न हो

ठीक ही कहा गया है हर बीमारी का इलाज है, पर शक का कोई ईलाज नहीं। कहने का तात्पर्य यह कि अगर किसी को शक्की हमसफर मिल जाए तो दूसरे साथी की जिंदगी तबाह होनी ही है। सिद्धार्थ के रूप में मुझे ऐसा हमसफर मिला, जो जजमेंटल नहीं है। शक की बीमारी नहीं है, जो बहुत कम लोगों में देखा जाता है। खासकर जिसकी बीवी खूबसूरत और सोशल लाइफ में काफी सक्रिय हो। वे मेरे, दोस्तों और अपने सहकर्मियों के संग समान भाव से पेश आते हैं। हर किसी के साथ अलग-अलग अवतार नहीं लेते। वे अपनी बातें दूसरों के ऊपर नहीं थोपते। शादी के बाद भी उन्होंने मुझे पूरी आजादी दी है कि मैं शादी से पहले जैसी थी, वैसी ही रहूं। वे सामने वाले को भी अपनी बातें रखने का पूरा समय देते हैं। इस तरह का विश्वास ही किसी भी तरह की पति-पत्नी के बीच रिश्ते को गहरा करता है। देखा जाता है कि ज्यादा पढ़े लिखे लोग बात-बात पर जजमेंटल हो जाते हैं। वह गलत है। बेहतर तरीका यह है कि किसी के बारे में ठीक-ठाक अनुमान लगाने के लिए आप खुद को सामने वाली की जगह रखकर देखिए। आपको उसकी वस्तुस्थिति का पता चल जाएगा। इनसेक्योरिटी दूसरा पहलू है। यह सुनिश्चित करें कि आप जिसके साथ फेरे लेने वाली हों वह इनसेक्योर शख्स न हो तो आप की शादीशुदा जिंदगी आसानी से चलती रहेगी।

घर सजाने के दस नियम

अपने सपनों का घर आप से बेहतर भला कौन सजा सकता है। अगर आप अपने घर को अपने तरीके से सजाना चाहते हैं तो कुछ साधारण नियमों को अपना सकते हैं। जब आप उसे सजाएंगे तो उसका अहसास ही अलग होगा और आपको संतोष भी मिलेगा। यहां दिए गए कुछ नियमों को अपनाकर घर के इंटीरियर को नया अंदाज दे सकते हैं-

पहला नियम

इंटीरियर डेकोरेशन के तमाम तरीके हैं लेकिन घर की सजावट आपको अपनी पसंद के अनुरूप करनी चाहिए। पहला नियम यह है कि आपको घर में आपकी छवि/व्यक्तित्व दिखनी चाहिए। यह हमेशा ध्यान रखें कि घर आपका है न कि मेहमानों का। अपनी सुविधा को प्राथमिकता दें, दूसरों से राय लें, लेकिन उसे उतना ही मानें जितनी की जरूरत हो।

दूसरा नियम

जल्दबाजी में घर की सज्जा न करें। पहले सोचें कि आपको क्या और कैसा सामान चाहिए। आपका बजट चेक करें कि आप किन चीजों पर अधिक और कम खर्च कर सकते हैं।

तीसरा नियम

ज्यादातर चीजें 90 डिग्री कोण के हिसाब से रखें मसलन रग्स, टेबल, चेयर व पिक्चर्स आदि। रूम को सजाने का एक खास तरीका है- कोने का सॉफ्ट होना या अगर आप शार्प कॉर्नर नहीं चाहते तो कुछ गोलाकार चीजों का संयोजन भी कर सकते हैं। एक राउंड कॉफी टेबल या रग आपके कमरे को अधिक आकर्षक बना सकता है।

चौथा नियम

स्टोर जाकर हर चीज का सेट न खरीदें। इससे ऐसा लगेगा जैसे सब कुछ आपने एक ही दिन में किया है। वह गड़बड़ और बिखरा हुआ दिखेगा। ब्लेंडिंग ज्यादा बेहतर होती है। आपको कॉम्बिनेशन पर ध्यान देना है। कौन सी चीजें किसके साथ व कैसे अच्छी लगेंगी इस ओर ध्यान दें। मसलन रूम के कलर्स के साथ फर्नीचर व एक्सेसरीज का कॉम्बिनेशन बनाएं। सब कुछ मैचिंग का न रखें। यह तभी संभव होगा जब आप अलग-अलग जगह से चीजें जुटाई जाएंगी।

पांचवां नियम

आप रूम को सफेद रखना चाहते हैं तो सही रंग चुनें। बाजार में तमाम तरह के सफेद रंग उपलब्ध हैं, जो पिंक, ब्ल्यू या यलो टोन में भी दिख सकते हैं। आपको सही सफेद यानी व्हाइट डायमंड कलर, कूल इफेक्ट देने के लिए प्योर व्हाइट और वार्मर इंटीरियर के लिए व्हाइट डव कलर बेस्ट होते हैं। इसे जांचने का सही तरीका है कि आप एक छोटे बोर्ड में अपनी पसंद या सफेद रंग भरें और उसे रूम में अलग-अलग जगह और अलग रोशनी में रखकर देखें कि वह दिन व रात में कैसा लगता है।

छठा नियम

घर को सुंदर और सबसे अनूठा बनाने की चाहत के कारण अकसर हम ओवर थीम क्रिएट कर देते हैं। यह सब नॉटिकल रूम के साथ अच्छा लगता है लेकिन उसके साथ सिर्फ ब्लू और व्हाइट स्ट्रिप ही अच्छी दिखती है। अब इसके साथ आप अगर रोप नॉट पिलो और पोथॉल मिरर का इस्तेमाल करेंगे तो वह अच्छा नहीं लगेगा। किसी एक थीम पर फोकस करना बेहतर रहेगा। इससे आप खुद देखेंगे कि आपका कमरा कितना सुंदर नजर आ रहा है।

सातवां नियम

डिजाइन से पहले फ्लोर प्लान बनाएं। कमरों का डाइमेंशन, खिड़कियों, दरवाजों व अन्य फीचर्स को मापें। ताकि जो सामान आप खरीदें वह अच्छी तरह फिट हो जाए।

आठवां नियम

सबसे पहले अपने स्पेस और वातावरण पर ध्यान दें। क्लाइमेट का असर भी रंगों पर पड़ता है। रूम किस किस्म का है, यह ध्यान देना जरूरी है। मसलन अगर बच्चों का कमरा है तो उसके लिए वाइब्रेंट कलर्स चुनें। उसी तरह ड्राइंगरूम के लिए ब्राउंस और अन्य एलिगेंट डार्क शेड्स चुनें। आप चाहें तो अपनी थीम के हिसाब से भी कलर चुन सकते हैं और इसके लिए किसी इंटीरियर डिजाइनर से भी सलाह ली जा सकती है।

नौवां नियम

इंटीरियर का नया रूल यह है कि आप पूरे घर को एक थीम पर ही सजा सकते हैं। या फिर हर रूम के लिए अलग अलग थीम्स रखी जा सकती हैं। यह न सोचें कि अगर आपका किचन मॉर्डन किचन के कांसेप्ट पर है तो बेडरूम को ट्रेडिशनल अंदाज नहीं दिया जा सकता। प्रयोग का जमाना है आप प्रयोग करिये। बस इतना ध्यान रखिए कि कुछ ओवर डू ने होने पाए।

दसवां नियम

एक साथ पूरे घर में सब कुछ डिस्प्ले करना जरूरी नहीं है। इस तरह घर भरा-भरा व अजीब लगेगा। बेहतर होगा कि आप हर महीने भर में सजावटी सामानों की अदला-बदली कर लें। इससे घर में ताजगी का अहसास तो होगा ही साथ ही हर बार इंटीरियर में नयापन देखने को भी मिलेगा।

आप चाहें तो रूम में कुछ प्लांट्स भी सजा सकते हैं। इससे आपका घर नेचर के करीब दिखाई देगा और आपको ताजगी का अहसास मिलेगा। सूरज की रोशनी को घर में आने का जरिया बनाना न भूलें। सनलाइट का अपना अलग प्रभाव रहता है। ऐसे में कुछ इस तरह के पर्दे रखें कि जरूरत पड़ने पर खिड़कियां से भरपूर रोशनी घर के भीतर आ सके। सजावट में फैब्रिक और फ्लोरिंग की भूमिका बेहद अहम होती है। ऐसे में इनके को-आर्डिनेशन पर भी जरूर ध्यान दें।

व्हाइट एंड ब्लू में है मैजिक

घर की सजावट के मामले में इन दिनों टॉप पर है ब्लू एंड व्हाइट कॉंबिनेशन। घर को पेंट कराना हो या पर्दे, कालीन, सोफा, कुशन इत्यादि या आकर्षक एक्सेसरीज से कमरे को सजाना, यह कलर कॉंबिनेशन बेस्ट है। इंटीरियर डिजाइनर्स भी इस कॉंबिनेशन को देते हैं खास तवज्जो, क्योंकि यह न सिर्फ आपके घर को खूबसूरत बनाता है, बल्कि मानसिक सुकून भी देता है। वैसे तो व्हाइट के संग ब्लू के सभी शेड्स अच्छे लगते हैं। हां, अगर आप एक जैसे शेड्स के विभिन्न फैब्रिक में अलग-अलग पैटर्न और टेक्सचर का चुनाव करती हैं तो यह और भी खूबसूरत लगता है।

घर में विशेष महत्व रखते हैं आपका ड्राइंग रूम और लिविंग रूम। इनकी साज-सज्जा में झलकती है आपकी अभिरुचि। लिविंग रूम और ड्राइंग रूम की साज-सज्जा देखकर मेहमान आपके बारे में धारणा बनाते हैं। जब ऐसा है तो क्यों न यहीं से करें घर को सजाने की शुरुआत। सोफे का कलर बदलना भले ही मुश्किल हो, पर कुशन और सोफा बैक के जरिए आप यहां जोड़ सकती हैं व्हाइट एंड ब्लू कॉंबिनेशन का आकर्षण। व्हाइट एंड ब्लू में पोल्का डॉट्स प्रिंट के कुशन भी अच्छे लगेंगे।

वहीं डाइनिंग टेबल पर ब्लू और व्हाइट मैट्स सेट कर सकती हैं। जहां तक टेबल क्लॉथ की बात है तो ब्लू डेनिम में व्हाइट लेस लगाकर बिछाने से कमरे की शोभा बढ़ जाएगी। अगर कमरे का रंग डार्क ब्लू है तो व्हाइट फर्निशिंग का चुनाव करें। व्हाइट कुशन, डोर मैट्स इत्यादि से कमरे को मिलेगा मॉर्डन एवं ट्रेंडी लुक। डार्क ब्लू शेड की एक खासियत है कि इससे कमरा बड़ा लगता है।

कमरे में सौंदर्य और सुकून का अहसास जगाने के लिए व्हाइट एंड ब्लू के कॉंबिनेशन वाले कालीन एवं रग्स का चुनाव भी है अच्छा आइडिया। यदि कमरे की दीवारें सफेद हैं तो ब्लू रंग के पर्दो का चुनाव करना बेहतर रहेगा। खिड़कियों के लिए ब्लू कलर में शिफॉन के पर्दे चुन सकती हैं। यदि कमरे की दीवारें ब्लू कलर में हैं तो व्हाइट एवं ब्लू कलर के प्रिंटेड पर्दे चुनें। यहां व्हाइट के बेस में ब्लू का प्रिंट अच्छा लगेगा।

बेडरूम के लिए भी परफेक्ट है व्हाइट एंड ब्लू कॉंबिनेशन। डार्क ब्लू रंग की दीवारों के साथ खूबसूरत लुक देगा व्हाइट गिलाफ से सजा बेड। वहींव्हाइट बेडशीट्स और टॉप शीट के साथ ब्लू तकिए अच्छे लगेंगे। इनके साथ व्हाइट एंड ब्लू स्ट्राइप्स वाला कालीन और रग्स डालने से इस कलर कॉंबिनेशन का आकर्षण और भी बढ़ जाएगा।

इस संबंध में अब न करें ज्यादा सोच-विचार, क्योंकि ब्लू एंड व्हाइट कांबिनेशन में है कुछ ऐसा जादू, जो बिखेर देगा हर ओर प्रकृति की सुरम्यता और सुकून।

भारत में दिल के रोगियों की उम्र कम होने की धारणा गलत

कम आयुवर्ग के लोगों में दिल के रोगों का जोखिम उतना अधिक नहीं है और यह उम्रदराज लोगों को ही अधिक परेशान करता है : डॉ. उपेंद्र कौल

नई दिल्ली। भारत में हृदय रोग को लेकर कराए गए एक अध्ययन में कहा गया है कि देश में पश्चिमी देशों के मुकाबले ''एक्यूट कोरोनरी सिंड्रोम' (एसीएस) के रोगियों की उम्र कम होने की धारणा मिथक है और अधिक आयु वाले लोगों को ही दिल की बीमारी का खतरा अधिक देखा गया है।फोर्टिस हेल्थकेयर ने हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. उपेंद्र कौल के नेतृत्व में यह अध्ययन किया। इसके मुख्य निष्कर्षों में सामने आया है कि हृदय रोगों के तीन प्रमुख कारणों में हाई लिपिड स्तर 58.1 फीसदी, उच्च रक्तचाप 53.2 फीसदी और धूम्रपान 45 फीसदी हैं। एक्यूट कोरोनरी सिंड्रोम (एसीएस) से युवा आबादी के प्रभावित होने को लेकर कोई खास बात सामने नहीं आई है। फोर्टिस द्वारा जनवरी 2011 से दिसम्बर 2015 के बीच कुल 12,152 रोगियों पर अध्ययन किया गया। इसमें 18 से 100 साल तक की उम्र के मरीज शामिल रहे। इसमें 5850 रोगी ऐसे थे जिन्हें दिल का दौरा पड़ा था। इनमें हृदय रोग के जोखिम के कारकों में क्र मशः अत्यधिक कोलेस्ट्रोल 58.1 फीसदी, उच्च रक्तचाप 53.2 फीसदी, धूम्रपान 45 फीसदी, डायबिटीज 36.9 फीसद और मोटापा 33.6 फीसद बताए गए हैं। अध्ययन में शामिल मरीजों में 30 साल से कम उम्र के मरीजों की संख्या केवल 33 यानी 0.3 फीसद थी। 30 से 40 साल के बीच के 304 (2.8 फीसद), 40 से 50 साल के 1298 (10.7 फीसद), 50 से 60 साल के 3445 (28.3 फीसद) और 60 साल से अधिक उम्र के सर्वाधिक 7075 (58.2 फीसदी) मरीज थे। अध्ययन के अनुसार यह दिखाता है कि कम आयुवर्ग के लोगों में दिल के रोगों का जोखिम उतना अधिक नहीं है और यह उम्रदराज लोगों को ही अधिक परेशान करता है। डॉ. उपेंद्र कौल के अनुसार, ''आमतौर पर माना जाता है कि एक्यूट कोरोनरी सिंड्रोम के साथ आए भारतीय रोगियों की उम्र पश्चिमी देशों में इस रोग के मरीजों से अपेक्षाकृत कम होती है। यह मिथक है जिसे हमारे अध्ययन ने साबित किया है। हमारी जनसंख्या में आयु वर्ग और जोखिम का स्तर दोनों वैसे ही हैं जैसा पश्चिमी देशों में है। इस अध्ययन में 30 फीसद रोगी दक्षिण एशियाई देशों के भी थे।'

हृदयाघात अथवा सीने में जलन

नई दिल्ली। भारत में हृदय संबंधी बीमारियों से होने वाली मौतों की सर्वाधिक संख्या होने के बावजूद शायद यह बहुत आश्र्चयजनक नहीं है कि यहां बहुत से लोग सीने में किसी भी प्रकार के दर्द को हृद्याघात ही समझ लेते हैं।

इसके परिणाम स्वरूप बहुत से लोगों को केवल सीने में दर्द की शिकायत या सीने में जलन की शिकायत के साथ अस्पताल जाया जाता है। हृदयाघात की संभावना से बचने के लिए बीमार और उसके आस-पास के लोगों को उपलब्ध संसाधनों के इस्तेमाल से हृदयाघात अथवा इसकी संभावना से उत्पन्न हुये तनाव के बीच भेद करने में सक्षम बनाना चाहिये।

जीएमसी, जम्मू के मेडिसिन विभाग प्रमुख डाक्टर विजय कुंडल ने कहा, अस्पताल लाये जाने वाले बहुत से बीमारों में पाया गया कि उनमें हृदय-संबंधी बीमारी नहीं थी। तनाव अथवा हृदयाघात के शुरुआती लक्षणों के परीक्षण पर डाक्टरों ने कहा, बाद में दोनों ही बीमारियों में सांस लेने में दिक्कत होती है।

फोर्टिस एस्कार्ट इंस्टीट्यूट में प्रीवेंटिव कार्डियोलॉजी के प्रमुख डाक्टर पीयूष जैन ने बताया, कि सीने में जलन के कारण सांस लेने में तकलीफ नहीं होती है, वहीं दूसरी ओर हृदयाघात में सूजन और उलटी के लक्षण भी नहीं पाये जाते। इनका संबंध आमतौर पर सीने की जलन के मामले में होता है। जैन ने बताया कि सीने में जलन के कारण होने वाली बेचैनी का इलाज दवाओं से किया जा सकता है और इसे पेट में एसिड के स्तर को नियंत्रित करके किया जा सकता है। जैने ने बताया कि सीने में जलन के कारण बेचैनी होना और हृदयाघात के लक्षणों में हालांकि काफी समानतायें हैं, लेकिन चिकित्सा के संदर्भ में दोनों बीमरियों में कोई समानता नहीं है। उन्होंने बताया कि हृदयाघात निश्चित ही एक बीमारी है, जबकि सीने में जलन होना उसका एकमात्र लक्षण है।

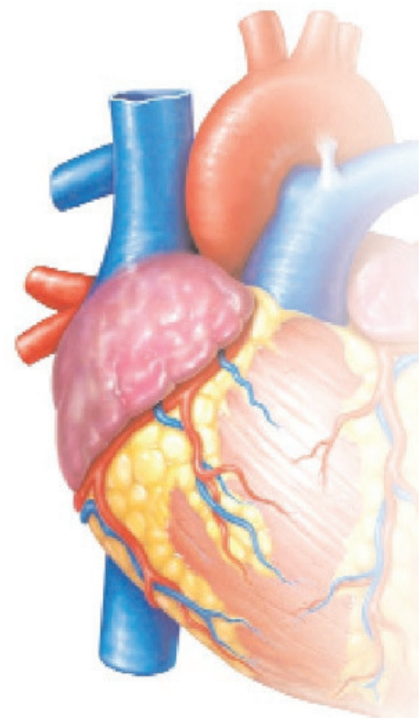

बच्चों में डायरिया के मामले काफी घटाकर पेश किए गए

नई दिल्ली। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि भारत समेत सात एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में बच्चों के डायरिया की चपेट में आने के मामले बहुत कम करके पेश किए गए हैं तथा पिछले आकलन की तुलना में उनकी संख्या दोगुनी हो सकती है। इन देशों में हर घंटे पांच साल की उम्र तक के 13 बच्चे डायरिया के चलते मर जाते हैं। ''लांसेट' में प्रकाशित नए शोध में कहा गया है, ''बैक्टीरिया, परजीवी, विषाणु एवं अन्य संक्र मणों की वजह से बच्चों के डायरिया की चपेट में आने के मामले काफी घटाकर पेश किए गए और वह पिछले आकलन की तुलना में करीब दोगुना हो सकते हैं।''बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान, गांबिया, केन्या, माली और मोजाम्बिक के 10,000 से अधिक नमूनों के विश्लेषण से पता चलता है कि शिगेला और रोटावायरस पांच साल तक के बच्चों में सबसे आम संक्रमण है, उसके बाद एडिनोवायरस, आंत में विष पैदा करने वाले ई.कोलाई, क्रिप्टोसपोरडियम और कैंपीलोबैक्टर का नंबर आता है।' डायरिया के संक्रामक कारकों के पिछले अनुमान विभिन्न अन्वेषण पद्धतियों पर आधारित थे जबकि इस अध्ययन में पहली बार 32 रोगाणुओं का परीक्षण करने के लिए मालीक्यूलर डायगोनास्टिक पद्धति का इस्तेमाल किया गया।

टाइम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)
व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचा जाए तो अच्छा है। दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-2-4-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)
आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। मातृपक्ष के लोगो का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-7-9

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा)
आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। उतावलेपन से बचें। मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। शुभांक-3-6-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)
व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती है। शुभांक-1-5-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)
खान-पान में विशेष सावधानी बरतें। मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। बातचीत में संयम बरतें। शुभांक-4-7-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श होगा। अपने आपको अधिक सक्रिय पायेगें। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। शुभांक-5-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)
अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभांक-4-6-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)
आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-1-4-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)
कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-2-4-5

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी)
परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-3-5-6

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)
शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताए भी बढ़ेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। शुभांक-4-6-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)
आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। शुभांक-2-5-7

लॉफिंग ज़ोन

नई दुल्हन के हाथ का खाना पति ने पहली बार खाया। मिर्चे अधिक तेज थीं फिर भी वह बात बिगाडना नहीं चाहता था।

पति- 'खाना बहुत अच्छा बनाया है।'

पत्नी-'लेकिन आप रो क्यों रहे हैं?'

पति-'खुशी के कारण।'

पत्नी-'और दूं?'

पति-'नहीं, मैं ज्यादा खुशी बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा।'

गृहणी ने कहा- 'रामू,आज तुमने बहुत कीमती फूलदान तोड दिया। आज के बाद ऐसी गलती की तो मार मार कर सिर गंजा कर दूंगी। समझे?

'जी समझ गया।'

'क्या समझे?'

यही कि मालिक भी किसी ऐसी ही गलती का अंजाम भुगत रहे हैं।'

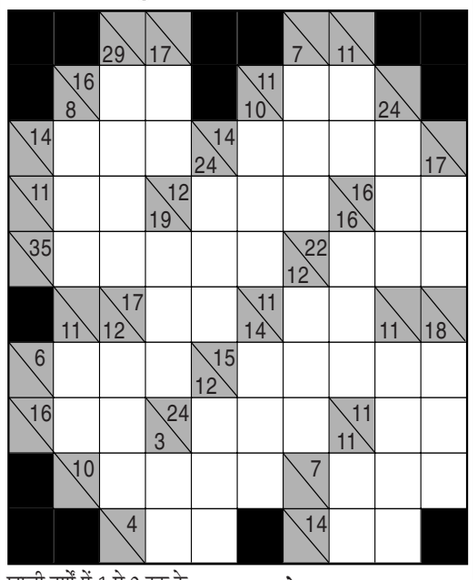

एक युवती ने अपनी सहेली की मृत्यु का दु:ख व्यक्त करते हुए कहा, तीन महीने हो गए मेरी सहेली का देहांत हुए, पर मेरा दिल ही नही लगता। आप उसकी कोई प्रिय वस्तु मुझे दे दीजिए, उसे ही सीने से लगाकर मन बहला लिया करूंगी।

मृतक के पति का जवाब था, जी उसकी प्रिय वस्तु मैं ही हूं।

काकुरो पहेली - 4063

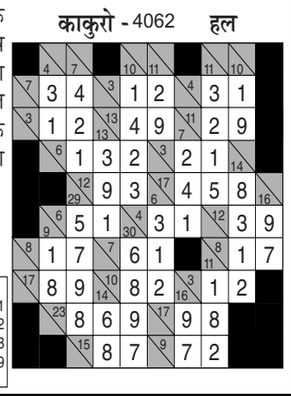

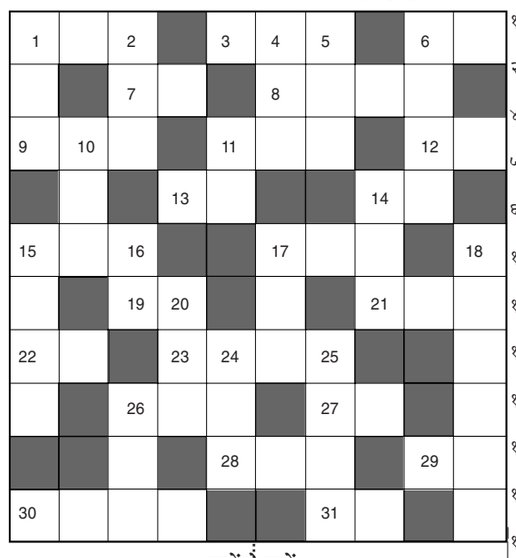

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

काकुरो - 4062 हल

फिल्म वर्ग पहेली- 4063

बायें से दायें:-

१. जॉय मुखर्जी, नंदा की 'मुझे इश्क है तुम्हीं से' गीत वाली फिल्म-३
३. 'मेरे टूटे हुए दिल से कोई तो' गीत वाली राजकपूर, नूतन की फिल्म-३
६. आमिर, फैजल, ट्विंकल की 'तुझे रब ने बनाया है' गीत वाली फिल्म-२
७. अमिताभ, जीनत अमान की फिल्म-२
८. 'तसवीर बनाता हूँ' गीतवाली फिल्म-४
९. 'जब लिया हाथ' गीत वाली राजेंद्र कुमार, गीता बाली की फिल्म-३
११. राजकुमार, प्रिया की 'ये पर्वतों के दायरे ये शाम' गीत वाली फिल्म-३
१२. 'दिल में जिगर में' गीत वाली संजय, जैकी, शिल्पा, रवीना की फिल्म-२
१३. विकास भल्ला, सुमीत, की 'कोई दिल ना किसी' गीत वाली फिल्म-२
१४. 'काहे कोयल शोर मचाये' गीत वाली राजकपूर, नर्गिस की फिल्म-२
१५. विश्वजीत, माला सिन्हा की फिल्म-३
१७. राजकुमार, मीना की 'चलते चलते यूंही कोई मिल' गीत वाली फिल्म-३
१९. जैकी श्रॉफ, रति की फिल्म-२
२१. ऋषिकपूर, अरबाज, जूही की 'ये प्यार यार क्या' गीत वाली फिल्म-३
२२. 'ना सतरा से ऊपर ना' गीत वाली नवीन निश्चल, रेखा की फिल्म-२
२३. 'दुपट्टे का पल्लू' गीतवाली फिल्म-४
२६. फिल्म 'दोस्ताना' में अमिताभ की नायिका ?-३
२७. अभिषेक, अंतरा माली की 'इश्क दा तड़का' गीत वाली फिल्म-२
२८. 'मेरे दिल में रहो या जिगर' गीत वाली अष्मित, मीरा की फिल्म-३
२९. गुरूदत्त, वहीदा रहमान की 'जाने क्या तूने कही' गीत वाली फिल्म-२
३०. 'देर है अंधेर नही' गीत वाली शत्रुघ्न, राजकपूर, योगिता की फिल्म-२,२
३१. फिल्म 'सलाखें' में नायक ?-२

ऊपर से नीचे:-

१.'मन क्यों बहका रे' गीत वाली शशि शेखर सुमन, रेखा, नीना की फिल्म-३
२. मिथुन, जुगल, सोनाली की 'तेरी चाहत में दिल' गीत वाली फिल्म-१,२
४. 'सीली हवा छू गई सीला' गीत वाली नसीर, शबाना आजमी की फिल्म-३
५. अमिताभ, अमजद खान, नीतू की 'छूकर मेरे मन' गीत वाली फिल्म-३
६. 'बोल बेबी बोल रॉक' गीत वाली अनिल कपूर, मीनाक्षी की फिल्म-२,२
१०. धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की 'राजा ना जा ना जा' गीत वाली फिल्म-३
११. 'मैं इश्क उसका' गीत वाली अर्जुन रामपाल, जायेद, अमीषा की फिल्म-२
१४. धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की 'मैं लैला का मजनूं' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'कोरा कागज था मन' गीत वाली राजेश खन्ना, शर्मिला की फिल्म-४
१६. संजय कपूर, माधूरी की 'फूल मांगू ना बहार माँगूं' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'दिले बेताब को सीने से' गीत वाली राजेंद्रकुमार, वहीदा की फिल्म-३
१८. अमिताभ, अक्षय, जॉन, रिमी की 'फलक देखूं' गीत वाली फिल्म-३,३
२०. फिल्म 'देवी' में नायिका कौन थी-३
२४. 'अंखियां मिलाके जिया' गीत वाली फिल्म-३
२५. नसीर, अष्मित, उर्मिला की फिल्म-४
२६. 'शहर शहर डगर डगर' गीत वाली जैकी, संजय, सोनम की फिल्म-२,१

फिल्म वर्ग पहेली- 4062

सूडोकु -4063

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4062 हल

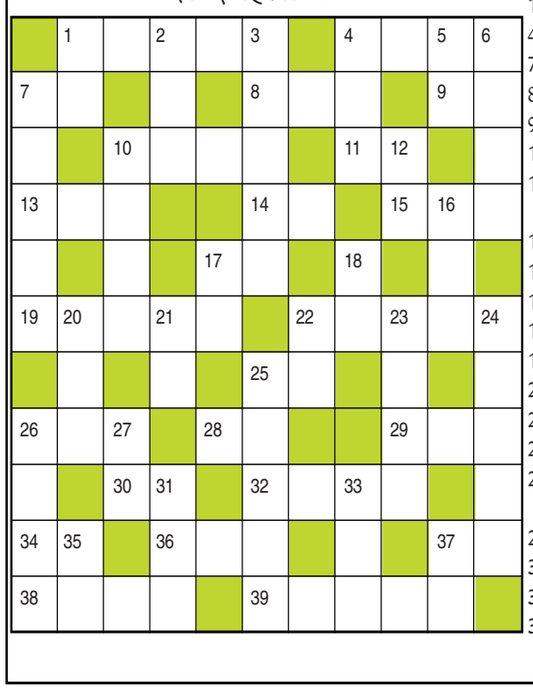

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

शब्द पहेली 4063

बाएँ से दाएँ

1.आरोपित, तथाकथ्य-5
4.प्रलय, वज्रपात-4
7.परिमाण, माप-2
8.प्लेट,तश्तरी-3
9.भीगा हुआ-2
10.वेश्या, गणिका-4
11.ज्वालामुखी से निकला द्रव पर्दाथ-2
13.अपवित्र (उर्दू-3)
14.दान करने वाला-2
15.आंचल-3
17.पंख-2
19.चाहे जो भी हो -5
22.अनूठापन,विचित्रता-5
25.उम्मीद,आस-2
26.अनाशवान,अक्षय-3
28.सुनील शेट्टी की पहली फिल्म-2
29.बंदर, मर्कट-3
30.सम्मान, आदर-2
32.करामात,करिश्मा-4
34.नवीन,नव-2
36.नसीरुद्दीन और अर्चना पूरणसिंह की फिल्म-3
37.शारीरिक ऊंचाई-2
38.भाग्य,लक-4
39.रावण,दशानन-5

ऊपर से नीचे

1.तपस्या-2
2.कॉफी-3
3.तरफदारी करनेवाला-5
4.जन जाति, झुंड-3
5.वोट-2
6.बढ़ई,खाती-4
7.जो मुनासिब न हो-5
10.भाग्य (उर्दू-4)
12.प्रतिज्ञा,वचन-2
16.राजा,राजन-3
17.क्षण-2
18.संपूर्ण,देवी का एक नाम-2
20.रनिवास (उर्दू-3)
21.नुकसान,घाटा-2
22.रजनी, रात्रि-2
23.अनुपम,बेजोड़-4
24.जिसे घर में ही कैद किया गया हो-5
25.आतंक फैलानेवाला-5
26.धरोहर,थाती-4
27.लक्ष्मी-2
31.निगाह,दृष्टि-3
33.बैचेनी,परेशानी,संघर्ष-3
35.लद्दाख में पाया जानेवाला बैल जैसा एक जानवर-2
37.टैक्स, हाथ-2

शब्द पहेली '4062 का हल

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने किया स्ट्रांग रूम व मतगणना कक्ष का निरीक्षण

एजेंसी

राजनांदगांव। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले ने लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत 4 जून को होने वाली मतगणना के लिए छत्तीसगढ़ स्टेट वेयर हाउस कार्पोरेशन कृषि उपज मंडी बसंतपुर राजनांदगांव के स्ट्रांग रूम एवं मतगणना कक्ष का निरीक्षण किया। इस दौरान अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी नीलेश कुमार महादेव क्षीरसागर, कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संजय अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग उपस्थित थे। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने विधानसभावार मतगणना कक्ष, राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि व एजेंट की बैठक व्यवस्था, प्रवेश पास, सीसीटीवी कैमरा मॉनिटरिंग, सुरक्षा व्यवस्था, उद्घोषक कक्ष एवं मीडिया सेंटर का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि सूचना एवं टेक्नोलाजी का प्रयोग करते हुए राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत आने वाले अन्य जिलों के विधानसभा क्षेत्र की जानकारी गूगल लिंक के माध्यम से डेटा अपडेट होगा।उन्होंने राजनांदगांव संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के समस्त मतदान केन्द्रों के मतदान का परिणाम समेकित करने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने जिले में मतगणना के लिए किए गए पुख्ता इंतजाम की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मतगणना हाल में मोबाईल फोन, आईपेड, लैपटॉप, स्मार्ट वॉच, कैमरा, अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रतिबंधित रहेगा। लेकिन मीडियाकर्मी मीडिया सेंटर तक मोबाईल ले जा सकते हैं। उन्होंने पासधारी अभ्यर्थी, निर्वाचन अभिकर्ताओं एवं मतगणना अभिकर्ताओं के लिए आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि मतगणना कक्ष में कम्प्यूटर, प्रिंटर, इंटरनेट सहित आवश्यक अधोसंरचना उपलब्ध होनी चाहिए। उन्होंने पोस्टल बैलेट एवं ईटीबीपीएस के मतों की गणना के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने आने जाने के लिए प्रवेश मार्ग का भी अवलोकन किया।

एक जुलाई से लागू होंगी नई धाराएं, हत्या के प्रयास, बलात्कार की धाराएं भी बदलीं

रायसेन। कहीं किसी की हत्या हो तो अपराधी पर धारा 302 लगाई जाती है। जानलेवा हमला होने पर 307, धोखाधड़ी करने पर धारा 420 तो बलात्कार के आरोपी पर धारा 376 लगाई जाती है। इन जैसी कई धाराएं लोगों को जुबानी याद हैं। लेकिन अब इन्हे भूलने और इनकी जगह लागू होने जा रही नई धाराओं को याद करने की जरूरत है। कारण यह है कि एक जुलाई 2024 से यह बड़ा बदलाव होने वाला है। 1860 में अंग्रेजों के जमाने के कानून और धाराओं में आमूलचूल परिवर्तन किया गया है। इस बदलाव को पुलिस ने समझ लिया है।अब आमजन को भी समझने की जरूरत है। कोतवाली थाना के पुलिस कंट्रोल मीटिंग हाल परिसर में पुलिस अधिकारियों की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। एसडीओपी प्रतिभा शर्मा के नेतृत्व में आयोजित कार्यशाला में रायसेन अनुविभाग के चार थानों सहित महिला एवं अजाक थाने से 80 से अधिक पुलिस अधिकारी, कर्मचारी शामिल हुए।

कार्यशाला में एक जुलाई से देश में लागू होने वाले नए कानून के प्रावधानों से पुलिस महकमें को अवगत कराया गया। देश में ब्रिटिश काल से चले आए रहे आइपीसी और सीआरपीसी की जगह अब नए तीन कानून लेने जा रहे हैं। जो भारतीय न्याय संहिता बीएनएस, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता यानि बीएनएसएस और भारतीय साक्ष्य अधिनियम बीएसए हैं। एसपी विकाश कुमार शाहवाल, एएसपी कमलेश कुमार खरपुसे ने बताया कि नए कानून लागू होने के बाद अब तक चली आ रही धाराएं पूरी तरह से बदल जाएंगी। अभी तक आइपीसी में 511 धाराएं थीं, जो अब 356 बची हैं। 175 धाराएं बदल गई हैं। 8 नई जोड़ी गई हैं। जबकि 22 धाराएं खत्म हो गई हैं। इसी तरह सीआरपीसी में 533 धाराएं बची हैं। 160 धाराएं बदली गई हैं, 9 नई जुड़ी हैं तथा 9 खत्म की गई हैं।नए कानून में हत्या के लिए अब धारा 302 नहीं बल्कि 101,धोखाधड़ी की धारा420 बदल दी गई है।

यादव ने किए महाबोधि मंदिर दर्शन

भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने बिहार स्थित महाबोधि मंदिर के दर्शन किए। कल देर रात इस मंदिर में दर्शन के बाद उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि उन्होंने बोधगया में अहिंसा की शिक्षा देने वाले एवं भारतीय संस्कृति की पताका विश्व में फहराने वाले, भगवान बुद्ध के दर्शन किए हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें यहां आकर बहुत प्रसन्नता हुई। डॉ यादव ने कहा कि आज संपूर्ण भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सांस्कृतिक पुनरुत्थान का महायज्ञ चल रहा है और मध्यप्रदेश सरकार भी इसे आगे बढ़ा रही है।इसके साथ ही उन्होंने बिहार की जनता से अपील की कि वे अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करें।

राजस्थान में अगले 72 घंटे में किन जिलों में बढ़ने वाला है तापमान और कहां नहीं होगा परिवर्तन

जयपुर। मौसम विज्ञान केंद्र, जयपुर के अनुसार राजस्थान में अगले 72 घंटों में जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा संभाग में अधिकतम तापमान में 1-2 डिग्री से. बढ़ोतरी हो सकती है। कोटा भरतपुर, जयपुर अजमेर संभाग में आगामी 48 घंटों में विशेष परिवर्तन नहीं होगा, लेकिन इसके बाद 1-2 डिग्री बढ़ोतरी होने की संभावना है। आपको बता दें कि राजस्थान में ज्यादातर जिलों में तापमान 42 डिग्री से. से अधिक रिकॉर्ड किया गया है। बाड़मेर में सबसे ज्यादा 48 डिग्री रिकॉर्ड किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार राज्य में चल रहे तीव्र हीटवेव तथा ऊष्णरात्रि का दौर आगामी 4-5 दिन जारी रहने की प्रबल संभावना है।

कर्नाटक सीएम ने पीएम मोदी को लिखा पत्र, प्रज्वल रेवन्ना का डिप्लोमैटिक पासपोर्ट रद्द करने की मांग

एजेंसी

बेंगलुरु । कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दारमैया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर जद (एस) सांसद व सेक्स स्कैंडल मामले में आरोपी प्रज्वल रेवन्ना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द कर उसकी भारत वापसी सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई तेज करने की मांग की है। इससे पहले मामले की जांच कर रही एसआईटी ने भी विदेश मंत्रालय से प्रज्वल का पासपोर्ट रद्द करने की मांग की थी।

वहीं पीएम मोदी को लिखे अपने पत्र में सिद्दारमैया ने कहा, यह निंदनीय है कि 27 अप्रैल 2024 को अपने शर्मनाक कृत्य की वजह से चर्चा में आए प्रज्वल रेवन्ना अपने राजनयिक पासपोर्ट के सहारे जर्मनी भाग जाता है। ऐसे में उसका पासपोर्ट रद्द किया जाना चाहिए। सूत्रों से मिली

जानकारी के मुताबिक, सीएम सिद्धारमैया के पत्र का जवाब विदेश मंत्रालय ने दिया है। मंत्रालय ने कहा, कार्रवाई जारी है। जल्द ही प्रज्वल रेवन्ना की स्वदेश वापसी होगी।

इससे पहले, कर्नाटक के गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने भी केंद्र सरकार से प्रज्वल रेवन्ना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द करने की मांग की थी, लेकिन केंद्र ने कोई जवाब नहीं दिया था, जिस पर परमेश्वर ने कहा था, केंद्र की जिम्मेदारी बनती है कि वो इस मामले को संज्ञान में लेकर कार्रवाई तेज करे। हालांकि, यह पहली दफा नहीं है कि जब सीएम सिद्दारमैया ने पीएम मोदी को खत लिखा हो, बल्कि इससे पहले वो गत 1 मई को भी इस मामले में प्रधानमंत्री को खत लिख चुके हैं। इसमें उन्होंने प्रज्वल रेवन्ना का डिप्लोमेटिक पासपोर्ट रद्द करने के साथ ही उसे भारत वापस लाने की दिशा में कार्रवाई तेज करने की भी मांग की थी। बता दें कि सेक्स स्कैंडल सामने आने के बाद हासन से जेडी (एस) सांसद प्रज्वल रेवन्ना अपने डिप्लोमेटिक पासपोर्ट पर 27 अप्रैल को देश छोड़कर भाग गया था। इस मामले में एसआईटी उसके खिलाफ जांच कर रही है। इसके अलावा, इंटरपोल ने उसके खिलाफ ब्लू कॉर्नर नोटिस भी जारी किया है। 33 साल के प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ महिलाओं के साथ यौन शोषण के मामले में कई केस दर्ज हैं।

बता दें कि हासन लोकसभा सीट से प्रज्वल रेवन्ना चुनाव लड़ रहा है, लेकिन 26 अप्रैल को यहां मतदान होने के बाद वो 27 अप्रैल को विदेश फरार हो गया।

ओडिशा के सीईओ ने लोगों से तीसरे चरण में भारी संख्या में मतदान करने का आग्रह किया

एजेंसी

भुवनेश्वर। ओडिशा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने लोगों से 25 मई को होने वाले तीसरे चरण के चुनाव में भारी संख्या में मतदान करने का आग्रह किया है। चुनाव प्रचार का तीसरा चरण आज समाप्त हो जाएगा। तीसरे चरण के चुनाव में छह लोकसभा सीटों और 42 विधानसभा सीटों पर मतदान होगा. लोकसभा सीटों पर 64 और विधानसभा सीटों पर 383 उम्मीदवार हैं। लोकसभा सीटों के लिए चुनाव लड़ रहे 64 उम्मीदवारों में से 55 पुरुष और नौ महिलाएं हैं। इसी तरह, 383 विधायक उम्मीदवारों में से 339 पुरुष और 44 महिलाएं हैं। राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी निकुंज बिहारी ढल ने यह जानकारी दी. कुल 94 लाख 48 हजार मतदाता उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला करेंगे। इनमें 21 फीसदी युवा मतदाता हैं। पुरुष मतदाताओं की संख्या 48.30 लाख और महिला मतदाताओं की संख्या 46.18 लाख है। तीसरे चरण में 25 मई को 10,551 मतदान केंद्रों पर

कड़ी सुरक्षा के बीच वोट डाले जायेंगे. मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) निकुंज बिहारी ढल ने मतदाताओं से आग्रह किया कि वे चाहे गांव या शहर कहीं भी रहें, मतदान अवश्य करें।

तेजस्वी के 200 सभा पर हेलीकॉप्टर में केक काटे जाने को लेकर भाजपा और जदयू ने कसा तंज

एजेंसी

पटना । लोकसभा चुनाव में 200 जनसभाएं करने के बाद राजद नेता तेजस्वी यादव और वीआईपी पार्टी के नेता मुकेश सहनी के केक काटने का वीडियो सामने आने के बाद भाजपा और जदयू ने तंज कसा है। जदयू ने 'मिर्ची लगने' के बयान पर कटाक्ष करते हुए कहा कि बिहार की जनता पहले ही उन्हें मिर्ची लगा चुकी है। जदयू के प्रवक्ता नीरज कुमार ने तेजस्वी यादव को निशाने पर लेते हुए कहा कि बिहार की जनता ने आपके पिता लालू प्रसाद को ऐसी मिर्ची लगाई कि सजायाफ्ता के रूप में चिन्हित हो गए। वर्ष 2019 में जनता आपको मिर्ची लगाने के बाद आपको राजनीति में शीर्षासन करवा रही है। जहां आप हैं, इस चुनाव में भी वहीं आप रहिएगा और बिहार की जनता आपको जीरो पर आउट करेगी। इधर, भाजपा के प्रवक्ता प्रभाकर मिश्र ने कहा कि यही अंतर है इंडी और एनडीए गठबंधन में। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से इन्हें सीखना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी देश भर में इनसे डेढ़ गुना ज्यादा सभाएं कर चुके हैं और रोड शो कर जनता का आशीर्वाद और स्नेह पा चुके हैं। अब ये हेलीकॉप्टर में मछली खाएं या केक काटें।

उन्होंने आगे कहा कि अब ज्यादा दिन नहीं है। 10 दिन के बाद जनता इन्हें ऐसा रिजेक्ट करेगी कि ये जमीन पर चलने को मजबूर हो जाएंगे। इधर, राजद के नेता मृत्युंजय तिवारी ने कहा कि इस तरह के वीडियो से विरोधियों को मिर्ची लगती है। एक बार फिर ऐसा वीडियो बनाकर दिया गया है, जिससे विरोधी परेशान होने लगे। इससे पहले राजद के नेता तेजस्वी यादव और वीआईपी के प्रमुख मुकेश सहनी ने 200 सभा पूरा करने पर केक काटा और एक दूसरे को खिलाकर खुशियां मनाई। वीडियो में वीआईपी के नेता मुकेश सहनी राजद के नेता तेजस्वी यादव को सरप्राइज देने की बात करते नजर आ रहे है। इस पर राजद नेता इस आइडिया को लेकर प्रश्न कर रहे हैं।

वीडियो में तेजस्वी कहते हैं, ÷मेरे दिमाग में नहीं था कि हम लोग 200 सभा कर चुके हैं। मेरे दिमाग में था कि 190 के आसपास हुआ होगा। विधानसभा में तो इससे भी ज्यादा लगभग 250 के आसपास हमने सभाएं की हैं। इस पर सहनी ने कहा कि सातवां फेज बाकी है। ऐसा लगता है कि हम लोग 250 सभा पार कर जाएंगे। सहनी ने कहा कि कई लोगों को हमारी दोस्ती देख मिर्ची भी लग रही है। दोनों नेताओं ने समर्थकों को धन्यवाद दिया।

पश्चिम बंगाल में भिड़े भाजपा-तृणमूल समर्थक, भाजपा की महिला कार्यकर्ता की मौत

एजेंसी

नंदीग्राम । पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव के छठे चरण के मतदान से पहले नंदीग्राम में बुधवार की रात हिंसा भड़क उठी, जिससे राज्य की सियासत गरमा गई। घटना पूर्वी मेदिनीपुर जिले के नंदीग्राम विधानसभा के ब्लॉक नंबर एक के सोनचूरा गांव के मनसा बाजार की है। बताया जा रहा है कि तृणमूल कांग्रेस के समर्थकों ने कई भाजपा कार्यकर्ताओं के घरों में घुसकर धारदार हथियारों से हमला किया। इस हमले में भाजपा की महिला कार्यकर्ता की मौत हो गई और आठ अन्य भाजपा कार्यकर्ता घायल हो गए। मृतक का नाम रथीबाला आड़ी बताया जा रहा है। घायलों में से एक को कोलकाता रेफर कर दिया गया है।

घटना के बाद से इलाके में तनाव का माहौल है। इस हमले से गुस्साए भाजपा कार्यकर्ता जमकर विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने सड़कों पर जाम लगा दिया और

तृणमूल के खिलाफ नारे लगाए। बता दें कि 20 मई को लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण की वोटिंग के दौरान भी पश्चिम बंगाल में कई जगह झड़प और हिंसा के मामले सामने आए थे। बैरकपुर, बोनगांव, आरामबाग हावड़ा आदि क्षेत्रों से छिटपुट घटनाएं होने की खबरें थी, जिसमें वोटरों को धमकाना, वोटिंग रुकवाना, विरोधी पार्टियों के कार्यकर्ताओं को पीटना आदि शामिल था। राज्य में 25 मई को तामलुक, कांथी, घाटल, झाड़ग्राम, मेदिनीपुर, पुरुलिया, बंकुरा और बिशनुपुर सहित आठ सीटों पर छठे चरण का मतदान होना है। सभी सीटों पर मतदान सुबह सात से शाम छह बजे तक होगा। यहां प्रत्याशियों की कुल संख्या 79 है। मतदान से पहले हिंसा की इस घटना से सियासी पारा गरमा गया है।

जयंत सिन्हा ने शो-कॉज नोटिस पर जताई हैरानी, कहा- पोस्टल बैलेट से दिया वोट, प्रचार के लिए पार्टी ने पूछा ही नहीं

एजेंसी

रांची । मोदी 1.0 सरकार में मंत्री रहे हजारीबाग के सांसद जयंत सिन्हा ने पार्टी की ओर से जारी शो-कॉज नोटिस पर अपनी स्थिति स्पष्ट की है। पार्टी ने 20 मई की शाम उन्हें नोटिस जारी किया था, जिसमें मताधिकार का इस्तेमाल न करने और चुनाव प्रचार में रुचि न लेने पर उनसे जवाब देने को कहा गया था।

जयंत सिन्हा ने कहा है कि उन्होंने पोस्टल बैलेट के जरिए मतदान किया क्योंकि वे निजी कारणों से विदेश में थे। उन पर वोट न देने का आरोप लगाना गलत है। सिन्हा ने शो-कॉज नोटिस का पत्र मीडिया में जारी करने पर हैरानी जताई। उन्होंने कहा कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयप्रकाश नड्डा के साथ वार्तालाप के बाद 2 मार्च को ही इसकी सार्वजनिक घोषणा कर दी थी कि लोकसभा चुनाव में उनकी सहभागिता नहीं होगी, क्योंकि वे भारत और विश्व भर के जलवायु परिवर्तन से जुड़े विषयों पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। जयंत सिन्हा ने शो कॉज जारी करने वाले पार्टी के प्रदेश महासचिव आदित्य साहू को भेजे गए जवाब में कहा है कि यदि

पार्टी चाहती थी कि मैं चुनावी गतिविधियों में हिस्सा लूं तो आप निश्चित तौर पर मुझसे संपर्क कर सकते थे, लेकिन, राज्य से एक भी वरिष्ठ पार्टी पदाधिकारी या सांसद, विधायक इसके लिए मेरे पास नहीं पहुंचे, न ही किसी भी पार्टी के कार्यक्रम या रैली में शामिल होने के लिए मुझे आमंत्रित किया। सिन्हा ने कहा है कि हजारीबाग से मनीष जायसवाल को प्रत्याशी बनाए जाने के बाद उन्होंने 8 मार्च को उन्हें बधाई दी थी, जो प्रत्याशी के प्रति उनके स्पष्ट समर्थन का सूचक था। मनीष जायसवाल के नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद वे उनके घर गए थे और उन्हें शुभकामनाएं दी थीं।जयंत सिन्हा ने पार्टी के प्रदेश महासचिव से कहा है कि वे इन मुद्दों पर किसी भी समय व्यक्तिगत रूप से उनसे बात कर संदेह दूर कर सकते थे। चुनाव समाप्त होने के बाद इस तरह का पत्र भेजना समझ से परे है।

खडगे प्रियंका ने बुद्ध पूर्णिमा पर दी देशवासियों को शुभकामनाएं

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे तथा पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए सबके सुख शांति की कामना की है।

श्री खडगे ने कहा 'भगवान बुद्ध का जीवन और शिक्षाएं सार्वभौमिक महत्व रखती हैं। सत्य, करुणा, अहिंसा और समानता के उनके दर्शन ने हमारी सभ्यता के पाठ्यक्रम को गहराई से प्रभावित किया है और शाश्वत है। हम बुद्ध पूर्णिमा पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं। सद्भाव, भाईचारा और सदाचारपूर्ण जीवन हो।' श्रीमती वाड्रा ने कहा 'नमो बुद्धाय, आप सभी को बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं।भगवान बुद्ध ने अहिंसा, करुणा और प्रेम के माध्यम से विश्व में सुख, शांति और समरसता की शिक्षा

देकर समाज को नई दिशा दी। भगवान बुद्ध की सीख पूरे विश्व को हमेशा शांति और सद्भाव के लिए प्रेरित करती रहेगी।

लश्कर से जुड़े एक व्यक्ति के खिलाफ पीएसए के तहत मामला दर्ज

एजेंसी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर मे बारामूला जिले के सोपोर में आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के लिए काम करने वाले एक व्यक्ति के खिलाफ पुलिस ने जन सुरक्षा कानून (पीएसए) के तहत गुरुवार को मामला दर्ज किया।

लश्कर से जुड़े इस व्यक्ति की पहचान नौपोरा कलां सोपोर निवासी एहसान-उल-हक के रूप में हुई है। सक्षम अधिकारी से प्राप्त आदेशों के बाद एहसान के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। उसे हिरासत में लेने के बाद जम्मू में केंद्रीय कोट भलवाल जेल में रखा गया है। इस बीच, सोपोर में तीन ड्रग तस्करों के खिलाफ नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस (पीआईटी-एनडीपीएस) अधिनियम में अवैध तस्करी की रोकथाम के तहत मामला ज किया गया है। उनकी पहचान सोपोर के बरकत अहमद डार और मुसैब बशीर लोन और रफियाबाद के उमर बशीर जरगर के रूप में की गई है। उन्हें भी केंद्रीय कोट भलवाल जेल में रखा गया है।

सोलापुर डैम में नाव पलटने की घटना में पांच शव बरामद, एक किशोर अब भी लापता

एजेंसी

सोलापुर (महाराष्ट्र) । राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एडीआरएफ) ने यहां उजनी डैम में नौका डूबने की घटना में लापता छह में से पांच लोगों के शव निकाल लिए हैं। एक अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि एक ही परिवार से चार सदस्यों और एक नाविक का शव बरामद किया गया है।

एनडीआरएफ और पुलिस बचाव दल ने जाधव परिवार और नाविक अनुराग अवघड़े के शव डैम से बाहर निकाले हैं। इंदापुर थाने के इंस्पेक्टर सूर्यकांत कोकणे ने आईएएनएस को बताया, बुधवार को दिन भर चले ऑपरेशन के बाद हमने पांच पीड़ितों के शव बरामद किये हैं। एक किशोर गौरव डोंगरे अब भी लापता है। हमने उसकी तलाश के लिए नये सिरे से ऑपरेशन शुरू किया है।उन्होंने बताया हादसे की

शिकार नाव भी निकाल लिया गया है। इसके अलावा एक मोटरसाइकिल भी डैम से मिली है जो हादसे में एकमात्र जीवित बचे व्यक्ति राहुल डोंगरे की बताई जा रही है। वह कल देर रात तैरकर सुरक्षित स्थान पर चला गया था।

यह दुर्घटना मंगलवार देर रात हुई थी। डैम के बैकवाटर में सोलापुर के कुगांव और पुणे के कलाशी के बीच नियमित रूप से यात्रियों को ले जाने वाला मोटर बोट अचानक आये तूफान के कारण पलट गई थी। सोलापुर पुलिस ने बताया कि नाव में सात लोग सवार थे। वे कुगांव से कलाशी जा रहे थे। बीच रास्ते में अचानक मौसम बदल गया। तूफान के कारण डैम के पानी में लहरें उठने लगीं और नाव पलट गई।

जिन लोगों के शव बरामद हुए हैं उनकी पहचान गोकुल जाधव (30), उनकी पत्नी कोमल (25) और दो बच्चे - तीन साल की माही तथा एक साल के शुभम के रूप में हुई है। नाविक अनुराग अवघड़े की उम्र 35 साल थी।

दुर्घटना में सुरक्षित बचे डोंगरे ने कलासी गांव पहुंचकर लोगों को हादसे के बारे में बताया। इसके बाद पुणे पुलिस और जिला प्रशासन को जानकारी दी गई। बुधवार को एनडीआरएफ ने पेशेवर तैराकों के साथ तलाशी अभियान शुरू किया था।

करोड़ का निवेश करने वाली 51 कंपनियों के लिए सरकार ने निवेश प्रोत्साहन को दी मंजूरी

एजेंसी

जयपुर। भजनलाल सरकार ने राजस्थान में निवेश को बढ़ावा देने के लिए एक कदम और बढ़ाया है। राज्य सरकार ने उन कंपनियों के लिए निवेश सब्सिडी (प्रोत्साहन राशि) को मंजूरी दे दी है, जिन्होंने संचयी रूप से 3,500 करोड़ रुपए से ज्यादा का निवेश किया है। जिन सेक्टर्स के लिए निवेश प्रोत्सान मंजूर किया गया है उनमें टेक्सटाइल, ऑटो, खनन, कृषि-संस्करण की इकाइयां, स्टील और एफएमसीजी जैसे क्षेत्रों की कंपनियां शामिल हैं।

राज्य में यह पहला मौका है, जब सरकार ने हरित प्रोत्साहन को मंजूरी दी है। राजस्थान औद्योगिक नीति 2002 में इसके लिए प्रावधान किया गया था। उद्योग विभाग के प्रमुख शासन सचिव अजिताभ शर्मा ने बताया कि इन ग्रीन इनिशिएटिव के जरिए उभरते क्षेत्र जैसे ग्रीन हाईड्रोजन, वैकल्पिक ऊर्जा और

चिकित्सा उपकरणों आदि में राजस्थान लीडरशिप हासिल करना चाहता है। इसका मकसद यह है कि हम जलवायु परिवर्तन से लड़ाई में अग्रणी बन सकें।

अजिताभ शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार का प्रयास है कि राजस्थान औद्योगिक प्रोत्साहन योजना के तहत निवेश प्रोत्साहन के जो भी वायदे किए हुए हैं, उन्हें समयबद्ध तरीके से मंजूरी दी जाए। ताकि निवेशकों को समय पर इसका लाभ मिल सके। उन्होंने बताया कि पूंजी निवेश करने वाले और इच्छुक उद्योगपतियों को निवेश प्रोत्साहन राशि का दावा करने में आ रही जटिलताओं का समाधान करते हुए उद्योग विभाग इस नीति को फिर से लागू कर रहा है।

एक्सपर्ट्स का मानना है कि सरकार का यह कदम राजस्थान में निवेश के लिए और भी कंपनियों प्रोत्साहित करेगा। जब सरकारें इस तरह के फैसले लेती है तो कंपनियां भी उस प्रदेश की ओर आकर्षित होती है। इस तरह के फैसले निवेश प्रोत्साहन में एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जो विदेशी व्यवसायों को लाभप्रद रूप से संचालित करने में सक्षम बनाता है और जोखिम कम करता है। निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकार का यह कदम सराहनीय है।

तीन पैरों वाले शख्स ने फतह किया माउंट एवरेस्ट बेस कैंप

एजेंसी

पणजी। शारीरिक विकलांगता, ठंड के मौसम और खराब स्वास्थ्य के बावजूद, गोवा के 30 वर्षीय तीन पैरों से विकलांग टिंकेश कौशिक ने माउंट एवरेस्ट बेस कैंप की यात्रा पर निकलते समय अपना धैर्य और मानसिक शक्ति कभी नहीं खोई।जबकि ट्रेक की तैयारी का पहला दिन कठिन था, कौशिक ने खुद से वादा किया कि वह इसे करेंगे और फिर कोई भी चीज़ उन्हें रोक नहीं सकती थी या उनके दृढ़ संकल्प को डिगा नहीं सकती थी।सभी बाधाओं को पार करते हुए, वह एक सप्ताह की लंबी यात्रा के बाद 11 मई को समुद्र तल से 17,598 फीट की ऊंचाई पर स्थित एवरेस्ट बेस कैंप पहुंचे और वहां राष्ट्रीय तिरंगा फहराया, उन्हें इस बात पर खुशी और गर्व था कि उन्होंने अन्य विकलांग लोगों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है।फिटनेस कोच के रूप में काम करने वाले कौशिक ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'मुझे ट्रैकिंग चुनौतीपूर्ण लगी, लेकिन मैंने खुद से कहा कि मुझे यह करना है और मैंने अपनी मानसिक ताकत के कारण ऐसा किया।'

डिसेबिलिटी राइट्स एसोसिएशन ऑफ गोवा (छन्नत) के प्रमुख एवेलिनो डिसूजा ने दावा किया कि इसके साथ, कौशिक माउंट एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंचने वाले दुनिया के पहले तीन विकलांग व्यक्ति बन गए हैं।जब कौशिक 9 वर्ष के थे, तब हरियाणा में बिजली का झटका लगने से हुई दुर्घटना में उन्होंने अपने घुटनों के नीचे के दोनों अंग और एक हाथ खो दिया था। कृत्रिम अंगों का उपयोग करने वाला यह विकलांग व्यक्ति कुछ साल पहले गोवा चला गया और एक फिटनेस कोच के रूप में काम कर रहा है।विकलांग व्यक्ति ने कहा कि उसने शुरू में सोचा था कि यात्रा आसान होगी क्योंकि वह एक फिटनेस कोच है लेकिन जब उसने इसके लिए तैयारी शुरू की तो चुनौतियों का एहसास हुआ।उन्होंने कहा, ÷मुझे पर्वतारोहण का कोई पूर्व अनुभव नहीं था। मैंने बेस कैंप के लिए जाने से पहले इसकी तैयारी की थी। मैं पेशे से एक फिटनेस कोच हूं और मुझे लगा कि यह मेरे लिए एक आसान यात्रा होगी। कौशिक ने कहा कि जैसे ही उन्होंने जमीन पर काम शुरू किया, पहले दिन उनके विच्छेदन और कृत्रिम अंगों के स्तर के कारण यह बहुत दर्दनाक था। उन्होंने कहा, मुझे ट्रैकिंग चुनौतीपूर्ण लगी। दूसरे दिन मैंने कहा कि मुझे इसे करना ही है। यह करने लायक ट्रेक है।

राजन ने स्ट्रांग रूम का किया निरीक्षण

एजेंसी

भोपाल। मध्यप्रदेश में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने आज सीहोर के शासकीय महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज पहुँचकर लोकसभा निर्वाचन के अंतर्गत आगामी 4 जून को 3 संसदीय क्षेत्रों के अन्तर्गत आने वाली जिले की 4 विधानसभाओं की मतगणना के लिए की जा रही तैयारियों का जायजा लिया। श्री राजन को कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रवीण सिंह ने मतगणना के लिए की जा रही व्यवस्थाओं और तैयारियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विधानसभावार बनाए गए मतगणना कक्षों में जाकर तैयारियों का जायजा लिया। साथ ही डाक मतपत्रों की गणना के लिए की जा रही तैयारियों, स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्था को भी देखा। उन्होंने मतगणना टेबल, मतगणना कार्य में संलग्न अमले की संख्या, सुरक्षा व्यवस्था, डाक मतपत्रों की संख्या आदि के बारे में जानकारी ली। साथ ही मतगणना स्थल परिसर में निर्वाचन अभ्यर्थियों के प्रतिनिधियों के लिए स्ट्रॉग रूम का सीसीटीवी लाईव डिस्प्ले तथा कक्ष से ही स्ट्रांग रूम की मॉनीटरिंग संबंधी व्यवस्था को देखा। उन्होंने पुख्ता और बेहतर व्यवस्थाओं के लिए आवश्यक निर्देश भी दिए। श्री राजन ने निर्देश दिए कि लोकसभा चुनाव की मतगणना 4 जून को सुबह 8 बजे से मतगणना प्रारंभ होगी। उन्होंने मतगणना के दिन विद्युत की सतत् आपूर्ति हो और किसी भी वजह से मतगणना कार्य प्रभावित न हो, यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

प्राथमिकता के आधार पर तैयार करें अपनी कार्य-सूची

आज आप जितना कर सकती हैं, उससे अधिक करने की कोशिश न करें। अपनी गतिविधियों की छंटनी शुरू कर दीजिए और फिर अपनी कार्य-सूची पर पुनर्विचार कीजिए। जो चीजें बेकार एवं महत्वहीन हैं, उन्हें बाहर कर दीजिए। आप जो भी कर सकती हैं या करना चाहती हैं, उन तमाम चीजों को एक ही दिन में करने का प्रयास न करें। सबसे जरूरी चीज पर नजर रखें एवं प्राथमिकता के आधार पर उन्हें करें। व्यक्तिगत रिश्ते बनाएं, ताकि काम एवं जीवन में सहजता आए।

एक समय में एक ही काम

अपना समय केवल उन्हीं चीजों पर खर्च करें, जो आपके लिए महत्वपूर्ण हो। दो या उससे अधिक काम एक साथ करने से तौबा करें, तब भी जब चीजें आसान लगती हों या लगता हो कि आप कर लेंगी। जब आप एक से अधिक काम एक ही बार में करती हैं तो आपका ध्यान बंट जाता है। आप एकाग्रता खो देती हैं, जो कि बेहतर प्रदर्शन के लिए जरूरी है।

कुछ उदाहरण

यदि आप एक साथ खाती एवं पढ़ती हैं तो आपका कुछ ध्यान पढ़ने पर और कुछ खाने पर होता है। आप कोई भी चीज ढंग से नहीं कर पाती हैं। जब आप टहलती हैं तो टहलें, जब आप बैठती हैं तो बैठें। भटकें नहीं। जब ड्राइव करें तो पूरा ध्यान रोप पर रखें। काफी ऊंची आवाज में संगीत सुनना या चालक एवं यात्री के बीच की बातचीत कई सड़क हादसों का कारण होती है। यदि आप यात्री हैं तो चालक को गाड़ी चलानें दें न कि उससे बातचीत करें।

पांच गुण होना महत्वपूर्ण

किसी भी स्त्री या पुरुष में पांच गुण होना चाहिए। वे हैं-शिष्टाचार, उदारता, लगन, संकल्प एवं दया भाव। शिष्टाचार से आप बेइज्जती को अनदेखा कर सकती हैं, उदारता से सबको जीत सकती हैं। लगन से लोग आप पर विश्वास करेंगे और संकल्प एवं दया भाव से सफलता प्राप्त कर सकती हैं। अच्छी संगत, अच्छी किताबें एवं प्रार्थना- ये तीन चीजें किसी मनुष्य को तीनों लोकों का सम्राट बनाती हैं।

सफलता नैसर्गिक नहीं होती

सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया नैसर्गिक नहीं है। सफलता हमें विरासत में नहीं मिलती। इसे हम अपने प्रयासों से पैदा करते हैं। यह हमारे कठिन परिश्रम एवं क्रियाओं की पुनरावृत्ति का फल होता है। संघर्ष जीवन है और जीवन की क्रियाएं ही इसे कर सकती हैं। हमें केवल सपने देखने वाला नहीं बल्कि आगे बढ़कर उसे करने वाला बनना चाहिए।

सेमिनारों में कुछ नहीं

हम समय-समय पर प्रेरित करने वाले लोगों से मिलते रहते हैं या सेमिनारों में ऐसे भाषण सुनते रहते हैं। इस प्रकार के पारस्परिक क्रिया से हमें अपने तरीकों को सुधारने एवं काम करने की शैली की और बेहतर करने के उपाय मिलते हैं। हम उनको अपनाते हैं और महसूस करते हैं कि अपने आप को और बेहतर करें एवं जीवन में बदलाव लाने का रहस्य पा लिया है। यह पूरी गहमागहमी दो-चार दिनों में खत्म हो जाती है और हम फिर वहीं होते हैं जहां हम थे।

ऊर्जा, समय व पैसे बचायें

याद रखिये सेमिनार एवं कार्यशाला में भाग लेना समय, ऊर्जा और पैसे की बर्बादी है, यदि हम उन चीजों को नहीं अपनाते, जो वे हम तक पहुचाना चाहते हैं। यदि आपको कोई बेहतरीन आइडिया मिलता है तो आप अपने आप से पूछिए कि आप इससे क्या करने जा रहे हैं और आप इसे कैसे करेंगे। सभी बातों को लिखिए और फिर निर्णय लीजिए कि आप क्या करने जा रहे हैं। किन उपायों को लागू करना है, उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए और सब कुछ करने के लिए समय सीमा तय करनी चाहिए।

इन मेकअप प्रोडक्ट्स से रहें दूर

अच्छा दिखने के लिए मेकअप कर के घर से बाहर निकलना अब जरूरत सा बन गया है, लेकिन मेकअप के सभी उत्पाद आपके लिए अच्छे हो ये कतई जरूरी नही है। कुछ ऐसे उत्पाद भी है जो आपको कुछ समय तक सुंदर तो दिखा देते है लेकिन आपकी त्वचा और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते है। आइए, जानते है ऐसी ही 5 मेकअप सामग्री के बारे में जिनका इस्तेमाल आपको कम से कम ही करना चाहिए

टेलकम पाउडर

टेलकम पाउडर सामान्य तौर पर आपमें से कई लोगों के जीवन का एक अहम हिस्सा होगा। भले ही आप इसे सुरक्षित मानते हों, लेकिन इसमें मौजूद सिलेकेट्स नामक तत्व आपको एलर्जी, फेफड़ों में इंफेक्शन या फिर कैंसर जैसी गंभीर बीमारी का शिकार बना सकता है।

ब्लीच क्रीम

अधिकांश ब्लीच क्रीम में पाया जाने वाला हाइड्रोक्विनोन त्वचा के निकलने, लालिमा या लाल रेशेस अथवा त्वचा के रूखेपन के लिए जिम्मेदार होता है। इसकी जगह त्वचा प्रभावशाली घरेलू उत्पादों का प्रयोग करना बेहतर होगा।

लिप ग्लॉस

होंठों पर चमकदार नमी लाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला लिपग्लॉस कुछ ऐसे केमिकल्स से युक्त होता है, जो आपके होंठों की त्वचा को अंदर से रूखा कर सकते हैं साथ ही रोमछिद्रों को ब्लॉक कर सकते हैं।

हेयर कलर

इसमें मौजूद हानिकारक केमिकल्स आपके सिर की त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसके अलावा त्वचा का लाल होना और खुजली जैसी समस्याएं भी हो सकती है जो अन्य गंभीर समस्याओं को जन्म देती हैं।

नेल पॉलिश

भले ही अपको रंगीन, चमकीले नेल पॉलिश का शौक हो, लेकिन इनमें मौजूद एसीटोन आपके नाखूनों को दाग या धब्बों से युक्त बनाने के साथ ही कमजोर बनाने में सहायक होता है। इसके लिए हमेशा नेल पॉलिश का इस्तेमाल करने से बचें।

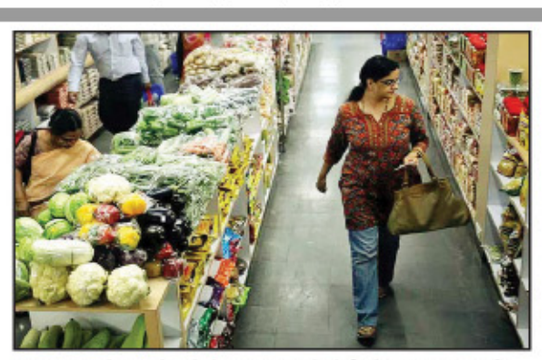

अक्सर महिलाओं की ये समस्या होती है कि घर का खर्च ज्यादा हो रहा है और पैसों से जुड़ी बचत नहीं हो पा रही है। यहां निवेश और बचत की नहीं खर्च की बात हो रही है। घरों में आजकल की व्यस्त लाइफस्टाइल कुछ ऐसी हो गई है कि लोगों को ये समझ ही नहीं आता कि उनका इतना खर्च आखिर कैसे बढ़ गया है। ये सब कुछ पैसे से जुड़ी कुछ गलतियों के कारण होता है।

पैसे के बारे में बात नहीं करना

आम तौर पर यही देखा जाता है कि पति और पत्नी एक दूसरे से इसके बारे में बात नहीं करते। पत्नी घर संभाल रही हो या फिर बाहर काम कर रही हो तो भी इसके बारे में बातें नहीं की जातीं। बच्चे अगर पढ़ने की उम्र में हैं या टीनएज हो गए हैं तो उन्हें भी अक्सर घर पर ये नहीं बताया जाता है कि निवेश और बचत की जरूरत क्या है। हफ्ते में कम से कम एक बार सभी को बैठकर घर और पैसे के खर्च से जुड़ी बातें करनी चाहिए। इससे वो खर्च भी सामने आ जाता है जिसका शायद अंदाजा भी नहीं होता। ये घर का बजट बनाने में भी मददगार साबित हो सकता है।

पहले खर्च फिर जो बचा वो निवेश

हमारी भारतीय संस्कृति में एक आम कहावत है कि, 'जितनी चादर है उतना ही पैर पसारो'। ये बहुत अच्छा कथन है, लेकिन इसे हमें थोड़ा सा बदलना होगा क्योंकि हम हमेशा जितना खर्च है उतना कर लो और उसके बाद जो बचा वो बचत। इससे समस्या ये होती है कि जरूरत से अधिक खर्च भी हो जाता है और बचत कम रह जाती है। इसे थोड़ा सा बदलने की जरूरत है और कमाई के बाद एक निश्चित बचत और उसके बाद जितना बचा उसे खर्च करना चाहिए। ये बजट आसानी से बन सकता है कि महीने में कितनी बचत की जा सकती है।

बचत और निवेश का अंतर न समझना

मान लीजिए आप हर महीने की आय में से कुछ पैसे बचा लेते हैं, लेकिन क्या इन पैसों को बचाने से सिर्फ काम हो जाता है? जी नहीं, बचत और निवेश में काफी अंतर है जिसे समझने की जरूरत है। पैसे ड्रॉअर में पड़े रहें या फिर वो बैंक के सेविंग्स अकाउंट में रखा है तो उससे हमारे भविष्य के लिए कोई फायदा हो रहा है? बिलकुल नहीं। तन्वी जी का कहना है कि उनके पास बहुत से लोग आते हैं और वो यहीं मात खा जाते हैं। उन्हें निवेश इस बारे में सोचकर करना चाहिए कि भविष्य में ये कितना रिटर्न देगा।

बार-बार बिगड़ जाता है घर का बजट तो ना करें पैसों से जुड़ी ये गलतियां

अपनी बचत और निवेश को ऑटोमैटिक मोड पर नहीं डालना

बैंक की आरडी या एफडी जिसका ऑटोमैटिक पैसा कटता है वो ज्यादा सही है। भले ही बचत और निवेश का कोई भी मोड हो पैसा ऑटोमैटिक हर महीने कटना चाहिए। कारण ये है कि अगर बचत हर वक्त नहीं होगी तो हम उस कमाई को खर्च करने के लिए उत्सुक रहेंगे। अकाउंट में या जेब में ज्यादा पैसा होने का मतलब है कि उसे खर्च करने का लालच भी बढ़ जाएगा। अगर सैलरी आते ही एक अच्छे फाइनेंशियल एक्सपर्ट की मदद से पैसे निवेश कर देंगे तो हमारा भविष्य सुरक्षित होगा।

अपने पैसे को अलग-अलग जगह न निवेश करना

पैसा है आपके पास तो क्या हर बार यो एक ही तरह से निवेश किया जाएगा? कई लोग सिर्फ FD बनाते रहते हैं, कुछ को पोस्ट ऑफिस की NSC अच्छी लगती है, लेकिन इसका सीधा सा मतलब ये होता है कि पैसे के साथ कोई एक्सपेरिमेंट नहीं किया जाता। कारण ये है कि अगर एक ही तरह से पैसा निवेश होगा तो खतरे की स्थिति में एक ही साथ उसके खर्च होने या फिर डूब जाने की गुंजाइश भी होती है।

फाइनेंशियल भाषा से डरना और रिस्क न लेना

इंसान का दिमाग जो चीज समझ नहीं पाता वो उससे हमेशा डरता रहता है और ये बहुत आम घटना है कि लोग खुद को फाइनेंशियल भाषा सिखा नहीं पाते। ऐसे में उन्हें जानकारी न के बराबर रहती है। होता ये है कि ऐसी स्थिति में निवेश के समय हम बहुत ज्यादा सोच विचार में लग जाते हैं और कई बार डर के कारण रिस्क नहीं ले पाते। इससे बाद में नुकसान होने की गुंजाइश है।

कर्ज को न समझना

बहुत से लोगों के पास होम लोन होता है, कार का लोन होता है, क्रेडिट कार्ड से खर्च होता है। अर्थव्यवस्था में कर्ज की दरें लगातार बढ़ती और घटती रहती है। ऐसे में हमारे कर्ज पर भी असर पड़ता है। किसी भी तरह के लोन को हमेशा फाइनेंशियल एक्सपर्ट से हर साल रिव्यू करवाना चाहिए। क्या पता ब्याज की दर इससे कम हो सके। इसी तरह से क्रेडिट कार्ड सबसे महंगा तरीका है ऐसे में कई बार वो बहुत महंगा पड़ जाता है। कोशिश करें कि हर वक्त क्रेडिट कार्ड निकालने से बचें।

क्या आपके वार्डरोब में है जींस के ये ट्रेंडी कलेक्शन

जींस एक ऐसी कॉमन ड्रैस है, जो हर लड़की के वार्डरोब में जरूर मौजूद होती है। बाजार में कई स्टाइलिश जींस आ चुकी हैं, जिन्हें आप अपनी पसंद और फिटिंग के मुताबिक खरीद सकती हैं। जींस खरीदने से पहले आपको यह जानना जरूरी है कि आजकल किस पैटर्न की जींस का चलन ज्यादा है। आज हम आपको जींस की इन्हीं वैरायटी के बारे में बता रहे हैं जिनके बारे में जानकर आपको अपनी पसंद की जींस खरीदने में आसानी होगी.

रिप्ड जींस

रिप्ड जींस एक दशक से फैशन ट्रैंड में बनी हुई है। कॉमन यंग गर्ल्स से लेकर बॉलीवुड एक्ट्रैस सभी में इसका क्रेज है। शायद ही कोई लड़की होगी जिसके वार्डरोब में रिप्ड जींस न हो। एक दशक पहले ट्रैंड में आई ये जींस आज भी लड़कियों की पहली पसंद बनी हुई है। इसमें जींस के कई हिस्से में कुछ स्लिट्स या कट्स बने होते हैं। कॉमन लैंग्वेज में इसे फटी जींस भी कहते हैं। अगर आपके पास कोई पुरानी जींस है, जिसे आप नहीं पहनतीं तो उसे ब्लेड से कट करके रिप्ड जींस का लुक दे सकती हैं। रिप्ड जींस को आप लॉन्ग कुर्ती या फिर किसी भी टॉप के साथ वियर कर सकती हैं। ये आपको कूल और स्टाइलिश लुक देगी।

बैगी जींस

बैगी जींस अपने लूज साइज की वजह से काफी कंफर्टेबल होती है। दो से तीन दशक पहले इस पैटर्न की जींस का काफी चलन था। एक बार फिर से इसका ट्रैंड लौट आया है। यही वजह है कि सैलेब्स में भी ये जींस काफी पॉपुलर है। ट्रैवलिंग के दौरान या कहीं आने-जाने के लिए एक्ट्रैस इसे कैरी किए नजर आती रही हैं।

पैच वर्क जींस

इन दिनों पैच वर्क जींस भी काफी पॉपुलर हैं। यंग गर्ल्स से लेकर सैलेब्स इसे पहने नजर आती रहती हैं। ये जींस अलग-अलग रंग के जींस के चौकोर टुकड़ों को एक साथ पैच करके बनाई जाती है, जो देखने में काफी युनीक और कूल लगती हैं।

बेल बॉटम जींस

पुराने जमाने में आपने हीरो-हीरोइन को फिल्मों में नीचे से खुली पैंट या जींस पहने देखा होगा। इस स्टाइल को बेल बॉटम स्टाइल कहते हैं। आजकल बेल बॉटम जींस का फैशन फिर से लौट आया है। ये जींस काफी कंफर्टेबल होती हैं। यंग गर्ल्स से लेकर वर्किंग वुमन बेल बॉटम जींस पहनना पसंद कर रही हैं।

स्किन फिट जींस

इसके नाम से ही क्लियर है कि ये जींस कैसी होगा। ये पूरी तरह स्किन टाइट होती है। ज्यादातर लड़कियां स्किन फिट जींस पहनना पसंद करती हैं, लेकिन अगर कंफर्ट की बात करें तो ये उतनी आरामदायक नहीं होती। तब भी इस जींस का क्रेज लड़कियों में बना हुआ है। इसे आप अपनी मनपसंद कुर्ती या फिर टॉप के साथ कैरी कर सकती हैं।

कलर आईलाइनर लगाने से पहले जरूरी टिप्स मिलेगा स्टाइलिश लुक

चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए लड़कियां मेकअप करना पसंद करती है। वहीं आखों को बड़ा, आकर्षित दिखाने के लिए आईलाइनर लगाती है। बात अगर आईलाइनर की करें तो आमतौर पर लड़कियां इसमें ब्लैक कलर पसंद करती है। मगर आजकल लड़कियों में कलरफुल आईलाइनर का क्रेज भी बढ़ रहा है। इससे लुक और भी स्टाइलिश नजर आता है। मगर इसे लगाने से पहले कुछ बातों का ध्यान देने की जरूरत होती है। कलर आईलाइनर लगाने के लिए फॉलो करें ये टिप्स

मेकअप ना करें

कलर आईलाइनर अक्सर आंखों को हाइलाइट करने के लिए लगाया जाता है। इसलिए इसे लगाने के बाद अपना रेगुलर मेकअप ना करें। नहीं तो इससे आपका मेकअप अधिक लगेगा।

सही कलर चुनें

अगर आप पहली बार कलर आईलाइनर लगाने वाली है तो इसके लिए रंग चुनें। इसके लिए आप पिंक, लैवेंडर, बैंगनी, सुनहरा या अपनी ड्रेस से मैचिंग रंग चुन सकती है।

आंखों पर ध्यान दें

कलर आईलाइनर लगाने के लिए बस अपनी आंखों पर फोकस करें। इसके साथ हैवी व बोल्ड मेकअप करने की गलती ना करें। ऐसा करने से आपकी आंखों पर ध्यान नहीं जाएगा।

डार्क कलर अप्लाई करें

अगर आप पहली बार आईलाइनर लगाने वाली है तो इसके लिए डार्क कलर यूज करें। असल में, इससे आपका लुक एकदम बदल जाएगा। ऐसे में आप पहली बार के लिए ब्राउन या ब्लू कलर चुन सकती है। मस्कारा ब्लैक कलर का लगाएं आप भले ही आईलाइनर कलर्ड चुन रही है मगर इसके साथ मस्कारा ब्लैक ही लगाएं। इससे आपकी आंखों को ग्रेसफुल लुक मिलेगा। इसके साथ ही फेक आईलैशेज लगाने की गलती ना करें।

इंग्लैंड-पाकिस्तान के बीच पहला टी20 मैच चढ़ा बारिश की भेंट

एजेंसी

नई दिल्ली। लगातार बारिश के कारण हेडिंग्ले में इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच पहला टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच एक भी गेंद फेंके बिना रद्द कर दिया गया। लीड्स में भारी और लंबी बारिश के कारण अंपायरों को मैच भारतीय समयानुसार निर्धारित रात 11 बजे शुरू होने से लगभग एक घंटे पहले खेल रद्द करना पड़ा। पाकिस्तान के खिलाफ चार मैचों की श्रृंखला के बाकी मैच 25 मई, 28 मई और 30 मई को क्रमशः एजबेस्टन, कार्डिफ और ओवल में खेले जाएंगे। पाकिस्तान टी20 सीरीज से इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की अंतरराष्ट्रीय टीम में वापसी हो सकती है। चोटों ने इस तेज गेंदबाज के करियर को खराब कर दिया है, कोहनी और पीठ की समस्याओं के कारण यह 29 वर्षीय खिलाड़ी 14 महीने से शीर्ष स्तर के क्रिकेट से दूर रहा है।

पेप गार्डियोला ने प्रीमियर लीग मैनेजर ऑफ़ द सीज़न का पुरस्कार जीता

लंदन। अपने कार्यकाल में मैनचेस्टर सिटी के छठे लीग खिताब के बाद, पेप गार्डियोला ने 2023/23 प्रीमियर लीग मैनेजर ऑफ़ द सीज़न का पुरस्कार जीता है।मैनचेस्टर सिटी ने इंग्लिश फुटबॉल के 135 साल पुराने इतिहास में लगातार चार सीज़न तक प्रीमियर लीग का खिताब जीतने वाली पहली टीम बनकर इतिहास रच दिया।53 वर्षीय गैफ़र ने प्रतिष्ठित प्रशंसा जीतने के लिए आर्सेनल के मिकेल आर्टेटा, एस्टन विला के उनाई एमरी, लिवरपूल के जर्गेन क्लॉप और बोर्नमाउथ के एंडोनी इरोला को पीछे छोड़ दिया।मैं इसे साझा करना चाहता हूं, हां, ओह हां! विशेष रूप से मिकेल के साथ उस अविश्वसनीय काम के लिए जो उसने आखिरी गेम तक किया और हमें हमारी सीमा तक पहुंचाया।' बेशक, जुर्गन के लिए, कई वर्षों तक अविस्मरणीय लड़ाइयों के लिए। और यूनाई एमरी, एस्टन विला को चैंपियंस लीग में लाने के लिए फिर से कुछ अविश्वसनीय बना रही है, 'गार्डियोला ने कहा। स्पैनियार्ड ने कहा, 'और एंडोनी इरोला, बोर्नमाउथ के साथ, प्रीमियर लीग में उनका पहला सीज़न है, उन्होंने सीज़न की कठिन शुरुआत से वापसी करते हुए जो किया है वह कर रहे हैं।' आर्सेनल और लिवरपूल दोनों सिटी के खिलाफ खिताब की दौड़ में आगे चल रहे थे, इससे पहले कि मर्सीसाइड-आधारित टीम अंततः तालिका में नीचे गिर गई। एस्टन विला के खिलाफ हार से पहले आर्सेनल ने अपने नाम पर एक अंक का मामूली लाभ रखा, जिससे वे मैनचेस्टर से दो अंक पीछे रह गए, यह अंतर सीज़न के अंत तक कायम रहा।सिटी के फिल फोडेन ने अपने शानदार अभियान के लिए प्रीमियर लीग प्लेयर ऑफ द सीज़न का पुरस्कार जीता, जिसमें उन्होंने 17 गोल और आठ सहायता की।खिलाड़ियों के 2024 यूरोपीय चैंपियनशिप के लिए प्रशिक्षण शिविर में जाने से पहले मैनचेस्टर सिटी एफए कप फाइनल में अपने भौगोलिक प्रतिद्वंद्वियों मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाफ खेलेगा।

भारतीय पुरुष, महिला 4×400 मीटर टीमों ने एशियाई रिले चैम्पियनशिप में रजत पदक सुरक्षित किए

बैंकॉक। मिश्रित टीम के राष्ट्रीय रिकॉर्ड-सेटिंग के बाद स्वर्ण पदक हासिल करने के बाद, भारतीय पुरुष और महिला 4×400 मीटर टीमों ने बैंकॉक में एशियाई रिले चैंपियनशिप 2024 में दो रजत पदक जीते।बैंकॉक में भारी बारिश के कारण, मुहम्मद अनस याहिया, टी संतोष कुमार, मिजो चाको कुरियन और राजीव अरोकिया की पुरुष रिले टीम श्रीलंकाई टीम से पीछे रही, जिसने घड़ी को 3:04.48 पर रोक दिया, जबकि भारत का समय 3¬05.76 था।वियतनाम (3:07.37) ने कतर को हराकर कांस्य पदक जीता। इस आयोजन में मुहम्मद अनस याहिया, अमोज जैकब, मुहम्मद अजमल और राजेश रमेश की चौकड़ी द्वारा निर्धारित वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय रिकॉर्ड 2¬59.05 है। इसके अतिरिक्त, यह वर्तमान एशियाई रिकॉर्ड है।

बंगाल प्रो टी20 लीगः सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स ने घोषित की टीम, आकाश दीप और प्रियंका बाला हैं मार्की खिलाड़ी

कोलकाता। ईडेन गार्डेन में 11 जून से शुरू हो रहे बंगाल प्रो टी 20 लीग के लिए सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स ने पूरी तरह से कमर कस ली है। फ्रेंचाइजी ने कोलकाता में बुधवार को अपनी 16 सदस्यीय महिला और पुरुष टीम घोषित की। सिलीगुड़ी की टीम में 18 वर्षीय युद्धजीत गुहा से लेकर अनुभवी 40 वर्षीय राजकुमार पाल तक शामिल हैं। वहीं महिला टीम में भी युवा और अनुभव का बेहतरीन मिश्रण है।टीम के साथ ही सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स ने अपने कोचिंग स्टाफ की भी घोषणा कर दी है। जिसमें पुरुष टीम के लिए सौराशीष लाहिरी हेड कोच और संजीब कुमार गोयल सहयोगी कोच होंगे। वहीं महिला टीम की हेड कोच अर्पिता घोष होंगी, जबकि सहायक कोच की भूमिका में पामेला धर होंगी। टीम को लेकर सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स के मालिक ऋषभ भाटिया ने एक आधिकारिक बयान में कहा,? पुरुष और महिला दोनो ही फॉर्मेट में हमने युवा और अनुभव का जो संतुलन बनाया है वो निश्चित तौर पर बंगाल प्रो टी 20 लीग के उद्धघाटन सत्र में एक अमिट छाप छोड़ेगा। ह

कनाडा ने विश्व कप से पहले अपने मुख्य कोच दसानायके को किया बर्खास्त

एजेंसी

नई दिल्ली। कनाडा ने अपने मुख्य कोच पुबुदु दसानायके को उनकी भूमिका से बर्खास्त कर दिया है। वह पिछले दो साल से इस पद पर कार्यरत थे। श्रीलंका और कनाडा के पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी, दसानायके जुलाई 2022 में कनाडा के कोच के रूप में दूसरे कार्यकाल के लिए लौटे थे, इससे पहले वह नेपाल (दो बार) और संयुक्त राज्य अमेरिका को कोचिंग दे चुके हैं।

दोबारा भूमिका संभालने के बाद से, दसानायके ने कनाडा को अमेरिका के टी20 क्षेत्रीय फाइनल में सफलतापूर्वक पहुंचाया और इस आगामी टी20 विश्व कप के लिए क्वालीफाई कराया, साथ ही उनके कोचिंग में कनाडा ने 2023 विश्व कप क्वालीफायर प्लेऑफ़ में एकदिवसीय दर्जा फिर से हासिल किया। कनाडा को सीडब्ल्यूसी चैलेंज लीग से सीडब्ल्यूसी लीग 2 में भी पदोन्नति मिली, जहां वे वर्तमान में तालिका के शीर्ष पर हैं। क्रिकबज के अनुसार, कुछ समय से कनाडाई

खेमे में अशांति की अफवाहें उड़ रही थीं, साथ ही पिछले महीने क्रिकेट कनाडा बोर्ड चुनावों में गड़बड़ी के बाद मुख्य कोच को छोड़कर एक नए तीन सदस्यीय चयन पैनल की नियुक्ति के बाद कुछ आश्चर्यजनक चयन निर्णय लिए गए थे।

दसानायके को सुबह नवनिर्वाचित क्रिकेट कनाडा के उपाध्यक्ष गुरदीप क्लेयर ने मौखिक रूप से सूचित किया कि सेंट किट्स में चल रहे प्रारंभिक मैचों के पूरा होने के बाद उनकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं होगी। अभी तक दसानायके के प्रतिस्थापन का नाम नहीं दिया गया है। कनाडा टी20 विश्व कप में अपने अभियान की शुरुआत 1 जून को डलास में मेजबान अमेरिका के खिलाफ करेगा।

तेजस शिरसे ने 110 मीटर बाधा दौड़ में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा

नई दिल्ली। तेजस शिरसे ने बुधवार को फिनलैंड के ज्यवास्किला में विश्व एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर (चैलेंजर स्तर) मीटिंग के दौरान पुरुषों की 110 मीटर बाधा दौड़ में एक नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया।

21 वर्षीय शिरसे ने फाइनल में 13.41 सेकेंड का समय लिया और 2017 में सिद्धांत थिंगालय द्वारा बनाए गए 13.48 सेकेंड के पिछले राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया। शिरसे का रिकॉर्ड सामान्य अनुसमर्थन प्रक्रिया के अधीन है।हालाँकि, पेरिस ओलंपिक के लिए पुरुषों की 110 मीटर बाधा दौड़ में प्रवेश मानक 13.27 सेकेंड है।

महिलाओं की 100 मीटर बाधा दौड़ में, ज्योति याराजी ने 12.78 सेकेंड के अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड अंक की बराबरी की और पहले स्थान पर रहीं, वह ओलंपिक खेलों के लिए स्वचालित योग्यता से एक सेकंड के सौवें हिस्से से चूक गईं। अनिमेष कुजूर ने 100 मीटर में नया व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 10.39 सेकेंड के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। अमलान बोरगोहेन अपने सीज़न की सर्वश्रेष्ठ 10.54 सेकेंड की टाइमिंग के साथ चौथे स्थान पर रहे। पुरुषों की 100 मीटर दौड़ के लिए पेरिस ओलंपिक में प्रवेश मानक 10 सेकेंड है।

मोहम्मद अफसल ने पुरुषों की 800 मीटर स्पर्धा 1: 48.91 सेकेंड में जीती, जो उनके व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 1: 46.17 सेकेंड से काफी कम है। 18 वर्षीय लंबी जम्पर पावना नागराज 6.06 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ पांचवें स्थान पर रहीं।

बर्गेन, नॉर्वे में विश्व एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर (रजत स्तर) इवेंट ट्रोंड मोहन गेम्स में, लंबी कूद खिलाड़ी शैली सिंह 6.12 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ सात एथलीटों के बीच दूसरे स्थान पर रहीं।

अभिनव बिंद्रा और पियरे ब्यूचैम्प के पैनल ने शूटिंग में खेल मनोविज्ञान के महत्व पर डाला प्रकाश

एजेंसी

नई दिल्ली। शूटिंग दिग्गज अभिनव बिंद्रा और भारतीय शूटिंग टीम के हाई-परफॉर्मेंस डायरेक्टर (एचपीडी) डॉ. पियरे ब्यूचैम्प के नेतृत्व वाले पैनल ने पांच दिवसीय (20-24 मई) वर्कशॉप और सर्टिफिकेशन प्रोग्राम के पहले दिन प्रतिभागियों को संबोधित किया। यह कार्यशाला शूटिंग एथलीटों के जीवन में खेल मनोवैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर आयोजित की जा रही है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय राजधानी में डॉ कर्णी सिंह शूटिंग रेंज (डीकेएसएसआर) में नेशनल सेंटर फॉर स्पोर्ट्स साइंस एंड रिसर्च (एनसीएसएसआर) द्वारा नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई), टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) और नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स (एनएसएनआईएस), पटियाला के सहयोग से आयोजित किया जा रहा

है।

प्रख्यात खेल वैज्ञानिक, उच्च-प्रदर्शन प्रशिक्षकों, शूटिंग चैंपियन और प्रशासकों के नेतृत्व में व्याख्यान, पैनल चर्चा और व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों के संयोजन के माध्यम से, कार्यक्रम प्रतिभागियों को अत्याधुनिक रणनीतियों और व्यावहारिक हस्तक्षेपों से परिचित कराएगा।

बीजिंग ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता बिंद्रा और डॉ ब्यूचैम्प के अलावा, राष्ट्रीय शूटिंग कोच समरेश जंग, रौनक पंडित के साथ-साथ अन्य चैंपियन खिलाड़ी, कोच और प्रशासक भी उपस्थित रहे।

इस सर्टिफिकेशन प्रोग्राम का उद्देश्य शूटिंग एथलीटों की सफलता में खेल मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए कोचों और एथलीटों को आवश्यक मानसिक प्रशिक्षण उपकरणों से लैस करना है। इस कार्यक्रम के जरिए शूटिंग में उच्च प्रदर्शन करने वाले एथलीटों के लिए मानसिक स्वास्थ्य सहायता में मौजूद अंतर को काम करना है। साथ ही मनोवैज्ञानिक बाधाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने, रेंज पर प्रदर्शन को अनुकूलित करने और दबाव में संयम बनाए रखने, महत्वपूर्ण क्षणों के दौरान उच्चतम प्रदर्शन करने के लिए तकनीकी तौर पर निशानेबाजों को तैयार करने का काम किया जा रहा है।

लेवर कप 2025 में जॉन मैकेनरो की जगह आंद्रे अगासी टीम वर्ल्ड के कप्तान होंगे

एजेंसी

लंदन। आठ बार के प्रमुख चैंपियन और पूर्व विश्व नंबर 1 आंद्रे अगासी सैन फ्रांसिस्को में 2025 के आयोजन से अपने कार्यकाल की शुरुआत करते हुए, लेवर कप टीम वर्ल्ड की कप्तानी करेंगे । जॉन मैकेनरो , एक अन्य अमेरिकी, जिन्होंने 2017 में प्राग में पहले लेवर कप के बाद से टीम वर्ल्ड का नेतृत्व किया है, अगासी को बागडोर सौंपेंगे।

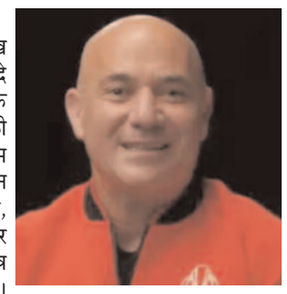

इस साल का लेवर कप , जो 20-22 सितंबर तक बर्लिन के उबेर एरेना में होगा, में मैकेनरो का टीम यूरोप के कप्तान ब्योर्न बोर्ग के साथ फाइनल मुकाबला होगा । ओपन युग में, अगासी करियर ग्रैंड स्लैम पूरा करने वाले सिर्फ पांच पुरुषों में से एक है। अपनी आक्रामक बॉल-स्ट्राइकिंग शैली, अविश्वसनीय शॉटमेकिंग और कोर्ट के अंदर और बाहर आकर्षक व्यवहार के साथ, उन्होंने 1990 के दशक में टेनिस में क्रांति ला दी। टेनिस इतिहास में सबसे आकर्षक एथलीटों में से एक होने के नाते, अगासी ने अपनी लोकप्रियता, आचरण और खेल शैली के कारण दुनिया भर में किंवदंती का दर्जा हासिल किया है। अपने 21 साल के पेशेवर करियर के दौरान, उन्होंने आठ प्रमुख एकल चैंपियनशिप जीत के अलावा 60 एटीपी टूर खिताब जीते।

दिल्ली ने पेनल्टी पर जीत हासिल की, उद्घाटन संस्करण का चैंपियन बना

एजेंसी

नारायणपुर (छत्तीसगढ़)। स्थानापन्न संखिल दारपोल तुईशांग ने मैच के 98वें मिनट में बराबरी का गोल किया और दिल्ली ने पेनल्टी में अपना पुनरुत्थान जारी रखते हुए स्वामी विवेकानंद 20 पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप के उद्घाटन संस्करण के चैंपियन का ताज पहनाया। दिल्ली ने बुधवार को यहां रामकृष्ण मिशन आश्रम ग्राउंड में अतिरिक्त समय के बाद रोमांचक 3-3 से ड्रा के बाद पेनल्टी पर कर्नाटक को 4-3 से हराया।

नारायणपुर में 32 टीमों की 40 दिनों की नॉन-स्टॉप कार्रवाई के बाद, एक यादगार फाइनल के बाद दिल्ली शीर्ष पर आ गई, जहां वे तीन बार पीछे से आकर खेल को पेनल्टी तक ले गए। कर्नाटक के ईशान रघुनंदा और दिल्ली के तुईशांग ने अपनी-अपनी तरफ से दो-दो गोल किए, लेकिन बाद में पेनल्टी पर विजयी गोल कर दिल्ली को चैंपियन बना दिया। दिल्ली को बढ़त लेने का पहला वास्तविक मौका तीसरे मिनट में मिला जब कप्तान लैमलालियन एस.टी. अंतिम तीसरे में कब्ज़ा हासिल किया, बॉक्स में भाग गया लेकिन उसके प्रयास को दूर खींच लिया। इसके तुरंत बाद 12वें मिनट में रघुनंदा की नाजुक पारी से कर्नाटक ने स्कोरिंग की शुरुआत की। इसकी शुरुआत गौतम राजेश की बेहतरीन लंबी गेंद से हुई, जिसे रघुनंदा ने शानदार पहले स्पर्श से नियंत्रित किया। उन्होंने अपने लिए कुछ गज की दूरी बनाई और अपने बूट के बाहरी हिस्से से गेंद को सुदूर पोस्ट में डालने से पहले डिफेंडर कामगिन्सेई टौथांग को हराया।

अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ परफॉर्मेंस गुरु को एआईएफएफ के बुलावे का इंतजार कर रहे

एजेंसी

बेंगलुरु। प्रसिद्ध प्रदर्शन मनोवैज्ञानिक और खेल रणनीतिकार श्यामल वल्लभजी, जो पिछले एक साल से भारतीय फुटबॉल टीम से जुड़े हुए हैं, राष्ट्रीय शिविर में शामिल होने के लिए भुवनेश्वर की अपनी यात्रा के बाद अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) से सुनने का इंतजार कर रहे हैं। अधिकारियों द्वारा उसके अनुबंध पर टांग अड़ाने से देरी हुई। वल्लभजी, जिन्होंने ᳲᳲ कप से लेकर AFC कप और कतर और कुवैत के खिलाफ विश्व कप क्वालीफायर (जो भारत ने जीता था) तक राष्ट्रीय टीम के साथ काम किया, वह करिश्माई स्ट्राइकर सुनील छेत्री सहित भारतीय खिलाड़ियों की मदद करने के इच्छुक हैं क्योंकि वे इस महत्वपूर्ण मुकाबले के लिए तैयार हैं। कुवैत (6 जून) और कतर (11 जून) के खिलाफ फीफा विश्व कप राउंड 2 क्वालीफायर। वल्लभजी ने टीओआई से एक विशेष बातचीत में कहा, ÷मैं उनके द्वारा चीजों को सुलझाने का इंतजार कर रहा हूं। मैं थोड़ा परेशान भी हूं कि इन मुद्दों के कारण, मैं एक महत्वपूर्ण चरण के दौरान सुनील और टीम का समर्थन और मदद करने के लिए मौजूद नहीं रह सकता।' बार्सिलोना से.

सारी कड़ी मेहनत के बावजूद, वल्लभजी को एआईएफएफ से उनका बकाया नहीं मिला। विशेषज्ञ ने कहा, ÷मैं मई 2023 में ᳲᳲ कप के लिए 4-5 सप्ताह के लिए खिलाड़ियों के साथ मुफ्त में काम शुरू करने के लिए सहमत हुआ। इसके बाद, इगोर (स्टिमैक) ने मेरे काम को पहचाना और मुझे अपने स्टाफ में पूर्णकालिक रूप से शामिल होने के लिए कहा।÷ इससे पहले उन्होंने 2003 विश्व कप में भारतीय क्रिकेट टीम, किंग्स इलेवन पंजाब, भारतीय डेविस कप टीम और केन्याई मैराथन टीम के साथ काम किया था। मुझे बताया गया कि मेरा अनुबंध संसाधित किया जा रहा है और इस समझ के आधार पर, मैंने इंटरकांटिनेंटल कप, मर्डेका कप, किंग्स कप, एएफसी कप और कतर और कुवैत के खिलाफ डब्ल्यूसी क्वालीफायर के दौरान टीम के साथ काम किया। मैंने शिविर में जाने से इनकार कर दिया अब क्योंकि मेरे पास कोई अनुबंध नहीं था और वे मेरी शर्तों से सहमत नहीं थे,÷ वल्लभजी ने कहा। मेरी शर्त थी कि शामिल होने के लिए सहमत होने से पहले बकाया राशि का भुगतान करना होगा। मैंने उन्हें विवरण भेज दिया है लेकिन भुगतान नहीं किया गया है। टीम के साथ अपने उच्च अंकों को याद करते हुए, खेल वैज्ञानिक ने कहाः एसएएफएफ और इंटरकांटिनेंटल कप में लगातार जीत, और कुवैत के खिलाफ एक ऐतिहासिक जीत। हम लगभग 16 गेम तक अजेय रहे। कुछ शीर्ष खिलाड़ी उन्होंने मुझ पर यह भी विश्वास किया कि मैंने बड़ा प्रभाव डाला और जब मैं टीम के साथ नहीं था तो वे चिंतित थे, मैं टीम के साथ प्रतिदिन एक सत्र और फिर खिलाड़ियों के साथ व्यक्तिगत सत्र करता था।

बीमार मां को अस्पताल में छोड़ना मुश्किल है लेकिन केकेआर भी परिवार है- गुरबाज

एजेंसी

अहमदाबाद। अफगानिस्तान के विकेटकीपर-बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज़ ने खुलासा किया है कि जब उनकी आईपीएल फ्रेंचाइजी कोलकाता नाइट राइडर्स ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ प्लेऑफ मुकाबले से पहले उनकी सेवाएं मांगी थीं, तो उन्होंने अपनी बीमार मां को अस्पताल में छोड़ने का कठिन विकल्प चुना था क्योंकि टीम उनका ÷परिवार÷ भी है। ÷.गुरबाज़ ने सीज़न के अपने पहले गेम में, दो महत्वपूर्ण कैच लेकर एसआरएच पर केकेआर की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और मंगलवार को 14 गेंदों में 23 रन बनाकर अपनी टीम को शानदार शुरुआत दी।उन्होंने अंग्रेज फिल साल्ट की जगह शीर्ष पर जगह बनाई और दो बार के चैंपियन को मंगलवार को यहां आठ विकेट

की आसान जीत के साथ आईपीएल फाइनल में प्रवेश करने में मदद की।÷एक क्रिकेटर के रूप में, आपको पता होना चाहिए कि क्या करना है। लीग क्रिकेट में, केवल कुछ ही खिलाड़ी खेल सकते हैं। यदि आपके लिए अवसर है, तो आपको सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए। यदि आपके लिए कोई अवसर नहीं है, तो आपको तैयार रहना चाहिए। गुरबाज़ ने मैच के बाद यहां मीडिया से कहा, इस अवसर के लिए अच्छी तरह से तैयार हूं। मेरी मां अभी भी बीमार हैं। मैं वहां गया (वापस) और यहां से फोन आया (कि) फिल साल्ट जा रहा है। उन्होंने फोन किया और उन्होंने मुझे संदेश दिया कि गुरबाज, हमें आपकी जरूरत है, और हमारे लिए आपकी प्रतिक्रिया क्या है? , उन्होंने खुलासा किया। मैंने कहा, हां, मैं आऊंगा। मेरी मां अभी भी अस्पताल में हैं, और मैं हमेशा उनसे बात कर रहा हूं, लेकिन यह भी मेरा परिवार है। मुझे उन दोनों, मेरी मां और मेरे केकेआर परिवार का प्रबंधन करना चाहिए। यह है कठिन है, यह कठिन है, लेकिन फिर भी, मुझे इसे प्रबंधित करने की ज़रूरत है, उन्होंने कहा।स्त्र्ञ् के कप्तान पैट कमिंस का पहले बल्लेबाजी करने का फैसला उल्टा पड़ गया। गुरबाज ने कहा कि केकेआर ने टॉस जीता तो पहले गेंदबाजी करने की योजना बनाई थी। हम सभी ने फैसला किया था कि हमें जाना चाहिए और हमें पहले गेंदबाजी करनी चाहिए, क्योंकि इस तरह के क्षण में, और टीम सनराइजर्स को पसंद करती है जिसके पास मजबूत बल्लेबाजी है और आपको पता होना चाहिए कि कुल क्या है (और फिर आप इसके लिए जाते हैं) , उसने कहा। वास्तव में, हमने वास्तव में अच्छी गेंदबाजी की। (करने के लिए) टीम सनराइजर्स को 160 पर ऑलआउट करना चाहती है, यह गेंदबाजी प्रयास था।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की हार, राजस्थान रॉयल्स ने 4 विकेट से हराया

एजेंसी

अहमदाबाद। इंडियन प्रीमियर लीग 2024 सीजन में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और राजस्थान रॉयल्स की टीमें आमने-सामने हैं. दोनों के बीच एलिमिनेटर मुकाबला खेला जा रहा है. यह मैच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में हो रहा है, जिसमें टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए RCB ने 173 रनों का टारगेट सेट किया. जवाब में राजस्थान ने 6 विकेट गंवाकर 160 रन बना लिए हैं. अब 12 गेंदों पर 13 रनों की जरूरत है.

मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी ने 8 विकेट पर 172 रन बनाए. टीम के लिए रजत पाटीदार ने 34, विराट कोहली ने 33 और महिपाल लोमरोर ने 32 रन बनाकर टीम को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया. इनके अलावा कैमरन ग्रीन ने 27 रन बनाए. इन चारों के अलावा RCB टीम का कोई भी बल्लेबाज 20 रनों का आंकड़ा नहीं छू सका. राजस्थान टीम के लिए तेज गेंदबाज आवेश खान ने सबसे ज्यादा 3 विकेट झटके. जबकि स्पिनर आर अश्विन को 2 सफलताएं मिलीं. ट्रेंट बोल्ट, संदीप शर्मा और युजवेंद्र चहल को 1-1 विकेट मिला. कोहली 8 हजार रन बनाने वाले IPL इतिहास के पहले क्रिकेटर बन गए हैं. कोहली ने अब तक IPL में कुल 252 मुकाबले खेले, जिसमें

38.67 के बेहतरीन औसत से 8004 रन बनाए हैं. इस दौरान 8 शतक लगाए. IPL में कोहली ने 55 फिफ्टी जड़ी हैं. इस दौरान उन्होंने 272 छक्के और 705 चौके लगाए. उनका स्ट्राइक रेट भी 131.97 का रहा है. कोहली के बाद दूसरे नंबर पर पंजाब किंग्स के कप्तान शिखर धवन हैं, जिन्होंने 222 मैचों में 35.26 के औसत से 6769 रन बनाए।

स्वामी विवेकानन्द अंडर-20 फुटबॉल प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में दिल्ली चैंपियन बनी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली ने यहां अतिरिक्त समय के बाद रोमांचक 3-3 से ड्रा के बाद पेनल्टी पर कर्नाटक को 4-3 से हराकर उद्घाटन स्वामी विवेकानंद अंडर -20 पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप के विजेता का ताज पहनाया।यह मैच रामकृष्ण मिशन आश्रम ग्राउंड में खेला गया था।32 टीमों की 40 दिनों की नॉन-स्टॉप कार्रवाई के बाद, एक यादगार फाइनल के बाद दिल्ली शीर्ष पर आ गई, जहां वे तीन बार पीछे से आकर खेल को पेनल्टी तक ले गए।कर्नाटक के ईशान रघुनंदा और दिल्ली के संखिल दारपोल तुईशांग ने अपनी-अपनी तरफ से दो-दो गोल किए, इससे पहले तुईशांग ने दिल्ली के लिए विजयी पेनल्टी लगाई।दिल्ली के पास तीसरे मिनट में बढ़त लेने का पहला वास्तविक मौका था जब कप्तान लैमलालियन एसटी ने अंतिम तीसरे में कब्ज़ा हासिल कर लिया, बॉक्स में भागे लेकिन उनके प्रयास को दूर खींच लिया।इसके तुरंत बाद 12वें मिनट में ईशान रघुनंदा की नाजुक पारी से कर्नाटक ने स्कोरिंग की शुरुआत की।इसकी शुरुआत गौतम राजेश की बेहतरीन लंबी गेंद से हुई, जिसे रघुनंदा ने शानदार पहले स्पर्श से नियंत्रित किया। उन्होंने अपने लिए कुछ गज की दूरी बनाई और अपने बूट के बाहरी हिस्से से गेंद को सुदूर पोस्ट में डालने से पहले डिफेंडर कामगिन्सेई टौथांग को हराया। 18वें मिनट में, कर्नाटक के

गोलकीपर सैम जॉर्ज अपनी टीम के बचाव में आए और उन्होंने रमेश छेत्री को करीबी सीमा से आमने-सामने की स्थिति में रोकने के लिए खुद को बड़ा बना लिया।लेकिन कर्नाटक के गोलकीपर दिल्ली के बराबरी के गोल के बारे में कुछ नहीं कर सके, जो 43वें मिनट में कप्तान लैमलालियन द्वारा किया गया, जिससे दूसरा हाफ अच्छी तरह से तैयार हो गया।दोबारा शुरू होने के बाद भी मैच की तीव्रता अधिक बनी रही क्योंकि दोनों पक्षों ने दूसरे गोल की बेताब तलाश में अपना पूरा जोर लगा दिया।कर्नाटक ने इसे हासिल किया और उसे बढ़त हासिल करने में मदद करने के लिए नितिन पॉल की कुछ खास मदद की जरूरत पड़ी। बॉक्स में विकल्प खत्म होने पर, एम निहार ने गेंद वापस पॉल को दी, जिन्होंने 30 गज की दूरी से अपने बाएं पैर से पहली बार शॉट मारा।उन्होंने 67वें मिनट में अपना फायदा दोगुना कर लिया होता अगर मक्कर ने पॉल और सैखोम बोरिश सिंह को रोकने के लिए तुरंत शानदार डबल सेव नहीं किया होता।लेकिन कर्नाटक बैकलाइन में एक गलती के कारण 71वें मिनट में फिर से बराबरी आ गई। अर्जुन गौडा बॉक्स में एक ढीली गेंद को क्लीयर करने में असफल रहे और दिल्ली के स्थानापन्न संखिल डारपोल तुईशांग ने उस पर झपट्टा मारा और जॉर्ज को चकमा दे दिया।

सोनाक्षी सिन्हा

ने शेयर की Tilasmi Baahein गाने की बिहाइंड द सीन तस्वीरें, शूट के बाद ऐसा था भंसाली का रिएक्शन

संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी वेब सीरीज %हीरामंडी द डायमंड बाजार% को रिलीज हुए काफी समय हो गया है। इस सीरीज के साथ ही डायरेक्टर ने अपना ओटीटी डेब्यू भी किया है। रिलीज के बाद से ही यह सीरीज सुर्खियों में बनी हुई है और दर्शकों ने इसे काफी पसंद भी किया है। इसमें निभाए गए हर एक स्टार के किरदार की दर्शकों ने तारीफ की है। मनीषा कोइराला ने %मल्लिका जान% बनकर, तो अदिति राव हैदरी ने %बिब्बो जान% बनकर तारीफें बटोरीं। वहीं, सोनाक्षी सिन्हा ने इसमें रिहाना और फरीदन जान का रोल प्ले किया। सीरीज के साथ-साथ इसके गानों को भी लोगों ने काफी पसंद किया। सोनाक्षी सिन्हा ने वन-टेक सॉन्ग तिलस्मी बाहें में अपने मंत्रमुग्ध प्रदर्शन से सुर्खियां बटोरीं। अब एक्ट्रेस ने इसकी बिहाइंड द सीन तस्वीरें शेयर की। साथ ही एक नोट भी लिखा है।

सोनाक्षी सिन्हा ने दिखाया भंसाली का रिएक्शन

एक्ट्रेस ने अपने सोशल मीडिया हैंडल इंस्टाग्राम पर हीरामंडी की कई फोटोज और एक वीडियो शेयर किया है। इसमें देखने को मिला कि कैसे इस सीरीज के गाने तिलस्मी बाहें एक शॉट में पूरा होने पर डायरेक्टर संजय लीला भंसाली अपना रिएक्शन देते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं, सोनाक्षी ने नोट में लिखा कि उस दिन को भुलाया नहीं जा सकता।

टेक से कुछ ही मिनट पहले मौके पर रिहर्सल से लेकर मेरे पहले वन शॉट गाने तिलस्मी बाहें के लिए परफेक्ट टेक लेने तक, संजय सर की प्रतिक्रिया देखने के लिए दाएं स्वाइप करें और पैकअप के तुरंत बाद हमने क्या किया क्योंकि हमें विश्वास नहीं हो रहा था कि गाना पूरा हो गया है। उफ्फ शुद्ध जादू।

इसके साथ ही एक्ट्रेस ने उन सभी को शुक्रिया किया, जिन्होंने इस गाने को बनाने में मदद की। एक्ट्रेस ने इस पोस्ट में कई लोगों को टैग करते हुए लिखा कि आपने गाने में जान डाल दी। हर कोई बहुत परफेक्ट है। मैं धन्यवाद देती हूं और मैं इसे सभी के साथ शेयर करते हुए बहुत गर्व महसूस कर रही हूं।

शाहरुख खान

की अजीज दोस्त ने बेटी Suhana khan को किया बर्थडे विश, प्यारी तस्वीर शेयर कर लुटाया प्यार

शाह रुख खान और गौरी खान की लाड़ली बेटी सुहाना खान का आज जन्मदिन मनाया जा रहा है। 22 मई बुधवार को सुहाना 24 साल की हो गई हैं। सोशल मीडिया पर उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। इस बीच शाह रुख खान की बेस्ट फ्रेंड और बी टाउन एक्ट्रेस काजोल ने सुहाना के बर्थडे विश किया है। इसके साथ ही उन्होंने शाह रुख की बेटी की एक प्यारी तस्वीर को शेयर कर वाहवाली लूटी ली है। आइए एक नजर काजोल के इस पोस्ट की तरफ डालते हैं।

काजोल ने सुहाना को दी जन्मदिन की बधाई

शाह रुख खान और काजोल हिंदी सिनेमा को दो पक्के दोस्त माने जाते हैं। ऑनस्क्रीन इन दोनों की जोड़ी काफी हिट मानी जाती है। यही नहीं असल जिंदगी में भी एक दूसरे की फैमिली के लिए किंग खान और काजोल प्यार लुटाते हुए नजर आते रहते हैं। ऐसे में सुहाना खान के जन्मदिन पर काजोल के लेटेस्ट पोस्ट ने सुर्खियां बटोर ली हैं।दरअसल काजोल ने अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट पर सुहाना की एक लेटेस्ट तस्वीर को शेयर किया है। इस फोटो के कैप्शन में उन्होंने लिखा है- प्यारी लड़की सुहाना खान आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। इस तरह से काजोल ने सुहाना पर प्यार बरसाया है।

मालूम हो कि सुहाना खान ने बीते साल डायेक्टर जोया अख्तर की ओटीटी फिल्म द आर्चीज से हिंदी सिनेमा में कदम रख लिया था। अपनी डेब्यू फिल्म में कमाल की एक्टिंग के लिए सुहाना की काफी सराहना भी हुई।

पिता शाह रुख संग इस मूवी में दिखेंगी सुहाना

द आर्चीज के बाद आने वाले समय में सुहाना खान अपने पिता शाह रुख खान के साथ बड़े पर्दे पर धमाल मचाती हुई दिखेंगी। फिल्म का नाम किंग है और इसकी चर्चा फिलहाल तेजी से चल रही है। ये पहला मौका होगा जब बाप-बेटी की जोड़ी शाह रुख और सुहाना किसी मूवी में एक साथ दिखेंगी।

जब विवेक ओबेरॉय को इस हाल में देख मणिरत्नम को आ गया था हार्ट अटैक

विवेक ओबेरॉय की फिल्म 'युवा' साल 2004 में रिलीज हुई थी. इस पिक्चर को आए लगभग 20 साल बीत चुके हैं. 'युवा' को मणिरत्नम ने डायरेक्ट किया था. विवेक ओबेरॉय ने इस फिल्म से जुड़ी वो घटना शेयर की है, जिसे देखने के बाद मणिरत्नम को हार्ट अटैक आ गया था. एक बातचीत में विवेक ने बताया कि फिल्म की शूटिंग के दौरान उनका एक्सीडेंट हो गया था. इसके बाद अभिषेक बच्चन और अजय देवगन उन्हें अस्पताल ले गए और इस मुश्किल घड़ी में बड़े भाई की तरह उनका ख्याल रखा था.

विवेक ओबेरॉय ने क्या कहा ?

टाइम्स नाउ को दिए इंटरव्यू में विवेक ने 'युवा' के शूटिंग वाले दिनों को याद किया है. उन्होंने बताया कि उनका दिन बहुत अच्छा गुजर रहा था लेकिन उस एक हादसे के बाद सब कुछ बदल गया. इस दुर्घटना के कारण विवेक के पैर तीन जगह से टूट गए थे, जिस वजह से उनका काफी खून बह रहा था. इस घटना के बाद अजय और अभिषेक उन्हें अस्पताल ले गए,विवेक ने कहा कि बाद में जब मणिरत्नम को एक्सीडेंट के बारे में पता चला, जिसके बाद उन्हें हार्ट अटैक आ गया था. इसके चलते उन्हें अस्पताल में भी भर्ती कराया गया था और दोनों (विवेक और मणिरत्नम) वहां रिकवर कर रहे थे. विवेक ने बताया कि ऐसे वक्त में अजय और अभिषेक उनके साथ थे और हंसी-मजाक के जरिए उनके दर्द को कम करने की कोशिश कर रहे थे. विवेक को ठीक होने में करीब 4 महीने लग गए. उनके मुताबिक, जब वो इतने दिनों बाद सेट पर वापस गए तो रीयूनियन जैसा माहौल था.

'फना' और 'अंजाना अंजानी' सॉन्ग्स की शूटिंग के दौरान वो लंगड़ाकर चल रहे थे. इस दौरान सेट पर मौजूद सभी लोगों ने उनकी काफी मदद की और उनका हौसला बढ़ाया. विवेक ने इस बात पर भी हैरानी जताई है कि उन्होंने ऐसे हालात में शूटिंग कैसे की. सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक, 'युवा' का बजट करीब 11 करोड़ रुपये था. वहीं इस मूवी ने वर्ल्डवाइड करीब 23.37 करोड़ रुपये का बिजनेस किया था.

PAK एक्ट्रेस दुर-ए-फिशां बोलीं- इश्क मुर्शिद के बाद लोग मेरी 'हॉट पिक्स' सर्च कर रहे थे

पाकिस्तानी ड्रामो की चर्चा अक्सर होती है. वहां के ड्रामे भारत में भी खूब पसंद किए जाते हैं. हाल ही में इश्क मुर्शिद नाम का एक ड्रामा आया था, जिसे पाकिस्तान के अलावा भारत में भी खूब पसंद किया गया. यूट्यूब पर इस टीवी सीरियल के हर एपिसोड को करोड़ों व्यूज़ मिले. इश्क मुर्शिद में दुर-ए-फिशां सलीम और बिलाल अब्बास ने लीड रोल निभाया है. इस ड्रामे के बाद दोनों ही लीड एक्टर्स की फैन फोलोइंग रातों-रात आसमान छूने लगी. अब दुर-ए-फिशां ने फेम मिलने के बाद लोग उनके बारे में क्या सर्च कर रहे थे, इस बारे में सनसनीखेज खुलासा किया है.

दुर-ए-फिशां का एक वीडियो इन दिनों खूब वायरल हो रहा है. वीडियो किसी इवेंट का बताया जा रहा है. वीडियो में दुर-ए-फिशां महिलाओं के मुद्दे पर बात करती नज़र आ रही हैं. इसी बीच वो कहती हैं, मुझे बहुत लोग एक वीडियो बार-बार भेजते थे. एक दिन मैंने खोल लिया. क्या था उस वीडियो में, मैं उम्मीद करती हूं कैमरा इसे रिकॉर्ड नहीं कर रहा होगा. इस पर स्टेज पर बैठी महिला कहती हैं कि इसकी रिकॉर्डिंग हो रही है.

रिकॉर्डिंग होने की बात जानने के बाद दुर-ए-फिशां कहती हैं, ओके, ठीक है चलो. उस वीडियो में इश्क मुर्शिद को सर्च किया जाता है, पर उसमें सबसे ज्यादा क्या सर्च किया जाता है'दुर-ए-फिशां हॉट'. पाकिस्तान में सबसे ज्यादा देखे गए ड्रामे की हिरोइन के बारे में क्या सर्च किया जा रहा है ये? उन्होंने कहा कि इस देश के पुरुष, शक्तिशाली लड़कियों को तभी देख पाएंगे जब वो उनके लिए पेश करने के लायक हों.

हालांकि इस दौरान उन्होंने ये भी कहा कि हमारे पास काशिफ निसार जैसे पुरुष भी हैं, मेरे पिता जैसे और मेरे भाई जैसे पुरुष भी हैं. वो लोग जिनसे मैं जुड़ी हुई हूं. इस इंडस्ट्री के लोग जो इस देश की महिलाओं के प्रति प्रगतिशील नज़रिया रखते हैं. उन्होंने इस दौरान पुरुषों को पाकिस्तान में महिलाओं को आगे बढ़ने में मदद करने का श्रेय भी दिया. उन्होंने कहा कि जो महिलाएं भी आगे बढ़ रही हैं, आप देखेंगे कि उनमें से ज्यादातर को पुरुषों ने बनाया है. उनका कहना था कि यहां समझदार पुरुष भी हैं जो अच्छा काम कर रहे हैं पर समाज का एक हिस्सा ऐसा भी है जो सिर्फ मेरी हॉट तस्वीरें सर्च कर रहा है.